हिन्दी व्याकरण

कक्षा 7

विषय सूची

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
1.	भाषा लिपि व्याकरण	3
2.	वर्ण विचार	8
3.	शब्द विचार	15
4.	वाक्य विचार	22
5.	संज्ञा	29
6.	लिंग	34
7.	वचन	41
8.	कारक	46
9.	सर्वनाम	52
10.	विशेषण	59
11.	क्रिया	65
12.	काल	71
13.	अविकारी शब्द (क्रिया विशेषण. संबंध बोधक. समुच्चयबोधक. विस्मयादिबोधक)	78
14.	विराम चिन्ह	91
15.	उपसर्ग और प्रत्यय	95
16.	अशुद्धि शोधन	104
17.	संधि	108

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
18.	समास	118
19.	पद परिचय	129
20.	विलोम शब्द	133
21.	पर्यायवाची शब्द	135
22.	अनेकार्थी शब्द	137
23.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	140
24.	समान लगने वाले भिन्नार्थक शब्द	143
25.	शब्दों के सूक्ष्म अर्थ भेद	145
26.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	147
	(रचना भाग)	
27.	पत्र लेखन	156
28.	अनुच्छेद लेखन	160
29.	संवाद लेखन	163
30.	विज्ञापन लेखन	165
31.	निबंध लेखन	168
32.	अपठित बोध (काव्यांश एवं गद्यांश)	175

अध्याय 1

भाषा, लिपि व्याकरण

भाषा की व्युत्पत्ति 'भाष्' धातु से हुई है। इसका अर्थ है बोलना या व्यक्त ध्वनि समूह का उच्चारण करना। भाषा की ध्वनियाँ शब्दों का निर्माण करती हैं। शब्द अर्थपूर्ण वाक्य का निर्माण करते हैं और इन्हीं अर्थपूर्ण वाक्यों द्वारा हम अपने विचारों और भावों को एक दूसरे तक पहुँचाते हैं।

भाषा विचारों की वाहिनी है। यह एक मनुष्य के विचारों को दूसरे मनुष्य तक पहुँचाने का कार्य करती है। मनुष्य अपने विचार या भाव, अपने साथियों, सगे संबंधियों या दूसरे लोगों को बताना चाहता है। इन विचारों – को प्रकट करने के कई साधन हैं। जैसे– संकेत द्वारा, चित्र दिखाकर तथा बोलकर। संकेतों तथा चित्रों द्वारा सभी प्रकार के भाव प्रकट नहीं हो पाते। अतः वाक्यों के द्वारा बोलकर या लिखकर सभी प्रकार के विचारों का आदान प्रदान किया जा सकता है।

(भाषा एक ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों एवं विचारों को प्रकट कर सकता है तथा दूसरे के विचारों को ग्रहण कर सकता है।)

संसार में सभी देशों की अपनी–अपनी भाषाएँ हैं। जैसे– अंग्रेजी, हिन्दी , उर्दू, फारसी , चीनी, जापानी आदि। भारत के भी विभिन्न प्रांतों में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे– हिन्दी , पंजाबी, राजस्थानी, मलयालम, कन्नड़, उडिया, तमिल आदि।

भाषा के रूप –

भाषा के मुख्यतः दो रूप होते हैं –

क. **कथित या मौखिक भाषा** : जब व्यक्ति एक दूसरे के सामने कर बैठकर बातचीत करते हैं अथवा कोई व्यक्ति भाषण द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तो इसे भाषा का कथित रूप या मौखिक रूप कहते हैं। जैसे– नेता जी सभा में भाषण दे रहे हैं।

(जो भाषा हमारे मुख से निकलकर हमारे विचारों को दूसरे तक पहुँचाती है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं।)

ख. लिखित भाषा : जब कोई व्यक्ति पत्र द्वारा अथवा लिखित रूप से अपने विचारों को प्रकट करता है तो इसे भाषा का लिखित रूप कहा जाता है। पुस्तकों, समाचार पत्रों आदि में हम नित्य प्रति भाषा के लिखित रूप को देखते हैं। जैसे– मेरे पिता जी पत्र लिख रहे हैं।

जिस माध्यम से लिखकर या पढ़कर विचारों को प्रकट किया जाता है, समझाया अथवा समझा जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं।

व्याकरण

भाषा को शुद्ध रूप से जानने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः भाषा के स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता को व्याकरण कहते हैं। व्याकरण से भाषा में एक रूपता आती है। भाषा में व्याकरण का प्रयोग करने से भाषा का शुद्धिकरण एवं स्पष्टीकरण होता है।

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भी भाषा के शुद्ध रूप का पूर्णतया ज्ञान प्राप्त करते हैं।

व्याकरण के मुख्य अंग : व्याकरण के मुख्यतः तीन अंग या विभाग होते हैं–

क. वर्ण–विचार

ख. शब्द–विचार

ग. वाक्य–विचार

क. वर्ण–विचारः व्याकरण के इस अंग के अन्तर्गत वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण तथा उनके संयोग और संधि के नियमों पर विचार किया जाता है।

ख. शब्द–बिचारः शब्द–विचार के अन्तर्गत शब्दों के भेद, रूप, बनावट आदि पर पूर्णरूप से विचार किया जाता है।

ग. वाक्य–विचारः वाक्य–विचार के अन्तर्गत वाक्यों के भेद, उनके सम्बन्ध, वाक्य बनाने व विच्छेद करने की रीति, तथा विराम चिहनों का वर्णन आदि होता है।

बोली –

सामान्यतः व्यवहार में बोली शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में किया जाता है, किन्तु दोनों में अन्तर है। बोली देश के किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा होती है। इसका

प्रयोग बोलने तक ही सीमित रहता है क्योंकि इसकी लिपि नहीं होने के कारण इसका लिखित रूप नहीं होता है। जैसे– हरियाणवी, भोजपुरी , गढ़वाली, कुमांऊनी आदि।

(किसी सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को ''बोली'' कहते हैं।)

उपभाषा –

धीरे–धीरे जब बोली का रूप विकसित हो जाता है तो उसमें साहित्य लिखा जाता है। बोली का विकसित रूप जिसमें साहित्य भी लिखा जाता है, उपभाषा कहलाता है। ब्रजभाषा, खड़ी बोली, अवधी तथा मैथिली बोलियाँ हैं। इनका प्रयोग साहित्य रचना के लिए किया गया है।

लिपि –

कथित या मौखिक भाषा में ध्वनियों का प्रयोग होता है जबकि लिखित भाषा में अक्षरों और वर्णों का। लिखित भाषा में प्रत्येक वर्ण के लिए कोई न कोई चिन्ह निश्चित होता है, इन्हीं चिन्हों को लिखने की एक विधि होती है। जिसे लिपि कहा जाता है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी, देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा रोमन लिपि में, उर्दू भाषा फारसी लिपि में और पंजाबी गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती है।

(लिखित भाषा के चिन्हों को लिखने की विधि को लिपि कहा जाता है।)

हिंदी भाषा–परिचय और महत्व –

"हिंदी भारोपीय भाषा–परिवार की भाषा है। इसका उद्‌भव संस्कृत भाषा से हुआ है। इसी कारण संस्कृत को हिंदी भाषा की जननी कहा जाता है। अपने उद्‌भव से अब तक हिंदी भाषा परिवर्तन के कई चरणों से गुजरी है। हिंदी भारत के एक बड़े भू–भाग में बोली व समझी जाती है। इस तथ्य से हमारे संत–महापुरुष, समाज–सेवक तथा क्रांतिकारी आदि भली–भाँति परिचित थे और उन्होंने इस भाषा के माध्यम से ही भारतीय समाज को जागृत करने का प्रयास किया। हिंदी पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का सामर्थ्य रखती है।

हिंदी के महत्त्व को देखते हुए 4 सितंबर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया। हमारे देश के हिंदी भाषी राज्यों में

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, बिहार, छतीसगढ़, हिमाचल प्रदेश आदि आते हैं।

उपर्युक्त राज्यों के अलावा आंध्रप्रदेश, मणिपुर, केरल, गुजरात, कर्नाटक आदि भारत के गैर–हिंदी भाषी राज्यों में तथा संघशासित प्रदेशों में हिंदी बोलने वाले व्यक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। यहाँ तक कि नेपाल, इंडोनेशिया, मॉरीशस, फिजी और जावा जैसे कई अन्य देशों में भी हिंदी बहुत लोकप्रिय हुई है। अपनी लोकप्रियता के बल पर आज हिंदी विश्व में तीसरे से दूसरे स्थान पर पहुँच चुकी है। आज यह एक विकसित भाषा बनने की दहलीज पर है। हिंदी में काफी हद तक तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली विकसित हो चुकी है। आज विभिन्न विषयों की शिक्षा हिंदी भाषा में दी जा रही है।

स्मरणीय तथ्य –

1. भाषा एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से अपनी भावनाओं का आदान–प्रदान संभव होता है।
2. मनुष्य एकमात्र प्राणी है, जो भाषा का प्रयोग करने में सक्षम है।
3. भाषा के दो रूप होते हैं– मौखिक तथा लिखित।
4. भाषा के लिखित रूप द्वारा ज्ञान–विज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है।
5. हिंदी भारत के काफी बड़े भू–भाग में बोली जाती है।
6. 4 सिंतबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया।
7. व्याकरण के नियम भाषा के मानकीकरण में सहायक होते हैं।

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. भाष् धातु का अर्थ बताइए।
2. हिंदी भाषा की जननी किस भाषा को कहते हैं?
3. भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी को कब अपनाया गया?
4. उपभाषा किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार वाक्यों में दीजिए–

1. भाषा से आप क्या समझते हैं? भाषा के कितने रूप हैं?
2. भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. भारत में हिंदी भाषा का क्या महत्व है? संक्षेप में बताइए।

4. व्याकरण की परिभाषा दीजिए। उसके तीनों अंगों के नाम भी बताइए।
5. लिपि से आप क्या समझते हैं? देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली दो भाषाओं के नाम बताइए।

3. निम्नलिखित वाक्यों में सही वाक्य के आगे ☑ और गलत वाक्य के आगे ☒ का निशान लगाइए–

1. हिंदी रोमन लिपि में लिखी जाती है।
2. भाषा विकास में कोई योगदान नहीं देती।
3. हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा 4 सिंतबर, 1947 को दिया गया।
4. भाषा के विकास में व्याकरण की कोई भूमिका नहीं होती।
5. विश्व में हिंदी भाषा दूसरे स्थान पर है।
6. बोली और उपभाषा में कोई अंतर नहीं है।

4. रिक्त स्थान भरिए –

1. भाषा की मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में प्रकट करने हेतु निश्चित किए गए चिन्हों की व्यवस्था ....कहलाती है।
2. .... भाषा की लिपि बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
3. हिंदी .... भाषा–परिवार से संबंध रखती है।
4. अवधी .... वर्ग के अंतर्गत आती है।
5. किसी क्षेत्र–विशेष में बोली जाने वाली भाषा के मौखिक रूप को.................कहते हैं।

5. निम्नलिखित उपभाषा वर्गों के अंतर्गत आने वाली दो–दो उपभाषाओं के नाम बताइए (विद्यार्थी स्वंय खोजकर लिखें)–

1. पहाड़ी हिंदी ....
2. पूर्वी हिंदी ....
3. राजस्थानी हिंदी ....
4. बिहारी हिंदी ....
5. पश्चिमी हिंदी ....

अध्याय 2

वर्ण–विचार

आप जानते हैं कि विचारों का आदान–प्रदान भाषा के माध्यम से होता है। भाषा लिखने की विधि लिपि कहलाती है, इस लिपि को लिखने के लिए निश्चित किए गए चिन्हों का नाम 'वर्ण' है।

भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

भाषिक ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।

महत्त्व – वर्ण भाषा के मूलाधार होते हैं। इनसे शब्दों की रचना होती है। भाषा के शुद्ध उच्चारण और शुद्ध लेखन के लिए विद्यार्थियों को इन वर्णों का ज्ञान होना जरूरी है।

वर्णमाला – वर्णमाला शब्द "वर्ण + माला" दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है: वर्णों का समूह।

किसी भी भाषा के मूल ध्वनि–चिन्हों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

मानक हिन्दी वर्णमाला –

स्वर–	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ	
अनुस्वार –	अं ं	
विसर्ग –	अः :	
अनुनासिक–	अँ ँ	
व्यंजन –	क, ख, ग, घ, ङ	क वर्ग
	च, छ, ज, झ, ञ	च वर्ग
	ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़	ट वर्ग
	त, थ, द, ध, न	त वर्ग
	प, फ, ब, भ, म	प वर्ग
	य, र, ल, व	अंतः स्थ
	श, ष, स, ह	ऊष्म
	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	संयुक्त व्यंजन
	ऑ, ज़, फ़	आगत ध्वनियाँ

उच्चारण के आधार पर हिंदी वर्णों के दो भेद हैं :

क. स्वर **ख. व्यंजन**

स्वर : जिन वर्णों के उच्चारण में कंठ से निकलने वाली वायु बिना किसी रुकावट के बाहर आती है तथा उनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, वे स्वर कहलाते हैं। इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। इस परिभाषा के अनुसार हिंदी के स्वर 10 हैं। यद्यपि ऋ के उच्चारण में 'र्' व्यंजन और 'इ' स्वर होता है, परंतु परंपरानुसार इस वर्ण की मात्रा होती है, अतः उसे भी स्वरों के साथ गिना जाता है :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वर के भेद : उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर के तीन भेद हैं :

1. **ह्रस्व स्वर** : जिन स्वरों का उच्चारण सबसे कम समय (एक मात्रा काल) में किया जाता है, उन्हें हस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। ये कुल चार हैं : अ, इ, उ, ऋ ।

2. **दीर्घ स्वर** : जिन स्वरों का उच्चारण हस्व स्वरों से दुगुने समय (दो मात्रा काल) में किया जाता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये कुल सात हैं – आ, ई, ऊ, ए, ऐ. ओ, औ।

3. **प्लुत स्वर** : जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर या हस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग किसी को पुकारते समय किया जाता है – जैसे : ओउम्, राउम् आदि। परंतु सामान्यतः हिंदी में इन्हें लिखा नहीं जाता।

स्वरों की मात्राएँ : हिंदी के सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर होता है। यदि हमें स्वर–रहित व्यंजन लिखना हो तो हम उसकी खड़ी पाई के नीचे छोटी सी तिरछी लाइन (ऋ) लगा देते हैं, जिसे हलंत कहा जाता है।

स्वरों का जब व्यंजनों के साथ प्रयोग होता है तो इनके स्थान पर इनके मात्रा–चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती। मात्राएँ निम्नलिखित हैं :

अ	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ऋ**	**ए**	**ऐ**	**ओ**	**औ**
0	**ा**	**ि**	**ी**	**ु**	**ू**	**ृ**	**े**	**ै**	**ो**	**ौ**

अयोगवाह : ग्यारह स्वरों के अतिरिक्त हिंदी वर्णमाला में दो वर्ण और भी हैं ' "अं'' (अनुस्वार) और ''अः" (विसर्ग)। ये दोनों स्वरों के बाद आते हैं। इन्हें अयोगवाह ध्वनि कहते हैं। वस्तुतः ये

स्वर नहीं हैं परंतु अन्य स्वर–वर्णों के समान इनकी भी मात्राएँ **(ं , ः)** लगती हैं अतः इन्हें भी स्वरों के अंत में गिना जाता है।

अनुनासिक स्वर : जब किसी स्वर वर्ण का उच्चारण करते समय हवा मुख एवं नासिका दोनों से निकले तो उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है और इन स्वरों को अनुनासिक स्वर कहते हैं, जैसे : दाँत, अँगूठी, चाँद, आँख आदि।

जिन स्वरों की मात्राएँ शिरोरेखा के ऊपर लगती हैं, वहाँ (ँ) के स्थान पर (ं) बिंदु का प्रयोग किया

जाता है : जैसे – मैँ – मैं   नही – नहीं   क्योँकि – क्योंकि

अनुस्वार : अनुस्वार का प्रयोग स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग के 'अ' रहित पंचम अक्षर के स्थान पर किया जाता है ; जैसे –

क वर्ग ङ्	:	गङ्गा	:	गंगा
च वर्ग ञ्	:	चञ्चल	:	चंचल
ट वर्ग ण्	:	पण्डित	:	पंडित
त वर्ग न्	:	हिन्दी	:	हिंदी
प वर्ग म्	:	कम्पन	:	कंपन

विसर्ग : इस ध्वनि का उच्चारण 'ह्' के समान होता है। विसर्ग का प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में होता है, जैसे – प्रातः, पुनः, अतः आदि ।

व्यंजन : वे वर्ण, जो स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं तथा जिनका उच्चारण करते समय हवा रुककर या रगड़ खाकर मुख से बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन के भेद : व्यंजनों को प्रयत्न के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जाता है –

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतःस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु उच्चारण स्थान–विशेष का स्पर्श करती हुई निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं–

वर्ग का नाम	**उच्चारण स्थान**		**प्रकार**
क वर्ग	कंठ	क ख ग घ ङ	कंठ्य
च वर्ग	तालु	च छ ज झ ञ	तालव्य
ट वर्ग	मूर्धा	ट ठ ड ढ़ ण	मूर्धन्य
त वर्ग	दंत	त थ द ध न	दंत्यः
प वर्ग	ओष्ठ	प फ ब भ म	ओष्ठय

2. अंतःस्थ व्यंजन : इन व्यंजनों का उच्चारण स्वरों एवं व्यंजनों के बीच का–सा होने के कारण इन्हें 'अंतःस्थ व्यंजन' कहते हैं। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भाग से पूरी तरह स्पर्श नहीं करती। ये चार हैं : य, र, ल, व।

3. ऊष्म व्यंजन : इनका उच्चारण करते समय हवा के तेज गति से मुँह से रगड़ खाने के कारण ऊष्मा (गरमी) सी पैदा होती है। इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये संख्या में चार हैं :

श, ष, स, ह।

उच्चारण के प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद :

उच्चारण के प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद किए गए हैं, जिसका आधार श्वास वायु की मात्रा है :

क. अल्पप्राण **ख. महाप्राण**

क. अल्पप्राण : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय श्वास–वायु की मात्रा कम निकलती है उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहा जाता है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण है। ये हैं :

क, ग, ङ., च, ज, ञ, ट, ड, ड़, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व।

ख. महाप्राण : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय श्वास– वायु की मात्रा अधिक निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहा जाता है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण है। ये हैं :

ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह ।

नासिक्य व्यंजन : जिन वर्णों के उच्चारण के समय प्राण–वायु मुख और नाक दोनों से निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं जैसे : ङ., ञ, ण, न, म।

अनुस्वार : 'अं' भी नासिक्य व्यंजन है। पाँचों वर्गीय व्यंजनों (क वर्ग आदि) के पूर्व आने वाले

नासिक्य व्यंजन (ङ्. आदि) के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हिंदी में किया जाता है। अनुस्वार का शुद्ध रूप हमें (य, र, ल, व, श, ष, स, ह) के पूर्व ही मिलता है। जैसे : संयम, संरक्षा, संलाप, संवहन, संशय, संसार, संहार आदि।

आगत ध्वनियाँ : विदेशी भाषाओं के प्रभाव से हिंदी मे ऑ, ज़, फ़ आदि ध्वनियाँ आ गई हैं। कुछ शब्दों के अर्थ के भेद को स्पष्ट करने के लिए इनका प्रयोग आवश्यक हो जाता है। जैसे

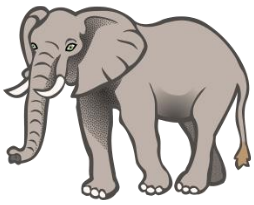

गज (हाथी) :

गज (तीन फुट का नाप)

तेज – तेज़; सजा – सज़ा आदि।

बॉल, डॉक्टर, कॉपी आदि अंग्रेजी शब्दों में जो 'ऑ' उच्चारित होता है, वह 'आ' और 'औ' के बीच की ध्वनि है। अंग्रेजी शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए ऑ ध्वनि को भी स्वीकार कर लिया गया है।

संयुक्त व्यंजन

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं

क्ष	–	क्	+	ष
त्र	–	त्	+	र
ज्ञ	–	ज्	+	ञ
श्र	–	श्	+	र

इन वर्णों के रूप बदलकर नए रूप निश्चित हो गए हैं, इसलिए इन्हें वर्णमाला में स्थान दिया गया हैं। हिंदी में अन्य व्यंजनों के भी संयोग प्रचलित हैं जैसे –– क्यारी, ख्याति, नम्रता आदि। इन्हें **व्यंजन गुच्छ** कहते हैं।

द्वित्व व्यंजन – जब एक व्यंजन ध्वनि समान ध्वनि से जुड़ती है तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं;

जैसे – पक्का, बच्चा, पट्टी, पत्ता, उल्लास आदि।

अभ्यास

1. **वर्ण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।**
2. **स्वर के कितने भेद होते है?**
3. **अनुनासिक और अनुस्वार को संक्षेप में समझाइये।**
4. **अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन किसे कहते हैं।**
5. **निम्नलिखित वर्णो को मिलाकर शब्द बनाकर लिखिए –**

क. स् + आ + र् + थ् + अ + क् + अ ....

ख. क् + ओ + य् + अ + ल् + अ ....

ग. उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ ....

घ. स् + व् + अ + त् + अ + न् + त् + र + अ ....

ङ. औ + द् + य् + ओ् + ग् + इ + क् + अ ....

6. **निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए –**

क. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि ....कहलाती है। .

ख. वर्णों के समूह को ....कहते हैं।

ग. सभी व्यंजन ....की सहायता से बोले जाते हैं।

घ. हस्व स्वर को .... भी कहते हैं।

ड. ....के उच्चारण में मूल स्वर से लगभग ....समय लगता है।

7. **संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग करते हुए पाँच शब्द लिखिए ।**

....

....

8. सही विकल्प के सामने सही ☑ का चिन्ह लगाइए ।

I. निम्नलिखित में से कौन–सा प्रयत्न के आधार पर व्यंजन का भेद नहीं है ?

क. अल्पप्राण ख. ऊष्म ग. अंतःस्थ घ. स्पर्श

II. निम्नलिखित में से किस शब्द में अनुस्वार का सही प्रयोग हुआ है?

क. सिंदूर ख. चोचँ ग. नीदं घ. चौंकना

III. भाषा की सबसे छोटी इकाई है –

क. शब्द ख. वर्ण ग. वाक्य घ. ध्वनि

IV. "विद्यार्थी'' शब्द का वर्ण विच्छेद होगा –

क. व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + इ

ख. व् + ई + द् + अ + थ् + आ + र् + थ् + ई

ग. व् + इ + द् + य् + र् + थ् + ई

घ. व् + द् + य् + आ + र् + थ् + ई

V. निम्नलिखित में से कौन–सा मूल स्वर नहीं है?

क. ऋ ख. अ ग. इ घ. ऊ

अध्याय 3

शब्द–विचार

ध्वनि के मेल से अक्षर बनते हैं तथा अक्षरों के मेल से शब्द बनते हैं।

शब्द वर्णों का ऐसा समूह होता है जिसका एक निश्चित अर्थ हो।

वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि–समूह जो वाक्य में प्रयुक्त होकर विचारों को प्रकट करने में निश्चित भूमिका का निर्वाह करता है, उसे **शब्द** कहते हैं। जैसे– लड़का, जल, कहानी , धरती,हिमालय इत्यादि।

डुलका , लज, टाकनी इत्यादि शब्द नहीं हैं क्योंकि इनसे किसी निश्चित अर्थ का बोध नहीं होताहै।

पद – जब किसी शब्द का प्रयोग वाक्य में किया जाता है तो वह शब्द न रहकर पद बन जाता है। पद व्याकरण के नियमों से बँधा होता है तथा उसका रूप भी बदला हो सकता है।

शब्दों का वर्गीकरण

हिंदी भाषा के शब्दों का वर्गीकरण निम्नांकित चार आधारों पर किया जाता है –

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

उत्पत्ति के आधार पर :

उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशज (घ) विदेशी

(क) तत्सम शब्द :

संस्कृत भाषा के जो शब्द मूल रूप में हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

जैसे – सूर्य, अग्नि, जिह्वा, दुग्ध, मयूर, कर्म आदि।

(ख). तद्भव शब्द :

संस्कृत भाषा के जो शब्द अपने बदले हुए रूप में हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

जैसे – सूरज, आग, जीभ, दूध, मोर, काम आदि।

(ग) देशज शब्द :

जो शब्द देश की विभिन्न बोलियों से आकर हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं। जैसे– खिड़की, लोटा, धोती, गाड़ी, पेट, जूता, पगड़ी आदि।

(घ) विदेशी शब्द :

जो शब्द संसार की विभिन्न भाषाओं से आकर हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं।

जैसे –**अंग्रेजी शब्द** – पेन, स्कूल, बैंक, इंजन, फीस, टीचर, ड्राइवर, ट्रेन, कम्प्यूटर, सर्कस, टेलीफोन, मोबाइल आदि ।

अरबी शब्द – किताब, तारीख, औरत, कालीन, किराया, कसम, खबर, हमला, हवा, मुहावरा, कुर्सी , इरादा आदि ।

फारसी शब्द – किनारा, जवान, दारोगा, बहादुर, आराम, जल्दी , जानवर , नमूना, जमीन, चादर , दुकान, बीमार आदि ।

तुर्की शब्द – तोप, चाकू , कैंची , बारूद, बेगम, कुली, सराय, बीबी , कालीन, काबू , चमचा, लाश, कुरता आदि ।

पुर्तगाली शब्द – साबुन, कमरा, बाल्टी, आलू, चाबी, अचार, तंबाकू , संतरा, अलमारी , फालतू, तौलिया आदि।

2. रचना के आधार पर :

रचना के आधार पर शब्दों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(क) रुढ़ (ख) यौगिक (ग) योगरूढ़

(क) रूढ़शब्द :

जिन शब्दों से किसी विशेष प्रचलित अर्थ का बोध होता है, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे – पानी, नदी, सूर्य, झरना, घोड़ा, तोता, कमल, नाक आदि।

(ख) यौगिक शब्द :

दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं।

जैसे – प्रतिदिन	प्रति + दिन,	सेनापति	सेना + पति
जलचर	जल + चर,	कुपुत्र	कु + पुत्र
धनुष यज्ञ	धनुष + यज्ञ,	प्रयोगशाला	प्रयोग + शाला
मुख्यमंत्री	मुख्य + मंत्री	राष्ट्रपति	राष्ट्र + पति

(ग) योगरूढ़शब्द :

दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने ऐसे यौगिक शब्द जो सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हों, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे– दशानन	दश + आनन	दस मुख वाला अर्थात् रावण
पंक़ज	पंक + ज	कीचड़ में पैदा होने वाला अर्थात् कमल
हिमालय	हिम + आलय	बर्फ का घर अर्थात् हिमालय पर्वत
नीलकंठ	नील + कंठ	नीला है जिसका कंठ अर्थात् शंकर जी

3. प्रयोग के आधार पर :

प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –`

(क) विकारी शब्द (ख) अविकारी शब्द

(क) विकारी शब्द :

विकार का अर्थ है – परिवर्तन या बदलाव। जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया, विकारी शब्द हैं।

जैसे – संज्ञा	–	लड़का	–	लड़की, लड़के, लड़कियाँ
सर्वनाम	–	मैं	–	मेरा, मेरी, मैंने, मुझे, हम
क्रिया	–	लिखना	–	लिखता है, लिखा, लिखेगी, लिखेगी
विशेषण	–	ऊँचा	–	ऊँची, ऊँचे, ऊँची

(ख) अविकारी शब्द :

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं – क्रिया विशेषण, संबंध बोधक , समुच्चय बोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

जैसे – क्रिया विशेषण	–	धीरे–धीरे, जोर से, आज, कल, शीघ्र आदि।
संबंध बोधक	–	साथ, सामने, में, पर, बिना आदि।
समुच्चचयबोधक	–	और, किंतु, तथा, परंतु, लेकिन आदि।
विस्मयादिबोधक	–	वाह!, अहा!, ओह!, हाय!, छिः आदि।

अर्थ के आधार पर :

अर्थ के आधार पर शब्दों को दो वर्गों में बाँट सकते हैं।

(क) सार्थक शब्द (ख) निरर्थक शब्द के

क. सार्थक शब्द :

जिन शब्दों का कोई अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। सार्थक शब्द के निम्नांकित उपभेद हैं –

1. एकार्थी 2. अनेकार्थी 3. समानार्थी 4. विलोम 5, श्रुतिसम भिन्नार्थक

1. एकार्थी शब्द :

जिन शब्दों का एक ही अर्थ होता है, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे – नदी, पर्वत, घर, चंद्रमा, पहाड़, गाँव आदि।

2. अनेकार्थी शब्द '

जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे – अंबर – आकाश, कपड़ा फल – परिणाम, वृक्षकाफल

3. समानार्थी शब्द (पर्यायवाचो) :

समान अर्थ वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

जैसे– आकाश – नभ, गगन, अंबर, राजा – नृप, महीप, भूपति

4... विलोम शब्द :

एक दूसरे के विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं।

जैसे– लाभ – हानि, जन्म – मृत्यु, दिन – रात

5. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द :

जो शब्द सुनने में समान तथा अर्थ में भिन्न हों, उन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे – प्रमाण – सबूत, वदन – मुख, शुल्क – फीस

प्रणाम – अभिवादन, बदन – शरीर, शुक्ल – सफेद

(ख) निरर्थक शब्द :

जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं।

जैसे– टिक–टिक, साँय– वाँय, लमक, वानी, पकल, तलम आदि।

स्मरणीय बिन्दु

- वर्णों के मेल से बना सार्थक ध्वनि–समूह शब्द कहलाता है।
- शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया जाता है–

  क. रचना या बनावट के आधार पर .

  ख. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर

  ग. अर्थ के आधार पर

  घ. प्रयोग के आधार पर

- रचना या बनावट के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं– ४

  1 रूढ़ 2. यौगिक 3. योगरूढ

- उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर शब्द के चार भेद हैं–

  1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज 4. विदेशी

- अर्थ के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं–

  1. पर्यायवाची शब्द 2. अनेकार्थी शब्द 3. एकार्थी शब्द

  4. विलोमार्थी या विपरीतार्थक शब्द

- वाक्य में प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं–

  1. विकारी शब्द 2. अविकारी शब्द

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) शब्द किसे कहते हैं ?

(ख) शब्दों का वर्गीकरण किन–किन आधारों पर किया जाता है ?

(ग) तत्सम और तद्भव शब्द किसे कहते हैं ?

(घ) रचना के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं ?

(ड) अर्थ के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं ?

2. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने ☑ का तथा गलत के सामने ☒ का चिन्ह लगाओ –

(क) वर्णों के निरर्थक समूह को शब्द कहते हैं।

(ख) तत्सम शब्द संस्कृत भाषा के मूल शब्द होते हैं।

(ग) "नदी" शब्द एक यौगिक शब्द है।

(घ) विकारी शब्दों में लिंग, वचन तथा कारक आदि के कारण परिवर्तन हो जाता है।

(ड) एक अर्थ वाले शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

(च) विपरीत अर्थ वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों तद्भव रूप लिखिए –

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
रात्रि	....	जिह्वा	....
चत्वारि	....	घृत	....
दिवा	....	चंद्र	....
सत्य	....	सूत्र	....
शाक	....	दुर्बल	....
पादप	....	हस्ति	....

4. निर्देशानुसार लिखिए –

क. तीन रूढ़ शब्द

ख. तीन यौगिक शब्द

ग. पाँच अंग्रेजी शब्द

घ. पाँच पुर्तगाली शब्द

ड. पाँच अरबी शब्द

च. पाँच फ़ारसी शब्द

5. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही ☑ का चिन्ह लगाइए –

क. रचना या बनावट के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं ?

1. तीन 2. चार 3. दो 4. पाँच

ख. जिन शब्दों के सार्थक खंड न किए जा सकें, उन्हें कहते हैं–

1. यौगिक 2. रूढ 3. योगरूढ़ 4. तत्सम

ग. जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में ज्यों–के–त्यों आ गए हैं, उन्हें कहते हैं–

1. देशज 2. तद्भव 3. विदेशों 4. तत्सम

घ. संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कहते हैं–

1. तत्सम 2. तद्‌भव 3. देशज 4. विदेशी

ड. इनमें से विदेशी शब्द है–

1. घी 2. लोग 3. मेज़ 4. रस्सी

च. इनमें से तत्सम शब्द है–

1. घी 2. कान 3. दाँत 4. दिवा

छ. इनमें से रूढ़ शब्द है–

1. गजानन 2. पक्षी 3. विद्‌यार्थी 4. लंबोदर

ज. 'शत' का तद्‌भव रूप है–

1. सतत 2. सच 3. सैकड़ा 4. सौ

झ. इनमें से अविकारी शब्द है–

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. संबंधबोधक 4. क्रिया

ज. इनमें से विकारी शब्द है–

1. विशेषण 2. क्रियाविशेषण 3.समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

अध्याय 4

वाक्य–विचार

मनुष्य अपने भावों या विचारों को वाक्यों के द्वारा प्रकट करता है। वाक्य में प्रयुक्त पदों का एक निश्चित क्रम होता है। इसके अभाव में वाक्य अटपटा–सा लगने लगता है। जैसे–

राम है पढ़ता पुत्तक। (यह वाक्य अपटपटा–सा है)

राम पुस्तक पढ़ता है। (यह वाक्य ठीक हे)

कई बार एक शब्द या पद को भी पूरे वाक्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे–

सोहन – मोहन, तुम कहाँ जा रहे हो?

मोहन – बाजार।

ये दोनों वाक्य अपने आप में पूर्ण हैं भले ही दूसरे में केवल एक ही शब्द है। दूसरे वाक्य में मोहन ने केवल शब्द "बाजार'' कहकर उत्तर दे दिया। वस्तुतः इसका आशय है–'मैं बाजार जा रहा हूँ।' इस प्रकार कहा जा सकता है कि

सार्थक शब्दों का समूह वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं

1. उद्देश्य
2. विधेय

1. उद्देश्य : वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए –

गीता लिखती है। **मेरा मित्र सचिन** आज लक्ष्मीनगर से आ रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित अंश उद्देश्य हैं।

2. **विधेय** : वाक्य के जिस अंश में उद्देश्य के बारे में कहा जाए, वह विधेय कहलाता है। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए :

मोहन <u>व्यायाम कर रहा है।</u>

नेहा <u>पढ़ रही है।</u>

उपर्युक्त वाक्यों में रंखांकित अंश विधेय हैं।

निम्नलिखित तालिका को ध्यानपूर्वक पढ़िए और समझिए :

	उद्देश्य	विधेय
1.	दशरथ पुत्रराम ने	लंका के राजा रावण को मारा।
2.	कर्नाटक	भारत का एक राज्य है।
3.	श्री मैथिलीशरण गुप्त	भारत के राष्ट्रकवि थे।
4.	प्रेमचंद	'गोदान' उपन्यास लिखा।
5.	कुरुक्षेत्र का ब्रहमसरोवर	एक दर्शनीय स्थल है।
6.	स्कूल के विद्यार्थी	फुटबॉल खेल रहे हैं।
7.	मेरा बेटा	बाजार गया है।

उद्देश्य और विधेय का विस्तार

उद्देश्य का विस्तार : वाक्य में कर्ता के साथ उसके विशेषण स्वरूप कुछ पदों का प्रयोग हो सकता है। इन पद को "कर्ता का विस्तार'' कहते हैं: जैसे–रमेश के भाई मोहन ने बाजार से कुछ पुस्तकें खरीदीं।

इस वाक्य में "मोहन'' कर्ता है तथा 'रमेश के भाई' शब्दों का प्रयोग 'मोहन' की विशेषता बताने के लिए किया गया है। इसलिए 'रमेश के भाई' कर्ता का विस्तार है।

विधेय का विस्तार : विधेय में पाँच प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये हैं :

(1) क्रिया (2) क्रिया का पूरक (3) कर्म (4) कर्म का विस्तार (5) अन्य विस्तार

उदाहरण : रमेश ने बाजार से मोहन के लिए कुछ सामान खरीदा।

इस वाक्य में "रमेश ने'' – कर्ता (उद्देश्य) है तथा "बाजार से मोहन के लिए कुछ सामान खरीदा'' –विधेय है। इस विधेय में–

खरीदा	–	क्रिया
समान	–	कर्म
कुछ	–	कर्म का विस्तार
बाजार	–	अन्य विस्तार

अब नीचे दिए गए एक और वाक्य को ध्यान से पढ़िए :

मोहन का छोटा भाई वीरेंद्र पिछले चार दिनों से बीमार है।

इस वाक्य में–

"वीरेंद्र'' –कर्ता, 'मोहन का छोटा भाई'–कर्ता का विस्तार, 'है' –क्रिया, "बीमार'' –क्रिया का पूरक तथा 'पिछले चार दिनों से' –अन्य विस्तार है।

वाक्य–भेद

वाक्य के भेद दो आधारों से किए जाते हैं :

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं :

क. सरल वाक्य ख. संयुक्त वाक्य ग. मिश्र वाक्य

क) सरल या साधारण वाक्य : जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं ; जैसे–श्यामलाल पुस्तक पढ़ता है। सीता खाना पकाती है।

ब) संयुक्त वाक्य : जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी योजक (समानाधिकरण समुच्चयबोधक) के द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं ; जैसे–रीता कहानी पढ़ती है और सलमा पिक्चर देखती है।

ग) मिश्र वाक्य : जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और दूसरा गौण या आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं ; जैसे–

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था कि तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

(प्रधान उपवाक्य) (आश्रित उपवाक्य)

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं :

(क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक (ग) प्रश्नववाचक (घ) विस्मयादिवाचक

(ड़) आज्ञावाचक (च) इच्छावाचक (छ) संदेहवाचक (ज) संकेतवाचक

क) विधानार्थक या विधानवाचक वाक्य : जिस वाक्य में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो, उसे विधानार्थक या विधानवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–सूर्य प्रकाश देता है।

ख) निषेधात्मक या निषेधवाचक वाक्य : जिस वाक्य में निषेध (मनाही) या नकारात्मकता हो, उसे निषेधात्मक या निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–रजत स्कूल नहीं जाएगा।

ग) प्रश्नार्थक या प्रश्नवाचक वाक्य : जिस वाक्य में प्रश्न किया जाए उसे प्रश्नार्थक या प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–तुम स्कूल कब जाओगे?

घ) विस्मयादिवाचक वाक्य : जिस वाक्य में विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव प्रकट किए गए हों, उसे विस्मयादिवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–आहा! कितना सुंदर दृश्य है।

ङ) आज्ञार्थक या आज्ञावाचक वाक्य :जिस वाक्य में आज्ञा या अनुमति दी जाए, उसे आज्ञार्थक या आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

तुम कमरे से बाहर निकल जाओ। (आज्ञा)

अब आप जा सकते हैं। (अनुमति)

च) इच्छार्थक या इच्छावाचक वाक्य : जिस वाक्य में वक्ता की इच्छा या आशा का वर्णन हो, उसे इच्छार्थक या इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे। (आशा)

आज तो किसी तरह मेरा काम बन जाए। (इच्छा)

छ) संदेहार्थक या संदेहवाचक वाक्य : जिस वाक्य में संदेह या संभावना की झलक मिले, उसे संदेहार्थक या संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–शायद आज वर्षा हो।

ज) संकेतार्थक या संकेतवाचक वाक्य : जिस वाक्य में संकेत (एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर) हो, उसे संकेतार्थक या संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–वर्षा होती तो अच्छी फसल होती।

वाक्य–परिवर्तन

एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलने की प्रक्रिया को 'वाक्य–परिवर्तन' कहते हैं। आइए, इसे विस्तारपूर्वक जानें :

रचना के आधार पर वाक्य–परिवर्तन

(क) सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाना–सरल वाक्य से मिश्र वाक्य बनाने के लिए सरल वाक्य से दो उपवाक्य बनाकर उन्हें 'जो', "जबकि'', 'क्योंकि', 'यदि', 'जिसने', 'जब' आदि योजकों से जोड़ा जाता है। जैसे–

सरल वाक्य	**मिश्र वाक्य**
1. परिश्रमी पुरुष सफल होते हैं।	जो परिश्रमी पुरुष होते हैं, वे सफल होते हैं।
2. मेरा काला घोड़ा तेज दौड़ता है।	मेरा जो काला घोड़ा है, वह तेज दौड़ता है।
3. साहसी पुरुष उन्नति करते हैं।	जो साहसी पुरुष होते हैं, वे उन्नति करते हैं।
4. दुष्ट लोग दूसरों की निंदा करते हें।	वे लोग दुष्ट हैं, जो दूसरों की निंदा करते हैं।

(ख) सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाना–सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाते समय सरल वाक्य के अंश को दो उपवाक्यों में बदलकर उन्हें 'और', 'अथवा', 'तथा', 'परंतु', "किंतु" आदि योजकों से जोड़ा जाता है जैसे–

सरल वाक्य	**मिश्र वाक्य**
1. वह गाँव जाकर बीमार पड़ गया।	वह गाँव गया और बीमार पड़ गया।
2. मैंने बाजार से फल खरीदे।	मैं बाजार गया और मैंने फल खरीदे।
3. रवि आकर चला गया।	रवि आया और चला गया।
4. तोता पिंजरे में बैठकर फल खा रहा है।	तोता पिंजरे में बैठा हे और वह फल खा रहा है।

(ग) संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य बनाना–संयुक्त वाक्य के एक प्रधान उपवाक्य को मुख्य उपवाक्य बनाकर दूसरे प्रधान उपवाक्य को आश्रित उपवाक्य बना देना चाहिए जैसे– :

सरल वाक्य	**मिश्र वाक्य**
1. सीमा आई और लता चली गई।	जब सीमा आई तब लता चली गई।
2. तुमने कहा और सब मान गए।	जब तुमने कहा तब सब मान गए।
3. माँ ने खाना बनाया और मेहमान आ गए।	जैसे ही माँ ने खाना बनाया वैसे ही मेहमान आ गए।
4. सभा समाप्त हुई और सब लोग चले गए।	जैसे ही सभा समाप्त हुई वैसे ही सब लोग चले गए।

अर्थ के आधार पर वाक्य–परिवर्तन

वह पढ़ने जा रहा है। (विधानवाचक)	मैं कल विद्यालय जाऊँगा। (विधानवाचक)
वह पढ़ने नहीं जा रहा है। (निषेधवाचक)	मैं कल विद्यालय नहीं जाऊँगा। (निषेधवाचक)
तुम पढ़ने जाओगे। (आज्ञावाचक)	तुम कल विद्यालय जाओ। (आज्ञावाचक)
क्या तुम पढ़ने जा रहे हो? (प्रश्नवाचक)	क्या तुम कल विद्यालय जाओगे? (प्रश्नवाचक)
अच्छा! तुम पढ़ने जा रहे हो। (विस्मयवाचक)	अच्छा! तुम कल विद्यालय जाओगे? (विस्मयवाचक)
शायद तुम पढ़ने जा रहे हो। (संदेहवाचक)	शायद मैं कल विद्यालय जाऊँ। (संदेहवाचक)
तुम्हें पढ़ने जाना चाहिए। (इच्छावाचक)	तुम्हें कल विद्यालय जाना चाहिए। (इच्छावाचक)
पढ़ोगे तो सफल अवश्य होगे। (संकेतवाचक)	तुम कल विद्यालय गए तो अच्छा होगा।(संकेतवाचक)

अभ्यास कार्य

प्र.1 प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क. वाक्य से आप क्या समझते हैं , उदाहरण देकर समझाइये ।

ख. वाक्य के अंगों के नाम लिखिए ।

ग. मिश्र वाक्य को उदाहरण देकर समझाइए ।

घ. वाक्य का भेद किन आधारों पर किया जाता है ?

2. निम्नलिखित वाक्यों के सामने रचना के आधार पर उनके भेद लिखिए :

क. शशि पत्र लिखता है। ....

ख. महेश आया और भानु चला गया। ....

ग. गुरूजी ने कहा कि अब पाठ पढ़ो ....

घ. जो व्यक्ति बाहर खड़ा है वह मेरा मित्र है। ....

ड. आदित्य अपने घर चला गया । ....

3. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए :

(क) वह पान लाने के लिए चौक तक गया। (मिश्र वाक्य में)

....

(ख) बाजार जाकर कुछ फल–सब्जी ले आओ। (संयुक्त वाक्य में)

....

(ग) माँ गई और बालक रोने लगा। (मिश्र वाक्य में)

....

(घ) जो परिश्रम करेगा, उत्तीर्ण हो जाएगा। (साधारण वाक्य में)

....

4. अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद लिखिए –

(क) मोहित पढ़ने जा रहा है। ....

(ख) शायद आज बारिश होगी । ....

(ग) तुम अभी बाजार जाओ। ....

(घ) परिश्रम करोगे तो पुरस्कार मिलेगा। ....

(ङ) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया। ....

(च) क्या तुम दिल्ली जाओगे? ....

(७) तुम्हें मंदिर जाना चाहिए। ....

(ज) रोहित मुंबई नहीं जाएगा। ....

5. नीचे दिए गए विकल्पों में से उच्चित विकल्प पर सही ☑ का निशान लगाइए :

(क) "यह लड़की कितनी सुंदर है।" – वाक्य में उद्देश्य है :

(1) यह (2) यह लड़की

(3) कितनी (4) सुंदर है

(ख) जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, वह कहलाता है :

(1) मिश्र वाक्य (2) संयुक्त वाक्य

(3) सरल वाक्य (4) सरल व मिश्र वाक्य

(ग) तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की। – वाक्य में विधेय है :

(1) तुलसीदास ने (2) रामचरितमानस

(3) रचना की (4) रामचरितमानस की रचना की

(घ) "वाह! कितना सुंदर दृश्य है।"–अर्थ के आधार पर कौन–सा वाक्य है ?

(1) विधानवाचक (2) प्रश्नवाचक

(3) विस्मयादिवाचक (4) संदेहवाचक

(ङ:) "रमन चला गया और श्रवण आ गया।" –रचना के आधार पर कौन–सा वाक्य है?

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य

(3) मिश्र वाक्य (4) इनमें कोई नहीं है

अध्याय 5

संज्ञा

इस अध्याय में हम संज्ञाओं तथा उनके भेदों और उपभेदों के विषय में अध्ययन करेंगे। हम यह भी जानते हैं कि सज्ञाएँ वस्तुओं को नाम देने वाले शब्द होते हैं। वस्तुओं के दो वर्गों के आधार पर संज्ञाओं के भी दो मुख्य वर्ग हैं–मूर्त संज्ञा तथा अमूर्त संज्ञा ।

मर्त संज्ञाएँ : ऐसीं वस्तुओं के नाम होते हैं जिनका कोई मूर्त रूप (शरीर) होता है। जैसे–मनुष्य, पशु, स्थान विभिन्न निर्जीव वस्तुएँ आदि।

अमूर्त संज्ञाएँ : ऐसी वस्तुओं के नाम होते हैं जिनका कोई मूर्त रूप (शरीर) न हो जैसे–दया, सौंदर्य, सुगंध, परिश्रम, संगीत, गणित, हर्ष, निर्धनता आदि।

मूर्त संज्ञाओं के भेद –

मूर्त संज्ञाओं के चार भेद हैं–जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा तथा समुदायवाचक संज्ञा। आइए इनके विषय में जानकारी प्राप्त करें–

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए

क) **मदन** का **गाँव** बहुत सुंदर है।

ख) **बगीचे** में सुंदर **फूल** खिले हैं।

ग) **सुरेश** को **मंदिर** जाना अच्छा लगता है।

घ) **सिपाही** ने **चोर** को **डंडे** से पीटा।

ड) हमारे **देश** का नाम **भारत** है।

च) **बच्चे** खेल रहे हैं ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे शब्द हैं–गाँव, बगीचा, फूल, मंदिर, सिपाही, चोर, डंडे, देश, भारत तथा बच्चे। ये सभी शब्द मूर्त वस्तुओं के नाम हैं। अतः ये मूर्त संज्ञाएँ हैं।

क) जातिवाचक संज्ञा

ऊपर के वाक्यों में छपी संज्ञाओं में से गाँव, बगीचा, फूल, मंदिर, सिपाही, चोर, डंडा, देश, बच्चे ऐसी संज्ञाएँ हैं जो प्राणियों अथवा निर्जीव वस्तुओं की जातियों की ओर संकेत करती हैं। दूसरे शब्दों में उनमें से प्रत्येक संज्ञा शब्द को बोलने पर उसकी पूरी जाति का बोध हो जाता है।

जिस शब्द से एक ही प्रकार के प्राणियों, वस्तुओं और स्थानों आदि का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा

ऊपर दिए वाक्यों में छपी संज्ञाओं में से मदन, सुरेश तथा भारत ऐसी संज्ञाएँ हैं, जो व्यक्तियों अथवा स्थानों के विशिष्ट नाम हैं, अर्थात एक सामान्य लड़के को बाकी सब लड़कों से अलग करने हेतु एक विशिष्ट नाम मदन दे दिया गया है। एक सामान्य लड़के को बाकी सब लड़कों से अलग करने हेतु एक विशिष्ट नाम सुरेश दे दिया गया है। एक सामान्य देश को बाकी सब देशों से अलग करने हेतु एक विशिष्ट नाम भारत दे दिया गया है। ऐसी संज्ञाओं को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

ग) द्रव्यवाचक संज्ञा

1. ये कंगन सोने के बने हुए हैं।   2. मटके चिकनी मिट्टी से बनते हैं।

3. बोतलें शीशे की बनी होती हैं।   4. मशीनें लोहे की बनी होती हैं।

5. अनेक वस्तुएँ प्लास्टिक की बनी होती हैं। 6. गर्म कपड़े ऊन से बनाए जाते हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे शब्द–सोना, मिट्टी, शीशा, लोहा, प्लास्टिक तथा ऊन–ऐसे द्रव्यों के नाम हैं जिनके प्रयोग से विभिन्न वस्तुएँ बनाई जाती हैं। यद्यपि ये सब मूलतः जातिवाचक संज्ञा ही हैं तथापि द्रव्यों के नाम होने के कारण इन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहा जाता है।

घ) समूहवाचक संज्ञा

1. हमारी **टीम** ने मैच जीत लिया है। 2. पेड़ों के **झुंड** को बीहड़ कहते हैं।

3. अंगूरों का **गुच्छा** प्लेट में रख दो। 4. हमारी **कक्षा** में 30 छात्र हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे शब्द–टीम, झुंड, गुच्छा तथा कक्षा–ऐसे संज्ञा शब्द हैं जो प्राणियों अथवा वस्तुओं के समूहों के नाम हैं। यद्यपि ये सब मूलतः जातिवाचक संज्ञाएँ ही हैं तथापि समुदायों के नाम होने के कारण इन्हें समूहवाचक संज्ञा कहा जाता है।

अमूर्त भाववाचक संज्ञाएँ

मूर्त संज्ञा के चार भेदों–जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा के विषय में हम जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब भाववाचक संज्ञा के विषय में अध्ययन करेंगे।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए –

1. **दया** एक अतिउत्तम गुण है। 2. गुलाब की **महक** मीठी होती है।

3. **परिश्रम** से सब कुछ प्राप्त हो सकता है। 4. **निर्धनता** एक दयनीय दशा होती है। .

5. प्रियंका का **सौंदर्य** अनुपम है। 6. **ईर्ष्या** सदैव हानिकारक सिद्ध होती है।

ऊपर दिए वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे शब्द–दया, महक, परिश्रम, निर्धनता, सौंदर्य तथा ईर्ष्या–ऐसे नाम जो अमूर्त भावों, गुणों, दशाओं, स्थितियों, कार्यों आदि के नाम हैं। इनमें से किसी का भी कोई पिंड (शरीर) नहीं होता। इसी कारण इन्हें छुआ नहीं जा सकता केवल अनुभव किया जा सकता है अथवा इनके विषय चिंतन किया जा सकता है। ऐसी संज्ञाओं को अमूर्त अथवा भाववाचक संज्ञाएँ कहा जाता है।

अमूर्तभाववाचक संज्ञाओं की रचना

भाववाचक संज्ञाएँ चार प्रकार के शब्द–भेदों से बनती हैं–

(क) जातिवाचक संज्ञाओं से (ख) सर्वनामों से (ग) विशेषणों से (घ) क्रियाओं से

क) जातिवाचक संज्ञाओं से

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
1. अभिनेता	अभिनय
2. मनुष्य	मनुष्यता
5. ईश्वर	ऐश्वर्य
4. मानव	मानवता

(ख) सर्वनामों से

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
1. अपना	अपनत्व
2. आप	आपा
3. निज	निजत्व निजता
4. अहं	अहंकार

(ग) विशेषणों से

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
1. वास्तविक	वास्तविकता	3. अमर	अमरत्व
2. परिचित	परिचय	4. अरुण	अरुणिमा

स्मरणीय तथ्य

1. संसार की सभी साकार–निराकार वस्तुओं के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
3. किसी जाति का बोध कराने वाले शब्दों को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
4. किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के गुण, दोष, दशा, अवस्था या स्वभाव की ओर करने वाली संज्ञा को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
5. जातिवाचक संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों व क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है।
6. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।
7. संज्ञा के मुख्य दो वर्ग हैं मूर्त संज्ञा , अमूर्त संज्ञा ।
8. मूर्त संज्ञाएँ मूर्त वस्तुओं को दिए गए नाम होते हैं। मूर्त संज्ञाओं के चार भेद हैं–व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, समूहवाचक तथा द्रव्यवाचक संज्ञा ।
9. अमूर्त संज्ञाएँ अमूर्त तत्वों–गुण, भाव, विचार, दशा, स्थिति तथा लक्षण–आदि को दिए गए नाम होते हैं।
10. भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञाओं से, सर्वनामों से, विशेषणों से तथा क्रियाओं से बनती हैं।
11. अमूर्त संज्ञाओं के लिए प्रचलित शब्द है–भाववाचक संज्ञाएँ।

अभ्यास

1. संज्ञा किसे कहते हैं? संज्ञा के विभिन्न प्रकार उदाहरण सहित बताइए।

2. जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

3. भाववाचक संज्ञा को समझाइए।

4. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों को भरिए –

(क) किसी जाति का बोध कराने वाली संज्ञा को .... कहते हैं।

(ख) किसी गुण, अवस्था, भाव आदि का बोध कराने वाली संज्ञा को .... कहते हैं।

(ग) "बड़ा' शब्द से बना भाववाचक संज्ञा शब्द .... होता है।

(घ) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम को .... कहते हैं।

(ड) संज्ञा के मुख्य .... वर्ग होते है।

5. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा–शब्द बनाइए –

मम	तृप्त ....
खोजना	चुराना ....
पढ़ना	दोस्त ....
वीर	सेवक ....
बदलना	शिशु ....
आप	सज्जन ....

6. नीचे बीस (20) संज्ञाएँ दी गई हैं। उन्हें अपने–अपने स्तंभ में लिखिए :

टीम गुलाब मदन शीशा बुढ़ापा खिलौना मधुरता चंडीगढ़ गहराई झुंड
आगरा पुस्तक गीता लोहा देश प्लास्टिक परिवार मिट्टी चोरी राजघा

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	द्रव्यवाचक	समूहवाचक	भाववाचक
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....

अध्याय 6

लिंग

नीचे दिए गए चित्रों तथा उनमें दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखकर अंतर समझिए–

माली पौधा लगा रहा है।

मालिन फूल चुन रही है।

सिंह दहाड़ रहा है।

सिंहनी सो रही है।

ऊपर दिए गए चित्रों को ध्यान से देखें। पहले दो चित्रों में माली तथा मालिन काम करते हुए दिखाए गए हैं तथा दूसरे दो चित्रों में सिंह तथा सिंहनी को क्रमशः दहाड़ते और सोते हुए दिखाया गया है। शब्दों के प्रत्येक जोड़े में से एक जीव नर–जाति का है तथा दूसरा मादा–जाति का । नर–जाति अथवा नारी–जाति से किसी जीव का संबंध उसका लिंग कहलाता है। यह संबंध विकारी शब्द–भेदों (संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों तथा क्रियाओं) में स्पष्ट लक्षित हो जाता है क्योंकि इन शब्द–भेदों में नर–जाति तथा नारी–जाति के अनुसार शब्दों के रूप अलग–अलग होते हैं। अतः लिंग की परिभाषा निम्न प्रकार की जा सकती है–

(जिस शब्द से यह बोध होता है कि वह पुरूष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।)

लिंग के भेद

लिंग के दो भेद हैं–पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग

विकारी शब्दों के जो रूप नर–जाति का बोध करवाते हैं, उनका लिंग **पुल्लिंग** होता हैः

जैसे–अध्यापक, पुत्र, हिरण, मोर, दादा, छात्र, धोबी इत्यादि ।

विकारी शब्दों के जो रूप नारी–जाति का बोध करवाते हैं, उनका लिंग **स्त्रीलिंग** होता हैः

जैसे–अध्यापिका, पुत्री, हिरणी, मोरनी, दादी, छात्रा, धोबिन, चिड़िया इत्यादि ।

सामान्य पुल्लिंग शब्द

1. शरीर के अंगों के नाम–मुँह, सिर, हाथ, पाँव, नाक, कान इत्यादि ।
2. रत्नों के नाम–हीरा, मोती, पन्ना, माणिक, लाल, नीलम, पुखराज इत्यादि ।
3. धातुओं के नाम–लोहा, ताँबा, अभ्रक, पीतल, सोना इत्यादि। (चाँदी अपवाद है, जो स्त्रीलिंग होती है)

4. अनाजों के नाम–गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, जौ इत्यादि।

5. ग्रहों के नाम–सूर्य, चंद्र, राहू, केतु, बृहस्पति, शनि, मंगल इत्यादि ।

6. पेड़ों के नाम–आम, पीपल, शीशम, कीकर, नीम, साल इत्यादि।

7. जल व स्थल भागों के नाम–समुद्र, सरोवर, देश, नगर, घर इत्यादि।

8. पर्वतों के नाम–हिमालय, विंध्याचल, कैलाश, नीलगिरि इत्यादि ।

9. द्रवों के नाम–जल, दूध, घी, तेल, पेट्रोल, डीजल इत्यादि।

10. दिनों के नाम–रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार।

11. महीनों के नाम–जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, चौत्र, वैशाख ज्येष्ठ, आषाढ़ इत्यादि।

12. देशों और महाद्वीपों के नाम–भारत, अमेरिका, चीन, फ्रांस, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश इत्य

13. नक्षत्रों के नाम–रोहिणी, अश्विनी, भरणी इत्यादि। ।

सामान्य स्त्रीलिंग शब्द –

1. बोलियों के नाम–पंजाबी, हिंदी, बांग्ला, राजस्थानी, तमिल, तेलुगु इत्यादि ।

2. आहारों के नाम–दाल, रोटी, सब्जी, पूरी, कचौरी इत्यादि।

3. तिथियों के नाम–पूर्णिमा, एकादशी, अमावस्या, चतुर्दशी इत्यादि।

4. नदियों के नाम–गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, रावी, सतलुज, व्यास इत्यादि।

5. उकारांत तत्सम संज्ञाएँ–मृत्यु, वायु, वस्तु इत्यादि।

6. अधिकतर इकारांत और ईकारांत संज्ञाएँ–भक्ति, शक्ति, रति, नीति, नियति इत्यादि ।

7. कुछ शब्दों का प्रयोग सदा स्त्रीलिंग में ही प्रयोग होता है। जैसे–मछली, चील, कोयल, गिलहरी, दीमक इत्यादि।

8. संस्कृत के आकारांत शब्द–प्रतिज्ञा, प्रतिभा, सभा, माया, माला इत्यादि।

उभयलिंग शब्द

ऐसे शब्द जिनका प्रयोग पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों में ही समान रूप से उभयलिंग कहलाते हैं। जैसे–डॉक्टर, अधिवक्ता, लिपिक, प्रबंधक, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्य सभापति, जिलाधिकारी, न्यायाधीश आदि।

शब्दों के लिंग परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के निम्नलिखित नियम हैं–

(क) आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'अ' को 'आ' करके जैसे

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अध्यक्ष	अध्यक्षा
आचार्य	आचार्या
प्राचार्य	प्राचार्या
बाल	बाला

(ख) अकारांत व आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'अ' अथवा 'आ' को 'ई' करके, जैसे '

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
काका	काकी
घोड़ा	घोड़ी
देव	देवी
बकरा	बकरी

(ग) कुछ अकारांत व आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'अ' व 'आ' के स्थान पर 'इया' जोड़ने से, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
बंदर	बंदरिया
डिब्बा	डिबिया

(घ) व्यवसायवाच्री पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'इन' जोड़ करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
जुलाहा	जुलाहिन
तेली	तेलिन
पुजारी	पुजारिन
माली	मालिन

(ङ.) कुछ संज्ञा शब्दों के अंत में 'आइन' जोड़ करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
गुरु	गुरुआइन

चौबे	चौबाइन
बाबू	बबुआइन
लाला	ललाइन

(च) कुछ संज्ञा शब्दों के अंत में 'आनी' जोड़ करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
इंद्र	इंद्राणी
देवर	देवरानी
मुगल	मुगलानी
रुद्र	रुद्राणी

(छ) कुछ संज्ञा शब्दों के श्अकश् को 'इका' करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अध्यापक	अध्यापिका
संचालक	संचालिका
निवेदक	निवेदिका
नायक	नायिका

(ज) अकारांत पुल्लिग शब्दों के अंत में 'नी' जोड़ करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ऊँट	ऊँटनी
जाट	जाटनी
मोर	मोरनी
शेर	शेरनी

(झ) कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत के 'वान' को '"वती' करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
गुणवान	गुणवती
बलवान	बलवती
रूपवान	रूपवती
धैर्यवान	धैर्यवती

(ज) कुछ पुल्लिंग शब्दों के अंत के 'आन' को 'अती' करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
महान	महती
श्रीमान	श्रीमती

(ट) कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत में 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगा करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अभिमानी	अभिमानिनी
अधिकारी	अधिकारिणी
तपस्वी	तपस्विनी
यशस्वी	यशस्विनी

(ठ) कुछ पुल्लिग शब्दों के अंत में 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगा करके, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दाता	दात्री
भर्ता	भर्त्री
अभिनेता	अभिनेत्री
प्रबंधकर्ता	प्रबंधकर्त्री

(ड) कुछ संज्ञा शब्दों के स्त्रीलिंग में बिल्कुल भिन्न रूप होते हैं, जैसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री
विद्वान	विदुषी
नर	नारी
पुरुष	स्त्री

स्मरणीय बिंदु

- ✓ शब्दों का वह रूप जो उनके पुरुष अथवा स्त्री जाति का होने के विषय में बताता है, लिंग कहलाता है।
- ✓ हिंदी में लिंग दो होते हैं– 1. पुल्लिंग, 2. स्त्रीलिंग।

✓ वे शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।

✓ वे शब्द जो स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।

✓ कुछ शब्द उभयलिंगी भी होते हैं।

अभ्यास

1. लिंग किसे कहते हैं?

2. लिंग के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए।

3. शुद्ध वाक्य के सामने ☑ तथा अशुद्ध वाक्य के सामने ☒ का चिन्ह लगाइए :

(क) हिंदी में तीन लिंग प्रयुक्त होते हैं।

(ख) जो शब्द नर–जाति का बोध करवाते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहा जाता है।

(ग) पुलिंग और स्त्रीलिंग शब्द एक–दूसरे में परिवर्तित नहीं हो सकते ।

(घ) दिनों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

(ङ) ग्रहों के नाम पुंल्लिंग होते हैं।

(च) बोलियों तथा आहारों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

(छ) नक्षत्रों के नाम पुलिंग होते हैं।

(ज) नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों के आगे उनके लिंग लिखिए :

ब्राहमणी	नागिन	डिब्या	सिंह ....
पाठिका	लुहार	साथिका	निवेदिका ....
बछड़ा	बेगम	क्षत्रिय	वधु ....

5. लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए :

(क) अध्यापक ने छात्राओं को चुप रहने का आदेश दिया।

(ख) साधु तपस्या कर रहा था।

(ग) सेठानी ने नौकर से खाना लाने के लिए कहा।

(घ) हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य अत्यंत योग्य पुरुष हैं।

(ङ) कवि–सम्मेलन में कवयित्रियों ने कविता–वाचन किया।

(च) माता ने पुत्रों को प्यार किया।

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए–

(क) लिंग है–

(1) शब्द का रूप (2) वाक्य का रूप

(3) वर्ण का रूप (4) कोई नहीं ।

(ख) स्त्री अथवा पुरुष का बोध कराता है–

(1) स्त्रीलिंग (2) पुल्लिंग

(3) लिंग (4) स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दोनों

(ग) हिंदी में लिंग होते हैं–

(1) दो (2) तीन

(3) चार (4) एक

(घ) लिंग का निर्धारण नहीं करते–

(1) पुल्लिंग शब्द (2) स्त्रीलिंग शब्द

(3) उभयलिंग शब्द (4) कोई नहीं

(ङ:) निन्नलिखित में पुल्लिंग शब्द है –

(1) हिंदी (2) गंगा

(3) विधवा (4) श्रीमान

(च) निम्नलिखित में स्त्रीलिंग शब्द है –

(1) पैर (2) आँख

(3) हाथ (4) कान

अध्याय 7

वचन

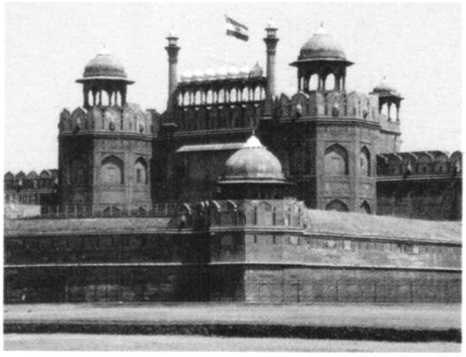

लाल किले पर **झंडा** फहरा रहा है।

मंदिर पर **झंडे** फहरा रहे हैं।

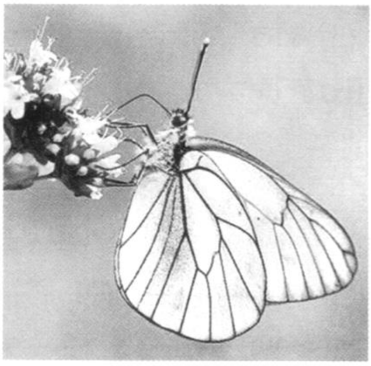

फूल पर तितली बैठी है।

फूलों पर तितलियाँ बैठी हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में–

झंडा, फूल और तितली शब्द उनके संख्या में एक होने का बोध करा रहे हैं।

झंडे, फूलों व तितलियाँ शब्द उनके संख्या में एक से अधिक होने का बोध करा रहे हैं ।

अतः

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

हिंदी में वचन दो होते हैं–

(क) एकवचन

(ख) बहुवचन

(क) एकवचन

शब्द का वह रूप जिससे उसके संख्या में एक होने का बोध हो, एकवचन कहलाता है।

जैसे–गाय, कबूतर, तोता, लड़का आदि।

(ख) बहुवचन

शब्द का वह रूप जिससे इसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध हो, बहुवचन है।

जैसे–कौए, तोते, चिड़ियाँ, लड़के आदि।

एकवचन व बहुवचन में समान रहने वाले शब्द

हाथी, बंदर, शेर, वृक्ष, पर्वत, घर, चोर, डाकू आदि।

सदा एकवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द

सच, झूठ, आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, वर्षा, जनता, पानी, आग आदि।

सदा बहुवचन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द

आँसू, हस्ताक्षर, दर्शन, समाचार, प्राण आदि।

विशेष––

- भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग सदैव एकवचन में होता है। जैसे–वीरता, सुंदरता, यौवन आदि।
- आदर अथवा सम्मान प्रकट करने के लिए बहुवचन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
- धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं।

बहुवबचन बनाने के नियम

बहुवचन बनाने के नियम इस प्रकार हैं–

. (क) अंतिम 'अ' को 'एं' करके, जैसे –

एकवचन	बहुवचचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें	द्वात	दवातें
कमीज	कमीजें	रात	रातें
गेंद	गेंदें	दीवार	दीवारें

(ख) आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
आत्मा	आत्माएँ	कला	कलाएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	आचार्या	आचार्याएँ
लता	लताएँ	जटा	जटाएँ

(ग) 'या' शब्दांत को 'याँ' में बदलकर, जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
पुडिया	पुडियाँ	खटिया	खटियाँ
चिडिया	चिडियाँ	चुहिया	चुहियाँ
डिबिया	डिबियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ

(घ) शब्दांत 'इ' अथवा 'ई' को 'इ' करके 'याँ' जोड़ने से, जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
धोती	धोतियाँ	घड़ी	घडियाँ
नारी	नारियाँ	नीति	नीतियाँ
सखी	सखियाँ	जाति	जातियाँ

(ड.) उकारांत, ऊकारांत तथा औकारांत शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर, जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
गौ	गौएँ	वस्तु	वस्तुएँ
वधू	वधुएँ	बहू	बहुएँ

(चर) शब्दांत 'आ' को 'ए' करके, जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
कीड़ा	कीडे	गमला	गमले
तारा	तारे	खरबूजा	खरबूजे
ताला	ताले	तोता	तोते

(छ) संज्ञा शब्दों में 'गण', 'वृंद', 'जन', 'वर्ग', 'श्लोग' शब्द जोड़ने से, जैसे –

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचचन
छात्र	छात्रगण	विद्यार्थी	विद्यार्थीगण
मित्र	मित्रगण	प्रजा	प्रजाजन
गुरु	गुरुजन	मजदूर	मजुदूरवर्ग

स्मरणीय बिन्दु

- शब्द का वह रूप जो उसके संख्या में एक अथवा एक से अधिक होने का बोध कराता है, उसे वचन कहते हैं।
- हिंदी में वचन दो होते हैं–. एकवचन, 2. बहुवचन।
- एकवचन से किसी वस्तु के संख्या में एक तथा बहुबचन से वस्तु के संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है।
- भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग सदैव एकवचन में होता है।
- किसी के प्रति आदर अथवा सम्मान प्रकट करने के लिए बहुबचन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

अभ्याय

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) हिंदी में वचन कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक की परिभाषा दीजिए।

(ख) आदर एवं सम्मान प्रकट करने के लिए किस वचन का प्रयोग करते है?

(ग) भाववाचक संज्ञाओ का प्रयोग किस वचन में होता है ?

2. वचन संबंधी अशुद्धियाँ दूर करके वाक्यों पुनः लिखिए –

(क) उसका होश उड़ गया।

(ख) आज मैंने गणेश जी का दर्शन किया।

(ग) मेरा पिता जी आ गया ।

(घ) तुमने हस्ताक्षर कर दिया ।

(ड) गर्मी में प्राण निकल रहा है।

3. वचन बदलिए–

(क) एकवचन से बहुवचन

लुटिया .... गौ .... लकड़ी ....

आत्मा .... संतरा .... लता ....

गेंद .... छात्र .... चुहिया ....

(ख) बहुवचन से एकवचन–

गुरुजन......................	बहुएँ	आचार्याएँ ....
शिक्षकवृंद	बुढ़ियाँ	सड़कें ....
लड़के	प्रजाजन	घड़ियाँ ....

4. निम्नलिखित अंत वाले बहुबचचन शब्द लिखिए–

याँ	एँ	ए	वर्ग
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए–

(क) शब्द का वह रूप जो उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध कराता हे, उसे कहते हैं–

वचन	एकवचन
द्विवचन	बहुवचन

(ख) हिंदी में वचन के भेद हैं–

एक	दो
तीन	कोई नहीं

(ग) भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग होता है–

एकवचन में	बहुवचन में
किसी में नहीं	दोनों में

(घ) किसी के प्रति आदर–सम्मान व्यक्त करने के लिए–

एकवचन का प्रयोग करते हें	बहुवचन का प्रयोग करते हें
दोनों का प्रयोग करते हें	द्वि वचन का प्रयोग करते हैं

अध्याय 8

कारक

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

1. हमारे देश सींचने वाली अनेक पवित्र नदियाँ हिमालय निकलती हैं।
2. भारत सभी धर्मों समान दृष्टि देखा जाता है।
3. बसंत ऋतु चारों ओर सौंदर्य साम्राज्य होता है।
4. हमें अपने देश संस्कृति गर्ब है।
5. इस कक्षा बच्चों गुरुजी एक उपहार खरीदा।

कैसे लगे, आपको उपर्युक्त वाक्य?

अटपटे तथा हास्यापद लगे, न?

आइए अब इन वाक्यों को दूसरे प्रकार से लिखें –

नीचे लिखे वाक्यों को पुनः पढ़िए और उनमें छपे रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए।

1. हमारे देश को सींचने वालीं अनेक पवित्र नदियाँ हिमालय से निकलती हैं।
2. भारत में सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखा जाता है।
3. बसंत ऋतु में चारों ओर सौंदर्य का साम्राज्य होता है।
4. हमें अपने देश की संस्कृति पर गर्व है।
5. इस कक्षा के बच्चों ने गुरुजी के लिए एक उपहार खरीदा।

अब ये वाक्य सार्थक बन गए।

इनमें रंगीन शब्दों का प्रयोग करने पर वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्दों (पदों) का आपस में संबंध स्थापित गया जिससे उसका अर्थ भी ठीक से समझ में आ गया। इन वाक्यों में जो रंगीन शब्द प्रयुक्त किए गए वे कारकों की विभक्तियाँ या चिन्ह हैं।

कारक की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है उसे **''कारक''** कहते है। जैसे– 'रवि' 'चाकू' 'फल', 'काटा' –इन चारों शब्दों से 'रवि ने चाकू से फल को काटा'–वाक्य बनाया जा सकता है। इस वाक्य में –

- क्रिया है – 'काटा'

- क्रिया को करने वाला है– 'रवि'
- जिस साधन से क्रिया संपन्न हो रही है, वह है–'चाकू'
- क्रिया का प्रभाव जिस संज्ञा पर पड़ रहा है, वह है– 'फल'

अतः 'काटने' की क्रिया को करने में तीन संज्ञा शब्दों का योगदान हे–'रवि', 'चाकू' तथा 'फल' इन तीनों संज्ञा शब्दों के संबंध को दिखाने के लिए– 'ने', 'से' तथा 'को' विभक्तियों का प्रयोग किया गया है जो अलग–अलग कारकों की हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि किसी वाक्य में कोई संज्ञा या सर्वनाम शब्द (पद) किस प्रकार की भूमिका निभा रहा है, यह कारकों द्वारा ही स्पष्ट होता है।

संज्ञा या सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे अन्य शब्दों से बतलाने के लिए उनके साथ जो चिन्ह लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्ति या परसर्ग कहते हैं ।

कारक के आठ भेद है –

(क) कर्ता कारक–	परसर्ग 'ने'
(ख) कर्म कारक–	परसर्ग "को'
(ग) करण कारक–	परसर्ग 'से', 'के द्वारा'
(घ) संप्रदान कारक–	परसर्ग 'को', 'के लिए'
(ड.) अपादान कारक–	परसर्ग 'से' (अलग होने के अर्थ में)
(छ) अधिकरण कारक–	परसर्ग "में', "पर'
(ज) संबोधन कारक–	परसर्ग हे', ''ओ', अरे!

(क) कर्ता कारक–परसर्ग 'ने'

संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जिससे क्रिया (कार्य) करने वाले का बोध होता है,
उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसके लिए परसर्ग 'ने' व 'शून्य' का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– 'तुषार ने पत्र लिखा।'

इस वाक्य में तुषार के बाद परसर्ग 'ने' का प्रयोग हुआ है। इसीलिए तुषार कर्ता कारक है प्रायः परसर्ग 'ने' का प्रयोग भूतकाल में ही होता है। किंतु 'मोहन बरतन बनाता है।' अथवा 'रेवा पत्र लिखेगी।' इन दोनों ही वाक्यों में परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ है। अतः यहाँ परसर्ग 'शून्य' है। परंतु इनमें "मोहन' तथा 'रेवा' कर्ता कारक है।

(ख) कर्म कारक–परसर्ग "को'

वाक्य के जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

माँ गीतिका को बुलाती है। – वाक्य में 'गीतिका' कर्म कारक है, क्योंकि बुलाने की क्रिया का फल "गीतिका'' पर पड रहा है।

जैसे–'तुषार ने पत्र लिखा।' वाक्य में 'को' परसर्ग का अभाव है, परंतु क्रिया 'लिखा' का फल पत्र पर पड़ रहा है। अतः 'पत्र' कर्म कारक है।

(ग) करण कारक–परसर्ग 'से', 'के द्वारा'

कर्ता जिस साधन से क्रिया करता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसके लिए परसर्ग 'से' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– 'माधव ने कलम से पत्र लिखा।' इस वाक्य में 'कलम' ही वह साधन है, जिसके द्वारा पत्र लिखा गया। अतः 'कलम' करण कारक है।

(घ) संप्रदान कारक–परसर्ग 'को', 'के लिए'

कर्ता जिसके लिए क्रिया करता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसके लिए "को" तथा "के लिए'' परसर्गों का प्रयोग होता है। '

जैसे– 'माधव ने रीता को पत्र लिखा।' इस वाक्य में माधव ने रीता के लिए पत्र लिखा। अतः 'रीता' संप्रदान कारक है।

(ड.) अपादान कारक–परसर्ग 'से' (अलग होना)

जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से किसी अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम के अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसके लिए परसर्ग 'से' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।' इस वाक्य में पत्ते वृक्ष से अलग हो रहे हैं। अतः वृक्ष अपादान कारक है।

(च) संबंध कारक–परसर्ग 'का', 'की', 'के', 'रा', 'री', 'रे'

एक संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य के दूसरे संज्ञा अथवा सर्वनाम से संबंध बताने वाले शब्दों को संबंध कारक कहते हैं। इसके लिए परसर्ग का, की, के, रा, री, रे का प्रयोग होता है।

जैसे– 'आपका नगर सुंदर है राजन ! इस वाक्य में "नगर' से राजन का संबंध प्रकट हो रहा है। इसलिए यह संबंध कारक है।

(छ) अधिकरण कारक–परसर्ग ″में′, ″पर′

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के समय, स्थान अवसर आदि का पता चलता है, अधिकरण कारक कहलाता है। इसके लिए परसर्ग 'में' अथवा 'पर' का प्रयोग होता है।

जैसे– (क) जल में मगर है।

(ख) परीक्षा मार्च में होनी चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'जल में' से मगर के होने के स्थान का बोध हो रहा है तथा 'मार्च में' से परीक्षा होने के समय का बोध हो रहा है।

(ज) संबोधन कारक–परसर्ग हे', ''ओ', अरे!

जब किसी संज्ञा का ध्यान आकर्षित करने अथवा उसे संबोधित करने का बोध होता है, तो वहाँ संबोधन कारक होता है। इसके लिए 'हे', ″ओ', 'अरे' परसर्गों का प्रयोग होता है।

जैसे– हे राम ! मुझे अपनी शरण में ले लो प्रभु।

ओ माली ! बाग की रखवाली करो।

अरे सैनिको ! इस देश का गौरव तुम हो।

इन वाक्यों में 'हे राम !', ″ओ माली !' तथा ″अरे सैनिको !″ का प्रयोग संबोधित करने के लिए किया जा रहा है। इसलिए ये संबोधनकारक हैं।

कारकों में अंतर

(क) कर्मकारक व संप्रदान कारक में अंतर–दोनों के लिए ही परसर्ग ″को' का प्रयोग किया जाता है, फिर भी दोनों के प्रयोग में अंतर है।

I. कर्म कारक में क्रिया का फल उसी शब्द पर पड़ता हे, जिसके साथ परसर्ग ″को' का किया जाता है। जैसे–'मैंने राजन को पुकारा।' इस वाक्य में क्रिया 'पुकारने'! का फल राजन पर पड़ रहा है।

II. संप्रदानकारक में ″को' का प्रयोग कुछ देने के लिए होता है। जैसे–'मिठाई बच्चों को बाँट दो।' इस वाक्य में मिठाई बच्चों के लिए देने की बात कही जा रही है। अतः संप्रदान कारक है।

(ख) करण कारक व अपादान कारक में अंतर–करण कारक व अपादान कारक दोनों ही परसर्ग 'से' का प्रयोग होता है किंतु करण कारक में 'से' सहायक साधन की सूचना देता, जबकि अपादान कारक में 'से' का प्रयोग अलग होने के लिए होता है। जैसे–'मोहन ने

कुल्हाड़ी से वृक्ष काटा।' इस वाक्य में 'से' का प्रयोग कुल्हाड़ी (साधन) का सूचक है, जबकि 'पेड़ से पत्ते गिरे' वाक्य में 'से' का प्रयोग पेड़ से पत्तों के अलग होने के लिए हुआ है।

स्मरणीय बिंदु

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।
- कारक के चिन्ह 'परसर्ग' अथवा 'विभक्ति' कहलाते हैं।
- कारक के आठ भेद हैं – 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. संप्रदान कारक 5. अपादान कारक 6. संबंध कारक 7. अधिकरण कारक 8. संबोधन कारक।

अभ्यास

1. निम्न अवतरण में विभक्तियाँ (परसर्ग) भरिए–

आनंद .... बुद्ध ....पूछा .... भगवन ! ज्ञान कितना है ? क्या आप .... अतिरिक्त कोई अन्य भी ज्ञान .... परिपूर्ण है ? बुद्ध मुस्कराए और पेड़ .... पत्ते तोड़कर बोले ''................... आनंद ! बताओ, मेरे हाथों .... कितने पत्ते हैं ? क्या में पेड़................... सभी पत्ते अपने हाथों................... ले सकता हूँ ? क्या तुम उन सबको गिन सकते हो ?''

आनंद ने कहा–'नहीं ! भगवन'

बुद्ध .... कहा "ठीक इसी प्रकार ज्ञान है। कोई एक व्यक्ति पूरे ज्ञान .... ग्रहण नहीं कर सकता। प्रत्येक................... उस................... कुछ ही 'अंश प्राप्त होता है।''

2. कोष्ठक में लिखे शब्द के सही रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए–

क) .... ने गाय को रोटी खिलाई। (बच्चा, बच्चे, बच्चों)

ख) हे................... तुम्हारे राज्य में सभी संतुष्ट व सानंद हैं। (राजन, राजाओ, राजों)

ग) बहुत से .... ने बसंत का वर्णन किया है। (कवि, कवियों, कवियो)

घ) चार .... को पुलिस ने पकड़ा। (चोर, चोरी, चोरों)

ड.) वे .... परीक्षा नहीं देंगे। (लड़का, लड़कों, लड़के)

3. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए–

(क) कारक रूप है–

1) संज्ञा तथा सर्वनाम का   2) विशेषण का

3) क्रिया का — 4) किसी का नहीं

(ख) कारक संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध बताते हैं–

1) वाक्य के अन्य शब्दों से — 2) क्रिया से

3) क्रिया व अन्य शब्दों से — 4) संज्ञा अथवा सर्वनाम से

(ग) "परसर्ग" का दूसरा नाम है–

1) विभक्ति — 2) कारक

3) करण कारक — 4) संज्ञा विकार

(घ) हिंदी में कारक हैं–

1) छः — 2) आठ

3) दस — 4) चार

(ड.) 'से' परसर्ग का प्रयोग होता है–

1) करण कारक के साथ — 2) कर्म कारक के साथ

3) अपादान कारक के साथ — 4) करण कारक व अपादान कारक के साथ

(च) अधिकरण कारक का चिहन है–

1) मैं — 2) पर

3) में व पर — 4) हे

4. उपयुक्त विभक्तियाँ भरकर वाक्य पूरे कीजिए –

(क) वह मेरी बात हँसी .... टाल गया । (में, पर से)

(ख) दस बजे .... पाँच मिनट हैं । (को, से, में)

(ग) बच्चे छत .... खेल रहे हैं। (पर, में, से)

(घ) मैं अशोक विहार .... रहता हूँ। (को, पर, में)

5. निम्नलिखित वाक्यों को उपयुक्त कारक–चिन्ह का प्रयोग करके दुबारा लिखिए

(क) महाराणा प्रताप हल्दी घाटी युद्ध अकबर विशाल सेना लोहा लिया।

(ख) त्योहार मानव जीवन और जागृति प्रतीक ही नहीं हैं वरन् जीवन आनंद स्रोत भी हैं।

(ग) प्राचीन काल विद्या केंद्र गुरुकुल नगरों दूर जंगलों होते थे।

(घ) महात्मा गांधी भारत अंग्रेजों स्वाधीन कराने हिंसा रास्ता अपनाया।

(ड) जीवन आगे बढ़ने परिश्रम और आत्मविश्वास सबसे अधिक जरूरत पड़ती है।

अध्याय 9

सर्वनाम

संजीव : पिता जी! आप कार्यालय क्यों नहीं गए ?

पिता जी : आज बुद्ध पूर्णिमा है। इस दिन हम लोग भगवान बुद्ध को याद करते हैं। वे एक महापुरुष थे।

संजीव : मैने पुस्तक में पढ़ा है कि उन्होंने लोगों को सच्चा मार्ग बताया था।

पिता जी : तुमने ठीक पढ़ा है बेटा, उन्होंने लोगों को सच बोलने और अच्छा काम करने की शिक्षा दी थी।

ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्द 'आप', 'हम लोग', 'वे', 'मैने', 'उन्होंने', 'तुमने' शब्द किसी-न-किसी संज्ञा शब्द के बदले आए हैं। ये शब्द सर्वनाम हैं। सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों के बार-बार प्रयोग को रोककर भाषा को प्रभावी बना देते हैं। संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम के छः भेद होते हैं–

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** (Personal Pronoun)
2. **निजवाचक सर्वनाम** (Reflexive Pronoun)
3. **निश्चयवाचक सर्वनाम** (Demonstrative Pronoun)
4. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** (Indefinite Pronoun)
5. **संबंधवाचक सर्वनाम** (Relative Pronoun)
6. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** (Interrogative Pronoun)

1. पुरुषवाचक सर्वनाम– जिन शब्दों से बोलने वाले, सुनने वाले तथा जिनके विषय में कहा जाए, उनका बोध होता है, उन्हें **पुरुषवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे–

मैं आज दफ़्तर नहीं जाऊँगा।

तुम कहाँ जा रहे हो ?

वे गाना गा रहे हैं।

मेरा नाम अमित है।

आप मुंबई कब जाएँगे ?

हमारा शहर यहाँ से दूर है।

उपर्युक्त वाक्यों में मैं, तुम, वे, मेरा, आप और हमारा शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

क. **उत्तम पुरुष** (First Person)

ख. **मध्यम पुरुष** (Second Person)

ग. **अन्य पुरुष** (Third Person)

क. उत्तम पुरुष– बोलने वाला अपने लिए जिन शब्दों का व्यवहार करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे– मैं मेरा, मुझे, हम, हमारा, हमें आदि।

मेरा नाम रमेश है।

मैं बहादुर और तेज़ लड़का हूँ।

मेरे लिए खाना बना दो।

ख. **मध्यम पुरुष**– सुनने वाले के लिए जिन शब्दों का व्यवहार किया जाता है, उसे **मध्यम पुरुष** कहते हैं। जैसे– तुम, तुम्हारा, तू, आप, तुमको आदि।

तुम्हारा नाम क्या है ?

आपके लिए पानी लाऊँ ?

तुम्हें क्या चाहिए ?

ग. **अन्य पुरुष**– जिसके बारे में बात की जाए, उनके लिए प्रयुक्त शब्दों को **अन्य पुरुष** कहा जाता है। जैसे– वह, यह, उसे, वे आदि।

वह साहसी लड़का नहीं है।

यह उसका घर है।

उसे विद्यालय जाने दो।

2. **निजवाचक सर्वनाम**– जिन सर्वनाम शब्दों से स्वयं का बोध हो, उन्हें **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे–

राकेश इसके लिए खुद ही ज़िम्मेदार है।

अपना काम स्वयं करो।

वह अपने आप से दु:खी है।

ऊपर के वाक्यों में खुद ही, स्वयं तथा अपने आप निजवाचक सर्वनाम हैं।

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम**– जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं। इसे **संकेतवाचक सर्वनाम** भी कहते हैं। जैसे– वह, यह, उसे आदि।

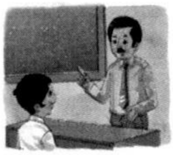

वह गुणवान व्यक्ति है।

यह काम ठीक नहीं है।

उसे छोड़ दो।

ऊपर के वाक्यों में वह, यह और उसे का प्रयोग किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए किया गया है, अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**– जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का पता न चले, उन्हें **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे– कोई, कुछ आदि।

आँगन में कुछ गिरा।

घर में कोई आया है।

ऊपर के वाक्यों में कुछ और कोई से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता है। अतः ये अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

5. **संबंधवाचक सर्वनाम**– वे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम से संबंध प्रकट करते हैं, उन्हें **संबंधवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे– यहाँ-वहाँ, जैसा-वैसा, जो-सो आदि।

जहाँ चाह वहाँ राह।

जैसा बोएगा वैसा काटेगा।

जो सोचा था सो हुआ।

ऊपर के वाक्यों में जहाँ-वहाँ, जैसा-वैसा, जो-सो संबंधवाचक सर्वनाम हैं क्योंकि ये संबंध प्रकट कर रहे हैं।

6. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**– जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न का बोध होता है, उसे **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं। जैसे– क्या, कहाँ तथा कौन आदि।

तुम्हारा नाम क्या है ?
तुम कहाँ रहते हो ?
घर में कौन है ?

ऊपर के वाक्यों में क्या, कहाँ तथा कौन शब्दों से प्रश्न होने का पता चलता है। अतः ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना

सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना निम्न प्रकार से है–

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं, मैने	हम
कर्म	मुझे, मुझको	हमें
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
संप्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिए	हमारे लिए, हम लोगों के लिए
अपादान	मुझसे	हमसे, हम लोगों से
संबंध	मेरा	हमारा, हमारी, हमारे
अधिकरण	मुझमें	हममें, हमपर

विशेष– सर्वनाम शब्दों का संबोधन कारक रूप नहीं होता है।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम (तू)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने, तुम लोगों ने
कर्म	तुझे, तुमको	तुम्हें, तुमको, तुम लोगों को
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुम्हारे द्वारा, तुम लोगों से
संप्रदान	तुझे, तेरे लिए	तुम्हारे लिए, तुम लोगों के लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे, तुम लोगों से
संबंध	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
अधिकरण	तुझ में, तुझ पर	तुम में, तुम पर

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम (वह)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
संप्रदान	उसे, उसको, उसके लिए	उन्हें, उनको, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, उसकी, उसके	उनका, उनकी, उनके
अधिकरण	उसमें, उस पर	उनमें, उन पर

निश्चयवाचक सर्वनाम (यह)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने, इन लोगों ने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इन लोगों से, इन लोगों द्वारा
संप्रदान	इसके लिए, इसको	इनके लिए, इन लोगों के लिए
अपादान	इससे	इनसे, इन लोगों से
संबंध	इसका, इसकी, इसके	इनका, इनकी, इनके
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, इन पर

अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी ने	किन्हीं ने
कर्म	किसी को, किसी के द्वारा	किन्हीं, को
करण	किसी से, किसी के लिए	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
संबंध	किसी का, की, के	किन्हीं का, की, के
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

संबंधवाचक सर्वनाम (जो)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे, जिसके द्वारा	जिनसे, जिनके द्वारा
संप्रदान	जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
संबंध	जिसका, की, के	जिनका, की, के
अधिकरण	जिसमें, जिसपर	जिनमें, जिनपर

प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कौन, किसने	किन्होंने, किन लोगों ने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको, किन लोगों को

करण	किससे, किसके द्‌वारा	किनसे, किन लोगों से, किन लोगों द्‌वारा
संप्रदान	किसके लिए, किसको	किन्हें, किनके लिए
अपादान	किससे	किनसे
संबंध	किसका, किसकी, किसके	किनका, किनकी, किनके
अधिकरण	किसमें, किस पर	किनमें, किन पर

आओ दोहराएँ

* संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
* सर्वनाम के छ: भेद होते हैं–
  1. पुरुषवाचक
  2. निश्चयवाचक
  3. अनिश्चयवाचक
  4. संबंधवाचक
  5. प्रश्नवाचक
  6. निजवाचक
* पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–
  क. उत्तम पुरुष ख. मध्यम पुरुष ग. अन्य पुरुष।
* पुरुष, वचन तथा कारक के अनुसार सर्वनामों के रूप में अंतर आ जाता है।

अभ्यास –

1. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए–

क. यहाँ कौन आया था ?

ख. मेरी कलम खो गई है।

ग. वह मेरी कोई भी बात नहीं सुनती है।

घ. जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

ङ. आप लोग क्या चाहते हैं ?

च. कुत्ता अपने आप ही चला जाएगा।

छ. उसने अपना काम कर लिया।

ज. माँ के कहने पर वह दौड़कर पानी ले आया।

झ. उसका कहीं कोई पता न चला।

2. **निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्द सर्वनाम हैं। सर्वनाम के भेद सामने खाली स्थान में लिखिए–**

क. लड़कों में से कुछ आज छुट्टी पर हैं। ....

ख. जो पढ़ेगा, सफलता उसे ही मिलेगी। ....

ग. हमें रुपया नहीं, लोगों का सहयोग चाहिए। ....

घ. वह आम का बगीचा है। ....

ङ. यह तो रवि का लड़का मोहन है। ....

च. रमेश अपने आप काम करेगा। ....

छ. इधर कोई अवश्य आया था। ....

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

क. सर्वनाम किसे कहते हैं ?

....

....

ख. सर्वनाम के कितने भेद होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

....

....

ग. पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं ? इसके भेदों के नाम लिखिए।

....

....

घ. निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

....

....

बहुविकल्पीय प्रश्न

दिए गए वाक्यों में रंगीन सर्वनाम शब्द के भेद के सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाइए–

क. तुमने आज कोई काम नहीं किया।

i) पुरुषवाचक ii) संबंधवाचक iii) निजवाचक iv) प्रश्नवाचक

ख. मैं अपना काम स्वयं कर सकता हूँ।

i) निश्चयवाचक ii) अनिश्चयवाचक iii) निजवाचक iv) पुरुषवाचक

ग. जिसने गड्ढा खोदा है, वही इसमें गिरेगा।

i) प्रश्नवाचक ii) संबंधवाचक iii) निजवाचक iv) अनिश्चयवाचक

घ. यह किसकी कलम है ?

i) निश्चयवाचक ii) अनिश्चयवाचक iii) पुरुषवाचक iv) निजवाचक

ङ. इस तरफ़ कौन खड़ा था ?

i) निश्चयवाचक ii) प्रश्नवाचक iii) निजवाचक iv) पुरुषवाचक

च. उधर कोई नहीं आया था।

i) पुरुषवाचक ii) निश्चयवाचक iii) प्रश्नवाचक iv) अनिश्चयवाचक

छ. वे किसी काम से बाज़ार गए हैं।

i) पुरुषवाचक ii) अनिश्चयवाचक iii) प्रश्नवाचक iv) निश्चयवाचक

ज. तुम अपने बारे में खुद सोचो।

i) पुरुषवाचक ii) निजवाचक iii) प्रश्नवाचक iv) संबंधवाचक

झ. पानी में कुछ गिरा है।

i) अनिश्चयवाचक ii) निश्चयवाचक iii) प्रश्नवाचक iv) संबंधवाचक

ञ. जो कहा था सो किया।

i) निश्चयवाचक ii) संबंधवाचक iii) प्रश्नवाचक iv) अनिश्चयवाचक

अध्याय 10

विशेषण

जयपुर एक सुंदर शहर है। इसका इतिहास महत्वपूर्ण है।यह शहर राजस्थान की राजधानी है। पुराने समय में राजस्थान में आमेर नाम का एक राज्य था। आमेर के राजा मानसिंह थे। मानसिंह के पुत्र जयसिंह ने जयपुर की स्थापना की। जयपुर में राजस्थान की गौरवपूर्ण संस्कृति की सुंदर झलक दिखाई देती है। यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जैसे–हवामहल, आमेर का प्रसिद्ध किला, महल, तारामंडल, चिडियाघर आदि। उपर्युक्त वाक्यों में–

सुंदर, महत्वपूर्ण, पुराना, गौरवपूर्ण, दर्शनीय, प्रसिद्ध आदि शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण हैं।

वे शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हें, उन्हें **विशेषण** कहते हें। विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की गुण–दोष, आकार, रूप–रंग, स्वाद, गंध, दशा, श्रुति व काल संबंधी विशेषता बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

गुणवाचक विशेषण निम्न प्रकार की विशेषताएँ बताते हैं–

(क) गुण–दोष–अच्छा, बुरा, मूर्ख, बुद्धिमान, सुशील, सुंदर, विनम्र, दयालु आदि।

(ख) आकार–गोल, चौकोर, छोटा, बड़ा, लंबा, ऊँचा, नाटा आदि।

(ग) रंग–रूप–गोरा, साँवला, काला, सफेद, लाल आदि।

(घ) स्वाद–मीठा, खट्टा, कड़वा, कसैला, फीका, चटपटा, तीखा आदि।

(ड.) गंध–सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण आदि।

(च) दजश–अवस्था–जवान, वृद्ध, रोगी, स्वस्थ, कमजोर, बलिष्ठ आदि।

(छ) स्थान, देश–काल–ग्रामीण, नागरिक, भारतीय, विदेशी, स्वदेशी, नवीन, प्राचीन आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण, वे विशेषण शब्द हैं जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं।

जैसे–पांडवों को तेरह वर्ष वनवास में व्यतीत करने पडे।

अंग्रेजों ने बंगाल को तीन भागों में बाँट दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'तेरह' व 'तीन' संख्यावाचक विशेषण हें।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण, जैसे–एक, दो, तीन.......आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, जैसे – कुछ, कई, बहुत, अधिक आदि।

जैसे–कई वर्ष पहले की बात है। कुछ दिन पहले मेरी उससे मुलाकात हुई।

उपर्युक्त वाक्यों में 'कई' तथा "कुछ'' अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

3, परिमाणवाच्रक विशेषण

विशेषण शब्द जो विशेष्य की नाप–तौल संबंधी विशेषता बताते हैं, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण–पाँच लीटर, दो किलो, चार मीटर आदि सभी परिमाणवाचक विशेषण ही है।

परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण– जो विशेष्य की निश्चित मात्रा बताए जैसे किलो, दो मीटर, दस ग्राम आदि।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण– जो विशेष्य की निश्चित मात्रा नहीं बताए जैसे–थोड़ा, अधिक, कुछ आदि। ।

4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द विशेषण का काम करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे– यह लड़की गा रही है।

वह लड़का कूद रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यह', 'वह" आदि शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

- सर्वनाम शब्द वे शब्द हें जो संज्ञा के स्थान पर आते हैं।
- सार्वनामिक विशेषण वे शब्द हैं जो संज्ञा के साथ आते हैं।

विशेषण के लिंग, वचन

- विशेषणों के अपने लिंग, वचन नहीं होते।
- ये जैसे विशेष्य के साथ प्रयोग किए जाते हैं, वैसे ही लिंग व वचन ग्रहण कर लेते हैं।

प्रविशेषण

वे शब्द जो विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण शब्द कहते हैं।

विशेषण शब्दों की रचना

हिंदी में दो प्रकार के विशेषण होते हैं –

(1) ऐसे शब्द जो मूलतः विशेषण ही हैं। इन्हें किसी अन्य शब्द से बदलकर विशेषण नहीं बनाया गया हे। जैसे–सुंदर, वीर, मूर्ख, चतुर आदि।

(2) वे शब्द जो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि से बनते हैं।

(क) संज्ञा से निर्मित विशेषण :

संज्ञा	**विशेषण**
सीमा	सीमांत
दुख	दुखांत
सुख	सुखांत
सहायता	सहायक
रक्षा	रक्षक
हिंसा	हिंसक

(ख) सर्वनाम से निर्मित विशेषण :

संज्ञा	**विशेषण**	**सर्वगाम**	**विशेषण**	**सर्वनाम**	**विशेषण**
कौन	कैसा	जो	जैसा	मैं	मुझसा
यह	ऐसा	तुम	तुम्हारा	वह	वैसा

(ग) क्रिया से निर्मित विशेषण :

क्रिया	**विशेषण**	**क्रिया**	**विशेषण**	**क्रिया**	**विशेषण**
पढ़ना	पढ़ाकू	अडना	अडियल	मरना	मरियल

लड़ना	लड़ाकू	बेचना	बिकाऊ	दिखना	दिखाऊ
सड़ना	सडियल	टिकना	टिकाऊ	पढ़ना	पठित

स्मरणीय बिंदु

- विशेषण चार प्रकार के होते हैं– 1. गुणवाचक, 2. संख्यावाचक, 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक विशेषण। ।
- गुणवाचक विशेषण संज्ञा अथवा सर्वनाम के आकार, रंग–रूप, स्वाद, गंध, आदि के विषय में बताते हें।
- संख्यावाचक व परिमाणवाचक दोनों ही प्रकार के विशेषणों के दो भेद होते हैं। जैसे– निश्चित संख्यावाचक, अनिश्चित संख्यावाचक व निश्चित परिमाणवाचक, अनिश्चित परिमाणवाचक ।
- सार्वनामिक विशेषण संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम शब्द हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विशेषण, प्रविशेषण तथा विशेष्य की परिभाषा दीजिए।

(ख) सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में क्या अंतर है।

(ग) संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण को स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित करते हुए उनके भेद लिखिए–

(क) उसके पास दो कारें हैं।

(ख) कमरे में कोई है।

(ग) वह एक महान खिलाड़ी है।

(घ) मैं दूसरी किताब पढ़ूँगा।

(ङ) पानी गंदा है।

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से बने विशेषणों से रिक्त स्थान भरें–

(क) उसकी .... आय कम है। (मास)

(ख) वह मेरा .... भाई है। (मामा)

(ग) तुम्हारे पास एक .... कलम है। (कीमत)

(घ) मुझे .... चंदा जमा करना है। (वर्ष)

(ङ) यह दवा .... है। (नशा)

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही कथन के आगे ☑ तथा गलत कथन के आगे ☒ चिन्ह लगाइए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

(ख) विशेषण के मुख्यतः चार भेद होते हैं।

(ग) प्रविशेषण शब्दों को विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेष्य कहा जाता है। ।

(घ) संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की संख्या या क्रम को बताने वाले विशेषण शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्दों का निर्माण कीजिए :–

नीचे	मास ....
नोक	रोग ....
क्रोध	स्थान ....
पंजाब	ढोंग ....
बाहर	बनना ....

6. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए –

(क) विशेषण वे शब्द हैं, जो –

1) संज्ञा की विशेषता बताते हें। 2) सर्वनाम की विशेषता बताते हें।

3) दोनों की विशेषता बताते हैं। 4) विशेषता नहीं बताते हैं।

(ख) गुणवाचक विशेषण ज्ञान कराते हैं–

1) गुणों का 2) स्वाद का

3) रंग व गंध का 3) उक्त सभी का

(ग) संख्यावाचक विशेषण बोध कराते हैं, विशेष्य की–

1) संख्या का 2) स्थिति का

3) गुण का 4) मात्रा का

(घ) परिमाणवाचक विशेषण के भेद हैं–

1) दो
2) तीन
3) चार
4) छः

(ड) विशेषणों के अपने –

1) लिंग व वचन होते हैं
2) लिंग व वचन नहीं होते हैं
3) लिंग नहीं होते हैं
4) कभी–कभी लिंग व वचन नहीं होते

अध्याय 11

क्रिया

यह रेलवे स्टेशन है।

लोग इधर–उधर टहल रहे हैं।

विक्रेता अपना सामान बेच रहे हें।

गाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ चुकी है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'है', 'टहल रहे हैं', 'बेच रहे हैं', 'आ चुकी है' आदि शब्द कार्य के होने अथवा किए जाने का बोध करा रहे हैं। ये क्रिया हैं।

वे शब्द जो कार्य के होने अथवा करने का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।

धातु :

क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। जैसे–लिख, चल, आदि।

क्रिया के भेद – क्रिया के भेद दो आधारों पर किया जाता है

1. कर्म के आधार पर
2. संरचना के आधार पर

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–

(क) अकर्मक क्रिया

(ख) सकर्मक क्रिया

(क) अकर्मक क्रिया :

जब क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर ही पड़ता है, तो क्रिया अकर्मक होती है।

जैसे–सत्यम हँस रहा है। मनीषा सो रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ रहा है।

विशेष–अकर्मक क्रिया उन वाक्यों में पाई जाती है, जिनमें कर्म नहीं होता। ।

(ख) सकर्मक क्रिया :

निर्मल पत्र लिख रहा है। रुचि साइकिल चला रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में "पत्र" व "साइकिल'' कर्म हैं तथा क्रिया का फल भी इन्हीं (पत्र, साइकिल) पर पड़ रहा है। इसलिए ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

जब क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, तो क्रिया सकर्मक होती है। सकर्मक क्रिया कर्म की अपेक्षा रखती है।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं–

(क) एककर्मक क्रिया

(ख) द्विकर्मक क्रिया

(क) एककर्मक क्रिया :

ऐसी क्रिया जिसके साथ केवल एक कर्म होता है, एककर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे–शिवम बाजा बजाता है। (इस वाक्य में क्रिया "बजाता है" एककर्मक है क्योंकि एक ही कर्म "बाजा" का प्रयोग हुआ है।)

(ख) द्विकर्मक क्रिया :

ऐसी क्रिया जिसके साथ दो कर्मों का प्रयोग हुआ हो, द्विकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे–राकेश ने मुझे पत्र लिखा। (इस वाक्य में क्रिया 'लिखा' द्विकर्मक है क्योंकि दो कर्मों 'मुझे' व 'पत्र' का प्रयोग हुआ है।)

- एककर्मक अथवा द्विकर्मक होने से क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

(ख) संरचना के आधार पर क्रिया के भेद ।

संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं–

1. सामान्य क्रिया
2. संयुक्त क्रिया
3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. पूर्वकालिक क्रिया
5. नामधातु क्रिया

1. सामान्य क्रिया– जब क्रिया का प्रयोग उसके रूढ़ अर्थ में किया जाए, तो उसे सामान्य क्रिया कहा जाता है, जैसे– वहाँ जाओ। उसने पुस्तक खरीदी।

2. संयुक्त क्रिया– जब किसी वाक्य में दो या दो से अधिक क्रियाओं से बना क्रियापद प्रयुक्त हो, तो उसे संयुक्त क्रिया कहा जाता है, जैसे–

(क) उसे देखकर मैं हँसने लगा।

(ख) वह तस्वीर को देर तक निहारता रहा।

(ग) वह सदा पुस्तकें पढ़ता रहता था।

3. प्रेरणार्थक क्रिया— जब किसी क्रिया के माध्यम से कोई कर्ता स्वयं कार्य नहीं करता, बल्कि किसी अन्य व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है, जैसे —

(क) उसने मुझसे सामान मँगवाया।

(ख) मैंने धोबी से कपड़े धुलवाए।

(ग) वह अपना मकान बनवाएगा।

4. पूर्वकालिक क्रिया— जब वाक्य में कोई क्रिया मुख्य क्रिया से पहले संपन्न होती है, तो पहले संपन्न होने वाली वह क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिए क्रिया के धातु रूप में 'कर' जोड् दिया जाता है, जैसे—

(क) वह नहाकर स्कूल गया।

(ख) उसने पत्र फाडकर फेंक दिया।

(ग) मैं खाना खाकर सो जाऊँगा।

5. नामधातु क्रिया— वे क्रियाएँ, जिनकी रचना संज्ञा, सर्वगाम और विशेषण शब्दों से होती है उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहा जाता है, जैसे—बात—बतियाना, हाथ—हथियाना, धक्का—धकियाना, अपना—अपनाना, गरम—गरमाना आदि। ।

उदाहरणार्थ—

(क) वे रोज फोन पर बतियाती हैं। ˎ

(ख) उसने उसकी सारी संपत्ति हथिया ली।

(ग) बच्चा मेरे सामने शर्माता रहा। '

आइए एक अन्य महत्वपूर्ण क्रिया के विषय में चर्चा करें जिसे सहायक क्रिया कहा जाता है—

सहायक क्रिया— वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ आने वाली वह क्रिया जो मुख्य क्रिया की सहायता करती है सहायक क्रिया कहलाती है, जैसे —

(क) वह रोज टेलीविजन देखता है।

देखता— मुख्य क्रिया

है— सहायक क्रिया

(ख) सुधा खाना खा चुकी थी।

खा चुकी— मुख्य क्रिया

थी– सहायक क्रिया

इसी प्रकार की अन्य सहायक क्रियाएँ हैं–

हैं, हूँ, था, थे, होगा, होंगे

ध्यान रखें कि जब इन क्रियाओं से पहले कोई मुख्य क्रिया नहीं आती, तो ये सहायक क्रियाएँ ही मुख्य क्रियाएँ बन जाती हैं, जैसे –

(क) वे दोनों गहरे मित्र हैं।

(ख) वह एक न्यायप्रिय राजा था।

स्मरणीय तथ्य

- वे विकारी शब्द जो किसी कार्य के करने, होने या किसी वस्तु की स्थिति या अवस्था का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहा जाता है।
- क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हें।
- कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

  (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया
- संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं।

  1. सामान्य क्रिया 2. संयुक्त क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया

  4. पूर्वकालिक क्रिया 5. नामधातु क्रिया
- किसी वाक्य में मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं।

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर दीजिए –

(क) क्रिया किसे कहते है? संरचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है? प्रत्येक के दो–दो उदाहरण भी दीजिए।

(ग) अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं की पहचान कैसे की जा सकती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिए :–

(क) वाक्य में क्रिया को करने वाला, उस क्रिया का .... कहलाता है।

(ख) 'धातू' क्रिया का ....रूप है।

3. निम्नलिखित में सही वाक्यों के सामने ☑ का चिन्ह तथा गलत वाक्यों सामने ☒ का चिन्ह लगाइए।

(क) जो क्रिया मुख्य क्रिया की सहायता करती है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं।

(ख) वाक्य में रूढ अर्थ में प्रयुक्त होने वाली क्रिया को सामान्य क्रिया कहते हैं।

(ग) क्रिया का मूल रूप संयुक्त क्रिया कहलाता है।

(घ) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

(ङ:) संरचना के आधार पर भी क्रिया के दो भेद होते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को रेखांकित करके कोष्ठक में लिखकर बताइए कि वह अकर्मक है या सकर्मक है–

(क) मोहन दौड़ रहा है। (   )

(ख) वह खेल रहा है। (   )

(ग) सारिका सो चुकी है। (   )

(घ) मोहन फल खा रहा है। (   )

(ड) वह गा रही है। (   )

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए–

(क) कार्य के होने अथवा करने का बोध कराते हैं–

(1) कारक शब्द (2) क्रिया शब्द

(3) सर्वनाम शब्द (4) विशेषण शब्द

(ख) क्रिया का मूल रूप कहलाता है–

(1) क्रिया (2) धातु

(3) कर्म (4) काल

(ग) सकर्मक क्रिया के भेद हैं–

(1) एककर्मक व दूविकर्मक क्रिया (2) एककर्मक व अकर्मक क्रिया

(3) अकर्मक क्रिया व द्विकर्मक क्रिया (4) कोई भेद नहीं

(घ) 'रवि मैच देखकर सो गया।' क्रिया का कौन सा प्रकार है –

(1) सामान्य क्रिया (2) नामधातु क्रिया

(3) पूर्वकालिक क्रिया (4) प्रेरणार्थक क्रिया

(ङ) घनश्याम, दिनेश से काम करवाता है । कौन सी क्रिया है

(1) सामान्य क्रिया (2) नामधातु क्रिया

(3) पूर्वकालिक क्रिया (4) प्रेरणार्थक क्रिया

अध्याय 12

काल

निम्नलिखित वाक्यों को देखें–

(क) राधिका खाना खा रही है।

(ख) उसने एक पत्र लिखा।

(ग) वह कल दिल्ली जाएगा।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाओं से उनके वर्तमान में होने, भूतकाल में घटित होने अथवा भविष्य में घटित होने का पता चल रहा है। क्रियाओं के जिस रूप से हमें समय का पता चलता है, उसे काल कहा जाता है।

परिभाषा के रूप में हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता हो, उसे काल कहा जाता है।

उदाहरणार्थ–

(क) वह लंदन गया।	भूतकाल
(ख) वे एकसाथ खेलते थे।	भूतकाल
(ग) राकेश एक कविता लिख रहा है।	वर्तमान काल
(घ) वह देर से उठता है।	वर्तमान काल
(ङ:) अब्दुल अजमेर जाएगा।	भविष्य काल
(च) वह मुझे पुस्तकें देगा।	भविष्य काल

काल के भेद :

हिंदी में काल के तीन भेद हैं–

(क) भूतकाल (बीता हुआ समय)

(ख) वर्तमान काल (जो समय चल रहा है।)

(ग) भविष्य काल (जो समय आएगा।)

काल भेद के उदाहरण

- ✓ मैं पुस्तक लिख रही हूँ। (वर्तमान काल)
- ✓ तुम अपना कार्य करते हो। (वर्तमान काल)
- ✓ शुभ्रा ने पत्र लिखा। (भूतकाल)
- ✓ शिवम विद्यालय गया। (भूतकाल)
- ✓ आप धामपुर जाओगे। (भविष्य काल)
- ✓ हम पाठ पढ़ेंगे। (भविष्य काल)

(क) भूतकाल :

क्रिया का वह रूप जिससे उसके बीते समय में करने या होने का पता चले, उसे भूतकाल कहा जाता है, जैसे–

1. मैंने एक गीत **गाया।**
2. वह स्कूल नहीं **जाता था।**
3. मैंने एक पत्र **लिखा।**
4. वह सो रहा **था।**

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाओं से हमें पता चल रहा है कि वे भूतकाल में हो रही हैं। भूतकाल में होने वाली ये क्रियाएँ कुछ समय पहले भी हो सकती हैं तो कई वर्षों पहले भी। भूतकाल में समय के इस अंतर के कारण भूतकाल के छह भेद माने जाते हैं, जोकि इस प्रकार हैं–

1. सामान्य भूत
2. आसन भूत
3. अपूर्ण भूत
4. पूर्ण भूत
5. संदिग्ध भूत
6. हेतु हेतुमद् भूत

1. सामान्य भूत– भूतकाल की जिस क्रिया से उसके सामान्य रूप में होने का बोध होता हो, उसे सामान्य भूत कहा जाता है, जैसे –

(क) हमने उसे पढाया।

(ख) वह पढा।

(ग) उसने एक फिल्म देखी।

(घ) उसने एक अच्छा गीत गाया।

2. **आसन्न भूत**– आसन्न का अर्थ होता है–निकट। भूतकाल की जिस क्रिया से यह पता चले कि वह भूतकाल में किसी समय शुरू होकर अभी हाल ही में (कुछ देर पहले) समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूत कहते हैं, जैसे

(क) वह खाना खा चुका है।

(ख) उसने मैच देख लिया है।

(ग) वह अपनी परीक्षा पास कर चुका है।

(घ) पिताजी अभी–अभी दफ्तर गए हैं।

3. **अपूर्ण भूत**– भूतकाल की वह क्रिया, जिससे यह पता चले कि वह बीते हुए समय में शुरू हुई थी, लेकिन यह ज्ञात न हो कि वह अब भी हो रही है या नहीं, उसे अपूर्ण भूत कहा जाता है, जैसे–

(क) वह पढ़ रहा था।

(ख) हम उसे बता रहे थे।

(ग) वे कंप्यूटर सीख रहे थे।

(घ) पिताजी नहा रहे थे।

4. **पूर्ण भूत**– भूतकाल की क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता हो कि कोई कार्य बीते समय में पूर्ण हो चुका है, उसे पूर्ण भूत कहा जाता है, जैसे –

(क) उसने मुझे एक पुस्तक दी थी।

(ख) रवि ने मेहनत की थी।

(ग) वह जीत गया था।

(घ) वह सो गया था। ।

5. **संदिग्ध भूत**– भूतकाल की क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में समाप्त होने के संबंध में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं, जैसे –

(क) वह सो चुका होगा।

(ख) राजीव नहा चुका होगा।

(ग) वे जयपुर चले गए होंगे।

(घ) उसने खाना बना लिया होगा।

6. हेतु हेतुमद् भूतकाल– भूतकाल की क्रिया के जिस रूप से उसके होने पर दूसरी क्रिया का होना निर्भर करे, उसे हेतु हेतुमद भूत कहते हैं, जैसे –

(क) यदि तुम जल्दी आते, तो डाँट न खाते।

(ख) यदि वह साथ चलता, तो हमें खुशी होती।

(ग) यदि वर्षा समय से होती, तो फसल न सूखती।

(ख) वर्तमान काल

क्रिया का वह रूप जिससे उसके वर्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं, जैसे–

(1) कमल <u>दौड़ता है</u>, (2) वह <u>खेल रहा है</u>, (3) वे <u>सो रहे होंगे</u>।

उपरोक्त वाक्यों में क्रियाओं के समय में अंतर है। इस आधार पर वर्तमान काल के तीन भेद किए जाते हैं–

1. सामान्य वर्तमान,
2. अपूर्ण वर्तमान,
3. संदिग्ध वर्तमान ।

1. सामान्य वर्तमान– वर्तमान काल की जिस क्रिया से हमें उसके सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं, जैसे –

(क) वह धीरे चलता है।

(ख) मोहन देर से आता है।

(ग) वह सभी से लड़ता है।

(घ) मनोज क्रिकेट खेलता है।

2. अपूर्ण वर्तमान– वर्तमान काल की जिस क्रिया से–उसके वर्तमान समय में आरंभ होने का बोध हो, लेकिन उसके खत्म होने का पता न चले, उसे अपूर्ण वर्तमान कहा जाता है, जैसे –

(क) वह गा रहा है।

(ख) मम्मी खाना बना रही है।

(ग) वह पढ़ रहा है।

(घ) वे खाना खा रहे है।

3. संदिग्ध वर्तमान– वर्तमान काल की वह क्रिया, जिसके वर्तमान समय में होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान कहा जाता है, जैसे –

(क) वह दौड़ रही होगी।

(ख) हम जा रहे होंगे।

(ग) राजेश वहाँ जाता होगा।

(घ) राम रात को पढ़ता होगा।

(ग) भविष्य काल :

क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में पूरा होने का बोध हो, उसे भविष्य काल कहा जाता है जैसे –

(1) वह कल खेलेगा। (2) वह शायद तुमसे मिले।

उपरोक्त वाक्यों में क्रिया की पूर्णता के समय में अंतर है। इस आधार पर इस काल के भी तीन भेद होते हैं–

1. सामान्य भविष्य काल
2. संभाव्य भविष्य काल
3. हेतु हेतुमद् भविष्य काल

1. सामान्य भविष्य काल– भविष्य काल की जिस क्रिया से आने वाले समय में उसके सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य भविष्य कहते हें, जैसे–

(क) वह कल आएगा।

(ख) हम एक होटल में जाएंगे।

(ग) सचिन कल अच्छा खेलेगा।

2. संभाव्य भविष्य काल– भविष्य काल की जिस क्रिया से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चलता हो, उसे संभाव्य भविष्य काल कहते हैं, जैसे –

(क) शायद आज वर्षा हो।

(ख) शायद कल वह अच्छा खेले।

(ग) संभव है कि वह तुमसे कल मिले।

(घ) ऐसी संभावना है कि वह आने से इंकार कर दे।

3. हेतु हेतुमद् भूत भविष्य काल– भविष्य काल की जिस क्रिया से यह पता चले कि वह किसी दूसरी क्रिया के पूरा होने की स्थिति में ही सम्पन्न होगी, उसे हेतु हेतुमद् भूत भविष्य काल कहते हैं, जैसे–

(क) यदि मन लगाकर पढ़ोगे, तो सफल हो जाओगे।

(ख) अगर उसने दवा ली, तो वह ठीक हो जाएगा।

(ग) यदि जल्दी सो जाओगे, तो जल्दी उठ सकोगे।

स्मरणीय तथ्य

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।

2. मुख्य रूप से काल तीन प्रकार के होते हैं 1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल, 3. भविष्य काल।

3. प्रत्येक काल की क्रियाओं के समय में अंतर पाया जाता है। इस आधार पर तीनों कालों के अलग–अलग उपभेद भी होते हैं।

4. किसी काल में जब एक क्रिया का होना या न होना दूसरी क्रिया के होने या न होने पर निर्भर करे, तो उसे "हेतुहेतुमद्" काल कहा जाता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) काल किसे कहते हैं? तीनों मुख्य कालों के नाम एक–एक उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) भविष्य काल के भेदों के नाम एक–एक उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) वर्तमान और भूतकाल के भेदों के नाम एक–एक उंदाहरण सहित दीजिए।

2. निम्नलिखित में सही कथन के सम्मुख ☑ तथा गलत कथनों के सम्मुख ☒ का चिन्ह लगाइए :–

क) "हम पढ़ते हैं'' मं क्रिया सामान्य वर्तमान की है ।

ख) वर्तमान काल का एक भेद 'अपूर्ण वर्तमान' भी होता है।

ग) काल मुख्य रूप से पाँच प्रकार के होते हैं।

घ) भूतकाल का एक भेद 'आसन्न भूत' भी होता है।

ङ:) भविष्य काल के पाँच भेद होते हैं।

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को रेखांकित करके उनके कालों के नाम कोष्ठक में दीजिए :

क) जैसा बोओगे, वैसा काटोगे। (   )

ख) वह बहुत तेज दौड़ता है। (   )

ग) कल उसने एक कार खरीदी थी। (   )

घ) उसने अभी–अभी खाना खाया है। (   )

ङः) शायद बस देर से आए। (   )

च) हम कल शिमला जाएंगे। (   )

4. कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार रिक्त स्थानों को भरिए :–

(क) वह कल वहाँ ....।	(जाना) सामान्य भविष्य,
(ख) राधा बहुत अच्छा .... ।	(नाचना) सामान्य वर्तमान,
(ग) उसने कल एक कमीज .... ।	(खरीदना) सामान्य भूत,
(घ) आशा टेलीविजन .... ।	(देखना) अपूर्ण वर्तमान,
(ड) वह मुझसे .... ।	(मिलना) पूर्ण भूत,
(च) महिलाएँ सामान .... ।	(खरीदना) अपूर्ण भूत ।

अध्याय 13

अविकारी शब्द

महिमा प्रतिदिन घूमने जाती है। वह है प्रातः ही उठ जाती है। महिमा के साथ उसके पति भी जाते हैं। अरे! मात्र दो महीने में वह स्वस्थ हो गई ! स्वस्थ हुई और उसकी दवाई भी छूट गई।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द संज्ञा सर्वगाम, विशेषण और क्रिया की तरह विकारी नहीं हैं। इनमें किसी भी स्थिति में परिवर्तन नहीं होता।

अभी तक हमने विकारी शब्द पढे थे– संज्ञा, सर्वगाम, विशेषण और क्रिया। ये शब्द लिंग, वचन और कारक के बदलने से परिवर्तित हो जाते हैं। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो लिंग, वचन और कारक से प्रभावित नहीं होते, ऐसे शब्द ही अविकारी शब्द होते हैं, जिन्हें हम अव्यय भी कहते हैं।

ये शब्द हैं क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक।

(क) क्रियाविशेषण

देखो, अभी चारों तरफ बहार है। उधर बच्चे खेल रहे हैं। आकाश प्रतिदिन विद्यालय जाता है। वह बहुत खेलता है। वह अपने माता–पिता के साथ सुखपूर्वक रहता है। गद्यांश में रंगीन शब्द क्रिया शब्दों से पहले प्रयुक्त होकर क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को **क्रियाविशेषण** कहते हैं।

क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

आइए, ऊपर दिए गए अनुच्छेद के रेखांकित शब्दों पर बारीकी से विचार कीजिए–

1. देखो, अभी चारों तरफ बहार है।

यहाँ 'अभी' शब्द से समय का ज्ञान हो रहा है अर्थात हमें समय का बोध हो रहा है।

2. उधर बच्चे खेल रहे हैं।

यहाँ 'उधर' शब्द से स्थान का बोध हो रहा है अर्थात हमें ज्ञात हो रहा है कि खेलने की क्रिया कहाँ हो रही है।

3. आकाश प्रतिदिन विद्यालय जाता है।

यहाँ 'प्रतिदिन' शब्द से भी समय का बोध हो रहा है आकाश विद्यालय कब जाता है।

4. वह बहुत खेलता है।

यहाँ 'बहुत' शब्द से क्रिया के परिमाण का पता चल रहा है।

5. वह अपने माता–पिता के साथ सुखपूर्वक रहता है।

यहाँ 'सुखपूर्वक' शब्द 'रहना' क्रिया का ढंग बता रहा है कि वह कैसे रहता है?

उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि क्रिया कब, कहाँ, कैसे और कितनी मात्रा में हो रही है।

इस आधार पर क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं–

1. कालवाचक
2. स्थानवाचक
2. परिमाणवाचक
4. आज्ञावाचक

1. कालवाचक क्रियाविशेषण

1. रोहिणी ने भी आज मुरलीवाले का यह स्वर सुना।
2. हम अभी लौट थोड़े ही जाएँगे।
3. मुरलीवाला देर तक उन बच्चों को मुरलियाँ बेचता रहा।
4. सरदी के दिन थे।
5. प्रतिदिन उसका वह मादक–मृदुल स्वर सुनाई देता। जब

ऊपर दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रिया के होने के काल (समय) का बोध करवा रहे हैं अर्थात ये शब्द क्रिया की काल संबंधी विशेषता के द्योतक हैं। अतरू इन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हें। आज, कल, परसों, कब, जब, तब, सदा, प्रतिदिन, लगातार आदि कालवाचक क्रियाविशेषण शब्द हैं।

2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

1. आँगन की मिट्टी बाहर से ले आओ।
2. दाएँ–बाएँ देखकर चलना।

ऊपर लिखे वाक्यों के रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखने पर आपको स्पष्ट हो जाएगा कि ये शब्द क्रिया के होने के स्थान का बोध कराते हैं। ऐसे शब्द जो क्रिया के स्थान संबंधी विशेषता बताएँ, वे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हें। यहाँ, वहाँ, कहाँ, बाहर, भीतर, अंदर, नीचे, ऊपर, दूर, पास, दाएँ–बाएँ आदि शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

1. <u>**इतना**</u> दूध काफी है।

2. वैसे मैं भी <u>**थोड़ा–सा**</u> गा लेता हूँ।

3. उनको कला से <u>**बहुत**</u> प्रेम है।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण नाम से ही स्पष्ट होता है कि वे क्रियाविशेषण जो क्रिया की माप–तौल संबंधी विशेषता बताएँ। ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द यही कार्य कर रहे हैं। अतरू ये परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। थोड़ा, अल्प, पर्याप्त, काफी, जितना, कितना आदि भी परिमाणवाचक क्रियाविशेषण शब्द हैं।

4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

1. धूप का प्रकाश उनमें से <u>छन–छनकर</u> आ रहा था।

तुम <u>बेखटके</u> यहाँ आया करो।

वह <u>भयभीत</u> होकर बोली।

तुम उसके भीतर <u>थिरक–फुदककर</u> मुझे प्रसन्न करना।

वह <u>चौकन्नी</u> थी चारों ओर देखती रही।

वह <u>एकदम</u> उड़ी।

रीति का अर्थ है 'ढंग'। अर्थ के अनुसार रीतिवाचक विशेषण, वे क्रियाविशेषण होते हैं, जो कार्य संपन्न होने की रीति बताते हैं। ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन छपे शब्द यही कार्य कर रहे हें। प्रायः अकसर, निस्संदेह, सहसा, अचानक, शायद आदि भी रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्द हैं।

क्रियाविशेषण एवं विशेषण में अंतर

बच्चो! आप प्रायः क्रियाविशेषण तथा विशेषण शब्दों को ढूँढ़ने में गलती करते हैं। ध्यान रहे, विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं तथा क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं। एक ही शब्द को क्रियाविशेषण और विशेषण दोनों ही रूपों में प्रयोग किया जा सकता है। प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है–

अमीषा पटेल सुंदर है। ऋतिक रोशन सुंदर नाचता है।

पहले वाक्य में 'सुंदर' विशेषण है, क्योंकि वह 'अमीषा पटेल' (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है। दूसरे वाक्य में "सुंदर' क्रियाविशेषण है, क्योंकि वह 'नाचना' (क्रिया) की विशेषता बता रहा है।

स्मरणीय बिन्दु

- क्रिया की विशेषता बताने वाले अविकारी शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।
- क्रिया कब, कहाँ, कैसे और कितनी मात्रा में हो रही है—इस आधार पर क्रियाविशेषण के चार भेद हैं— . कालवाचक क्रियाविशेषण 2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण 3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।
- जो शब्द क्रिया के होने के काल (समय) का बोध करवाते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।
- जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं, वे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
- जो शब्द क्रिया की माप संबंधी विशेषता बताए, वे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण शब्द हैं।
- जो शब्द क्रिया के होने की रीति (ढंग) बताए, वे रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

अभ्यास कार्य

1. प्रश्नों के उत्तर दो –

I. क्रियाविशेषण किसे कहते हैं?

II. क्रियाविशेषण के कितने भेद हैं?

III. अव्यय अथवा अविकारी शब्द किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित रेखांकित क्रियाविशेषण शब्दों के भेद के सही विकल्प छाॅटिए–

(क) <u>बाहर</u> गरमी है।

1. रीतिवाचक 2. परिमाणवाचक 3. स्थानवाचक 4. कालबाचक

(ख) <u>सहसा</u> अँधेरा छा गया।

1. रीतिवाचक 2. कालवाचक 3. परिमाणवाचक 4. स्थानवाचक

(ग) यह खबर सुनकर सुमन बहुत रोई।

1. परिमाणवाचक 2. रीतिवाचक 3. कालवाचक 4. स्थानवाचक

(घ) मैं कल ही चेन्नई चला जाऊँगा।

1. परिमाणवाचक 2. स्थानवाचक 3. कालवाचक 4. रीतिवाचक

(ङः) वह तेजी से दौड़ता हुआ आँखों से ओझल हो गया।

1. स्थानवाचक 2. परिमाणवाचक 3. रीतिवाचक 4. कालवाचक

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए उपयुक्त कालवाचक क्रियाविशेषण शब्दों से कीजिए––

(कभी, कब तक, ऊपर, सदैव)

क) अत्याचारी से यों .... प्राणों की रक्षा की जा सकेगी।

ख) भोग्य .... भोगने के लिए ही उत्पन्न होते हैं।

ग) वह अपनी आदत से .... बाज नहीं आएगा।

घ) वह जी–जान से बकरी के .... टूट पड़ा।

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों को दिए गए उपयुक्त क्रियाविशेषण शब्दों से पूर्ण कीजिए–

(साथ–साथ, आँखों–आँखों में, मुसकराकर, स्वच्छंद)

क) साथियों ने उसे .... समझाने का प्रयत्न किया ।

ख) एक रोज मौका पाकर वह बाड़े से निकल भागी और .... बिचरने लगी।

ग) भेडिया ....बोला, "तुम बहुत सुंदर मालूम होती हो।

घ) आओ तनिक .... पर्वत की सैर करें।

5, निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए क्रियाविशेषण शब्द रेखांकित करके उनके भेद का नाम बताइए–

क) भेडिये की धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया।

ख) समय नियोजन में सारी उतावली न जाने कहाँ काफूर हो जाती है।

ग) उसने मेरी ओर देखा।

घ) लड़का बाहर खेलने गया और लड़की अंदर बैठी पढ़ रही थी।

ड) लड़की पर भाई को झपटते देखकर भी माँ चुपचाप अंदर चली गई।

ख. संबंध बोधक

वह शहर की **तरफ** चला गया।
घर **के सामने** सड़क है।
बिल्ली मेज **के नीचे** है।

ऊपर के चित्रों के नीचे लिखे वाक्यों में के नीचे, के सामने और की तरफ शब्द वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध प्रकट कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को संबंधबोधक कहते हैं।

परिभाषा : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

जैसे– के आगे, के पीछे, बीच में, के बाद, के नीचे, के ऊपर, के सहारे आदि।

संबंधबोधक के भेद :

1. तुलनावाचकक – की अपेक्षा, के आगे, के सामन आदि।
2. स्थानवाचक – के नीचे, के ऊपर, के बीच, के पास आदि।
3. कालवाचक – से पहले, के बाद, के पश्चात आदि।
4. समतावाचक – के समान, की तरह, के बराबर, के तुल्य आदि। :
5. दिशावाचक – की ओर, की तरफ, के पास, के सामने, के आस–पास आदि।
6. साधनवाचक – के द्वारा, के माध्यम, के सहारे, के जरिए आदि।
7. संगवाचक – के साथ, के संग, के सहित, के समेत आदि ।
8. हेतुबाचक – के लिए, के हेतु, के वास्ते, के कारण आदि।
9. विशषवाचक – के विरुद्ध, के खिलाफ, के विपरीत आदि।
10. पृथकवाचक – से अलग, से दूर, से हटकर आदि।

संबंधबोधक शब्दों का प्रयोग हमेशा, के, से, की आदि शब्दों के साथ होता है, अन्यथा ये शब्द विशेषण या क्रिया विशेषण का रूप ले लेते हैं।

स्मरणीय बिन्दु

जो शब्द संज्ञा या सर्वगाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

संबंध बोधक के निम्नलिखित भेद होते हैं – तुलनावाचक, स्थानवाचक, समतावाचक, कालवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक, संगवाचक, हेतुवाचक , विरोधवाचक और पृथकवाचक

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) संबंध बोधक किसे कहते हैं ?

(ख) संबंधबोधक अव्यय कितने प्रकार के होते हैं ?

2. दिए गए विकल्पों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए सही संबंधबोधक छाँटकर लिखिए–

क) श्रीराम .... लक्ष्मण और सीता भी वन गए।

1. के कारण — 2. से आगे
3. के साथ — 4. के बिना

ख) मुझे सात बजे .... विद्यालय पहुँचना होता है।

1. से पहले — 2. के आगे
3. के साथ — 4. के कारण

ग) तुम सभी विद्यार्थियों .... चलो।

1. से आगे — 2. के बिना कक
3. के सहारे — 4. से पहले

घ) महल .... एक गहरी सुरंग है।

1. से आगे — 2. से नीचे
2. के पीछे — 2. के ऊपर

3. निम्नलिखित वाक्यों में संबंधबोधक छांटकर उसके भेद लिखिए –

	संबंधबोधक	भेद
(क) मुझे चाय की अपेक्षा कॉफी पसंद है।	....	....
(ख) नेताजी के घर के बाहर भीड़ खड़ी है।	....	....
(ग) नदी के किनारे एक जामुन का पेड़ था ।	....	....
(घ) सरकार के खिलाफ जनता ने आन्दोलन किया।	....	....
(ड) पर्वत के पीछे एक सुंदर झील है।	....	....

4. निर्देश के अनुसार चार–चार संबंधबोधक लिखिए –

स्थानवाचक	....	....	....	....
साधनवाचक	....	....	....	....
संगवाचक	....	....	....	....
दिशावाचक	....	....	....	....

ग. समुच्चय बोधक

चोर भागा **किंतु** पकड़ा गया।

संदीप **और** प्रदीप सो रहे हैं।

आज रविवार है, **इसलिए** स्कूल बंद है

ऊपर चित्रों के नीचे लिखे वाक्यों में और, किंतु तथा इसलिए शब्द दो शब्दों, दो वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। ऐसे शब्दों को समुच्चयबोधक कहते हैं।

जैसे– और, तथा, किंतु, परंतु, क्योंकि, अतः, इसलिए, लेकिन, अथवा, या, यदि, तो, ताकि, चूँकि आदि।

समुच्चयबोधक के भेद :

समुच्चयबोधक के निम्नलिखित दो भेद होते हैं –

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक :–

जो समुच्चयबोधक दो या दो से अधिक समान पदों , वाक्यांशों या वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।

जैसे – और, अन्यथा, परन्तु, अतः, या, बल्कि, इसलिए, व, एवं, लेकिन आदि।

सचिन और पूजा भाई–बहन हैं। महेश दौड़ा किन्तु बस छूट गई ।

ऊपर के वाक्यों में और तथा किंतु शब्द दो समान पदों एवं वाक्यों को जोड़ते हैं।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक :–

जो समुच्चयबोधक एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को आपस में जोड़ते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं ।

जैसे– यदितो, क्योंकि, ताकि, कि, तथापि, यद्यपि आदि।

उदाहरण –

1. अध्यापक ने कहा कि अपना पाठ पढ़ो ।
2. यदि तुम जाना चाहो, तो जा सकते हो ।
3. यद्यपि भोला गरीब है, तथापि ईमानदार है।

उपरोक्त वाक्यों में कि, यदि, तो यद्यपि और तथापि शब्द, प्रधान उपवाक्य को आश्रित उपवाक्य से जोड़ते हैं।

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) समुच्चयबोधक किसे कहते हैं ?

(ख) समुच्चयबोधक के कितने भेद होते हैं ?

2. उचित समुच्चयबोधक चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए –

(क) वह चाय .... दूध पियेगा ।

(ख) वैभव .... प्रियंका भाई–बहन है।

(ग) भोला गरीब .... ईमानदार है।

(घ) बाहर मत निकलना ....मौसम बहुत खराब है ।

3. निम्नलिखित बाक्यों में समुच्चयबोधक छांटकर उसके भेद बताइए –

	समुच्चय	भेद
(क) माता और पिता बाजार गए हैं।	....	....
(ख) जल्दी चलो, ताकि गाड़ी पकड़ सकें ।	....	....
(ग) यदि बिजली आजाती, तो अच्छा होता ।	....	....
(घ) यदि परिश्रम करोगे तो, फल अवश्य मिलेगा।	....	....
(ड) पिता ने कहा कि सदा सत्य बोलो ।	....	....

4. निम्नलिखित समुच्चयबोधकों को अपने वाकयों में प्रयोग कीजिए –

(क) और

(ख) किंतु

(ग) क्योंकि

(घ) अथवा

घ. विस्मयादिबोधक

विस्मयादिबोधक शब्द का निर्माण 'विस्मय. आदि. बोधक' इन तीन शब्दों के मेल से हुआ है। इनका अर्थ है 'विस्मय आदि भावों का बोध कराने वाले शब्द'। निम्नलिखित चित्रों को ध्यान से देखिए–

बहुत अच्छा! तुमने बहुत मेहनत की है।

हाय! काँच कैसे टूट गया।

वाह! कितना स्वादिष्ट खाना है।

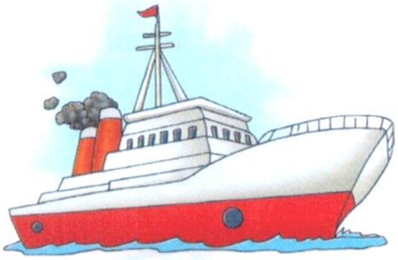

बाप रे बाप! कितना बड़ा जहाज़ है।

लड़के! तुम्हारे पीछे बैल है।

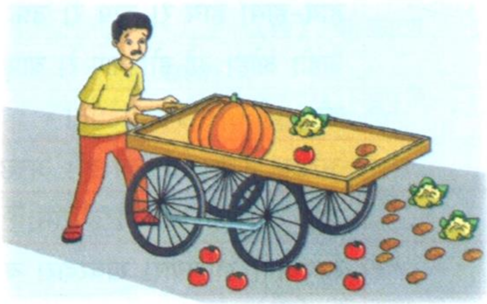

हे भगवान! मेरा सारा सामान गिर गया।

क्या! पिता जी के साथ दादा जी भी आए हैं।

अरे! ये क्या किया। बच्चों ने दाल गिरा दी।

दिए गए चित्रों से संबंधित वाक्य घृणा, हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट कर रहे हैं।

इन शब्दों के विषय में हम कह सकते हैं कि ये शब्द अव्यय (अविकारी) हैं। लिंग, बचन, काल के परिवर्तन का इन पर प्रभाव नहीं पड़ता।

- ये शब्द वाक्य के अन्य शब्दों के साथ कोई संबंध नहीं रखते। ये तो किसी विशेष परिस्थिति में अनायास ही मुँह से निकल जाते हैं।
- ये शब्द प्रायः वाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त किए जाते हैं।
- इन शब्दों के उच्चारण का विशेष महत्व होता है। जिस प्रकार इनका हम उच्चारण करते हैं उसी प्रकार इनका भाव भी बदल जाता है जैसे–
    - क्या! तुम्हें छात्रवृत्ति मिल गई। (प्रशंसासूचक)
    - क्या! तुम प्रथम आए हो? (आश्चर्यसूचक)

विस्मयादिबोधक शब्दों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं –

मन के भाव	विस्मयादिबोधक
1. हर्षसूचक	ओह! वाह! वाह-वाह! क्या खूब! क्या अच्छा!
2. शोकसूचक	हाय-हाय! हाय रे! बाप रे! उफ़! हाय राम! आह!
3. आश्चर्यसूचक	अहो! ओह! ओ हो! बाप रे! बाप रे बाप! क्या! एँ! है! अरे!
4. घृणासूचक	छी:! छी:छी:! धिक्! धत्!
5. स्वीकृतिसूचक	अच्छा! ठीक! हाँ! जी हाँ! अच्छा!
6. संबोधनसूचक	अरे! आ! ओ! हे माँ! हे राम!
7. चेतावनीसूचक	सावधान! होशियार! खबरदार! बचो!
8. प्रशंसासूचक	शाबाश! वाह! बहुत सुंदर!

स्मरणीय बिन्दु

- जो शब्द हर्ष, शोक, प्रसन्नता जैसे भावों को प्रकट करते हैं उन्हें विंस्मयादिबोधक कहते हैं।

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर लिखो –

क. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं?

ख विस्मयादिबोधक अव्ययों की कोई दो विशेषता लिखो ?

ग. दो विस्मयादिबोधक शब्द लिखकर उनके वाक्य बनाइए।

2. निम्नलिखित वाक्यों में सही ☑ या गलत ☒ का चिहन लगाइए–

(क) विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं।

(ख) विस्मयादिबोधक शब्दों पर वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रभाव पड़ता है।

(ग) विस्मयादिबोधक शब्दों का वाक्य में कहीं भी प्रयोग किया जा सकता है।

(घ) विस्मयादिबोधक शब्द मुँह से अनायास ही निकल पढ़ते हैं।

3. उचित विस्मयादिबोधक अव्यय लिखकर वाक्य पूरे करो :

(क) .... ये कैसे हो गया ?

(ख) .... तुमसे यही उम्मीद थी ।

(ग) .... तुम कौन हो ?

(घ) .... आपने मुझे बुलाया ।

(ड.) .... कितनी बदबू है।

4. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प पर सही का चिन्ह लगाइए –

क) जिन शब्दों से हर्ष, घृणा, शोक, स्वीकृति, प्रशंसा आदि का भाव प्रकट होते हैं, वे हैं :

1. क्रियाविशेषण   2. संबंधबोधक
3. विस्मयादिबोधक   4. समुच्चयबोधक

ख) 'हे भगवान! हम पर दया करो।' वाक्य में कौन सा विस्मयादिबोधक अव्यय है ?

1. शोकबोधक   2. हर्षबोधक
3. आशीर्वादबोधक   4. भयबोधक

ग) 'उ़फ! कितनी गरमी है।' वाक्य में कौन सा विस्मयादिबोधक अव्यय है ?

1. तिरस्कारबोधक   2. शोक या पीड़ाबोधक
3. स्वीकृतिबोधक   4. चेतावनीबोधक

घ) 'वाह! आनंद आ गया।' वाक्य में कौन सा विस्मयादिबोधक अव्यय है ?

1. हर्षबोधक   2. संबंधबोधक
3. आशीर्वादबोधक   4. शोक या पीड़ाबोधक

ड़) 'छीः! कितनी गंदगी में रहते हो।' वाक्य में विस्मयादिबोधक अव्यय है ?

1. स्वीकृतिबोधक   2. हर्षबोधक
3. घृणाबोधक   4. संबोधनबोधक

अध्याय 14

विराम चिन्ह

विराम का अर्थ है : रुकना या विश्राम लेना। आपने देखा होगा कि जब आप अपने भावों और विचारों को व्यक्त करते हैं, तब बीच–बीच में थोड़ी देर रुक जाते हैं। बोलते समय इस प्रकार के रुकने की प्रक्रिया को लिखित भाषा में स्पष्ट करने के लिए कुछ चिहनों का प्रयोग किया जाता है। इन संकेत चिहनों को विराम–चिहन कहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि – लिखित भाषा में रुकने की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए जिन संकेत–चिहनों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'विराम–चिन्ह'** कहते हैं।

हिंदी में प्रमुख विराम–चिहन निम्नलिखित हैं –

1. अल्प–विराम	,
2. अर्ध विराम	;
3. पूर्ण विराम	।
4. विस्मयादिबोधक	!
5. प्रश्नवाचक चिन्ह	?
6. कोष्ठक	[{()}]
7. निर्देशक चिन्ह	–
8. उद्धरण चिन्ह	" " ' '
9. आदेश चिहन	:–
10. लाघव चिहन	o
11. योजक चिहन	-

1. अल्प–विराम (,) : किसी एक वाक्य के अंतर्गत पढ़ते समय या बोलते समय थोड़ी देर रुकने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न प्रकार से होता है।

क. एक स्थान पर प्रयुक्त नामों को अलग करने के लिए अल्प विराम का प्रयोग होता। परंतु अंतिम नाम से पहले 'और' का प्रयोग होता है, जैसे– कनिका, नेहा, यतीन और प्रणव खेल रहे हैं।

ख. संख्या के अंकों के पश्चात् 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 आदि। द्य

2. अर्धविराम (;) : वाक्य में जहाँ अल्पविराम से कुछ अधिक देर तक रुकना हो, वहाँ अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

अधिक परिश्रम करो परीक्षा निकट है।

आलस्य मनुष्य का शत्रु है, इससे दूर रहना चाहिए।

नियमादि के बाद उदाहरण सूचक 'जैसे' से पहले, भी अर्ध विराम का प्रयोग होता है।

3. पूर्ण विराम (।) : जहाँ वाक्य पूर्ण होता है, वहाँ पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

मैं प्रतिदिन पढ़ता हूँ।

सदा सत्य बोलो।

4. विस्मयादिबोधक (!) : विस्मय, हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द, शब्दांश या वाक्य के अंत में विस्मयादिबोधक चिहन का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

हे प्रभो! अब हम पर दया करो।

भगवान तुम्हारा भला करे!

5. प्रश्नवाचक (?) : इसका प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में होता है, जैसे–

क्या आप मेरी सहायता करेंगे ?

आप कहाँ जा रहे हैं ?

6. कोष्ठक [{()}] : किसी पद या पदबंध का अर्थ स्पष्ट करने के लिए या किसी वाक्यांश का अर्थ प्रकट करने के लिए या नाटक में कथन के पूर्व पात्र की चेष्टादि का चित्रण करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता हैय जैसे–

निरंतर (लगातार) अध्ययन करने से कठिन विषय भी सरल लगने लगते हैं।

राजा (उदास होकर) : अब क्या होगा?

7. निर्देशक चिहन (–) : इस चिहन का प्रयोग आगे आने वाले विवरण को संकेतित करने, संवादों में, वाक्य के प्रवाह में आगे आने वाली संज्ञा को संकेतित करने के लिए किया जाता है, जैसे–

संज्ञा के तीन भेद हैं –

राम – भरत! तुम अयोध्या लौट आओ।

भरत – भैया, ऐसा न कहो।

हिंदी साहित्य के सूर्य — सूरदास जन्मांध थे।

8. उद्धरण चिहन (" " ' ') : जब किसी दूसरे की उक्ति को बिना किसी परिवर्तन के ज्यों का त्यों रखा जाता है, तब उद्धरण चिहन का प्रयोग किया जाता है, जैसे —

लोकमान्य तिलक ने कहा था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

गीता का वचन है, "कर्म करो, फल की इच्छा मत रखो।"

9. आदेश चिंहन (:—) : किसी विषय को क्रम से लिखना हो तो विषय क्रम व्यक्त करने के पूर्व इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे—

संधि तीन प्रकार की हैं :—

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

10. लाघव चिह्न (०) : किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर लाघव चिहन लगाया जाता है, जैसे—

पंडित : पं०

डॉक्टर : डॉ०

11. योजक चिहन (—) : यह चिहन दो पृथक शब्दों को जोड़ता है। इसका प्रयोग द्वंद्व तथा तत्पुरुष समास में, तुलनात्मक 'सा', 'सी', 'से' पहले, द्वित्व तथा शब्द—युग्म में होता है, जैसे —

सुख—दुख, माता—पिता, वन—गमन, राज—मुकुट। ।

तुम—सा, राम—सा, सीता—सा।

कभी—कभी, घाट—घाट, खेलते—खेलते, उठते—गिरते।

अभ्यास —

1. विराम चिन्ह किसे कहते हैं?

2. नीचे दिए गए चिहनों के सामने उनके नाम लिखिए —

क.	,	....	ख.	( )	....
ग.	!	....	घ.	;	....
ड.	—	....	च.	?	....
छ.	" "	....	ज.	।	....

3. निम्नलिखित वाक्यों में विराम–चिहन लगाइए –

1. हाय वह घायल हो गया
2. रामचरित मानस किसने लिखा है
3. सीता सुशीला सलमा और मेरी माँ बाजार गई हैं
4. राम ने कहा मैं कल दिल्ली जा रहा हूँ.
5. वाह कितना सुंदर मकान है

4. सही उत्तर चुनिए –

क. अधिक रुकना हो तो प्रयोग किया जाता है :	अर्ध विराम
	पूर्ण विराम
ख. हर्ष, विषाद के लिए प्रयोग किया जाता है :	पूर्ण विराम
	विस्मयादिबोधक
ग. किसी वाक्यांश का अर्थ प्रकट करने के लिए आता है :	कोष्ठक
	प्रश्नवाचक
घ. दूसरे की उक्ति ज्यों की त्यों बताने के लिए आता है :	योजक चिहन
	उद्धरण चिहन

5. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(लाघव, अल्पविराम, पूर्ण, उद्धरण चिह्न, प्रश्नसूचक चिन्ह)

(क) वाक्य में सबसे कम समय रुकने के लिए .... का प्रयोग होता है ।

(ख) साधारण वाक्यों के अंत में .... विराम का प्रयोग होता है ।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में .... चिन्ह का प्रयोग होता है ।

(घ) अवतरण चिहन को .... चिन्ह भी कहते हैं ।

(ड) शब्दों को संक्षेप में लिखने के लिए ....चिन्ह का प्रयोग होता है ।

अध्याय 15

उपसर्ग एवं प्रत्यय

उपसर्ग

भाषा में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम शब्द होते हैं। जिस भाषा के पास शब्दों का जितना बड़ा भंडार होता है, वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध मानी जाती है। शब्द–भंडार में वृद्धि शब्द–रचना के माध्यम से होती है। शब्द–रचना का अर्थ है–शब्दों का निर्माण।

आइए अब जानें कि शब्दों का निर्माण कैसे किया जाता है?

शब्द–रचना या शब्द–निर्माण दो प्रकार से किया जाता है।

1. मूल शब्दों या धातुओं में शब्दांश जोड़कर
2. दो अथवा दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़कर

शब्दार्थों को मूल शब्दों या धातुओं के आगे अथवा पीछे लगाया जाता है।

वे शब्दार्थ जिन्हें मूल शब्दों या धातुओं के आगे लगाया जाता है, उपसर्ग कहलाते हैं। इस पाठ के अंतर्गत हम 'उपसर्गों' की ही चर्चा करेंगे।

ध्यान रखें कि उपसर्गों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। उपसर्ग सदैव किसी–न–किसी वाक्य के साथ जुड़कर ही प्रयुक्त होते हैं।

हिंदी भाषा में संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी आदि कई देशी–विदेशी भाषाओं के शब्द प्रचुर मात्रा. में हैं। इसलिए हिंदी में इन सभी भाषाओं के उपसर्ग भी प्रचलित हैं।

हम उपसर्गों को तीन मुख्य वर्गों में बाँट सकते हैं–

(क) संस्कृत के उपसर्ग (ख) हिंदी के उपसर्ग (ग) विदेशी उपसर्ग

1. रीता **प्रतिदिन** स्कूल जाती है। 2. पृथ्वी सूर्य की **परिक्रमा** करती है।

ऊपर चित्रों के नीचे लिखे वाक्यों में 'प्रतिदिन' और 'परिक्रमा' शब्द 'दिन' में 'प्रति' और 'क्रमा' में 'परि' शब्दांशों के योग से बने हैं।

इन नए शब्दों का अर्थ मूल शब्द से अलग है। ऐसे शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं।

परिभाषा : जो शब्दांश किसी मूल शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्गों के भेद –

हिंदी भाषा में चार प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है –

1. संस्कत के उपसर्ग 2. हिंदी के उपसर्ग 3. उर्दू के उपसर्ग

संस्कृत भाषा के उपसर्ग

क्र.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	प्र	आगे, अधिक	प्रयोग, प्रदान, प्रभाव, प्रहार, प्रगति
2,	परा	पीछे, उल्टा	पराजय, पराक्रम, पराधीन, परामर्श
3.	अप	बुरा, हीन	अपमान, अपव्यय, अपहरण, अपशब्द
4.	सम्	समान संयोग,	संहार, सम्मान, संताप, संग्रह
5.	अनु	पीछे, साथ	अनुरूप, अनुकरण, अनुदेश, अनुभव
6.	अव	नीचे, हीन	अवतार, अवगुण, अवनति, अवसान
7.	निश्/निस्/निष्	रहित	निष्पाप, निष्कलंक, निस्संदेह, निश्छल
8,	निर्	बिना	निर्धन, निर्भय, निर्बल, निर्दोष, निर्विघ्न
9.	दुस्/दुिष्	कठिन,	बुरा दुष्कर, दुस्साहस, दुष्कर्म , दुष्चरित्र
10.	दुर्	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्लभ, दुर्गुण, दुर्दिन, दुर्व्यवहार
11.	वि	भिन्नता	विज्ञान, विनाश, विदेश, विनय, विलोम
12.	आ	पर्यत, तक	आजीवन, आमरण, आरक्त, आमुख
13.	नि	निषेध, नीचे	निबंध, निदान, निवास, नियुक्त, निवारण
14,	उप	पास, निकट, छोटा	उपयोग, उपहार, उपकार, उपदेश
15.	अधि	अधिक, ऊपर	अधिकार, अधिपति, अधिनायक, अधिभार
16.	अति	अधिकता	अतिशय, अतिक्रमण, अत्याचार, अत्यधिक
17.	अभि	अधिकता, आगे	अभिमान, अभिराज, अभियोग, अभिनेता
18.	प्रति	एक–एक	प्रतिदिन, प्रतिवर्ष, प्रतिकूल, प्रतिक्षण
19,	परि	चारों ओर	परिवाद, परिचय, परिक्रमा, परिश्रम
20.	सु	अच्छा	सुजन, सुयोग, सुगंध, सुकर्म, सुयश
21.	उत्	श्रेष्ठ	उत्थान, उदयोग, उच्चारण, उत्पन्न
22.	स	सहित	सफल, सदेह, सकाम, सजल

हिन्दी भाषा के उपसर्ग

क्र.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	अभाव, निषेध	अटल, अकाल, अमूल्य, अमर, अज्ञान
2.	अन	अभाव, निषेध	अनमोल, अनचाहा, अनंत, अनादर
3,	अध	आधा अधमरा,	अधपका, अधखिला, अधजला
4,	उन	एक कम	उनतीस, उनन्चास , उनहत्तर, उनसठ
5,	औ	हीन	औगुन, औघट, औचट, औसर
6.	कु	बुरा	कुकर्म, कुमार्ग, कुपुत्र, कुमाता
7.	नि	रहित	निडर, निवेश, निकाय, निगोड़ा
8.	बिन	निषेध	बिन ब्याही , बिनदेखा, बिन जाने
9.	भर	पूरा	भरपेट, भरसक, भरपूर, भरमार
10.	पर	दूसरा	परलोक, परदेश, परहित, परद्रोह
11.	चौ	चार	चौपाया, चौराहा, चौपाई , चौमासा

उर्दू भाषा के उपसर्ग

क्र.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	हे	बिना, रहित	लाजवाब, लाचार, लानत, लावारिश
2,	बद	बुरा	बदनाम, बदचलन, बदनीयत, बदतमीज
3.	ऐन	पूरा ठीक	ऐन वक्त, ऐन मौका
4.	कम	थोड़ा	कमसिन, कमजोर, कमबख्त
5.	ना	नहीं	नासमझ, नालायक, नामर्द, नामुमकिन
6.	खुश	अच्छा	खुशहाल, खुशबू , खुशमिजाज
7.	हम	साथ	हम नाम, हमसफर , हमशक्ल, हमदर्द ।
8,	गैर	नहीं, बिना	गैर मर्द, गैर सरकारी, गैर जिम्मेदार
9,	बे	बिना	बेजार, बेकार, बेवक्त, बेकाबू , बेदम
10.	दर	में	दरअसल, दरम्यान, दरगाह, दरवाजा...
11.	बर	पर	बरकरार, बर्दाश्त
12.	हर	प्रत्येक	हर दिन, हरहाल, हरसाल, हरदम

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) उपसर्गक्या हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) उपसर्ग के कितने भेद होते हैं ?

2. निम्नलिखित उपसर्गों से दो–दो शब्दों की रचना कीजिए –

(क) परा	(च) पर
(ख) वि	(छ) बद
(ग) अनु	(ज) हम
(घ) प्रति	(झ) चिर
(ङ) कु	(ज) सह

3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द अलग–अलग कीजिए –

(क) अपहरण	(च) नालायक
(ख) अनुकरण	(छ) बदनाम
(ग) अभिनेता	(ज) भरपूर
(घ) अनमोल	(झ) स्वराज
(ड) चौराहा	(ज) चिरकाल

4. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाओ –

(क) गुण	(च) शक्ल
(ख) दान	(छ) पुत्र
(ग) भय	(ज) दिन
(घ) वर्ष	(झ) संग
(ङ) पका	(ज) सेवी

5. उचित विकल्प पर सही ☑ का चिहन लगाइए –

(क) 'प्रतिकूल' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है –

प्र　　　　परे　　　　प्रति

(ख) "नासमझ" शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है –

ना　　　　नास　　　　सम्

(ग) "मरा'' शब्द में उचित उपसर्ग है –

अध	अप	आ

(घ) "पसंद'' में उचित उपसर्ग है –

गैर	ना	नि

प्रत्यय

वे शब्दांश, जो शब्द के अंत में जुड़कर नवीन शब्दों का निर्माण करते हैं तथा शब्द के अर्थ में परिवर्तन करते हैं , उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं।

उपसर्ग की भाँति, प्रत्यय भी शब्दांश होते हैं। अंतर केवल इतना है कि उपसर्ग शब्द के प्रारंभ में लगाए जाते हैं और प्रत्यय शब्द के अंत में। ऊपर लिखे गद्यांश में रंगीन लिखे शब्दों पर ध्यान दीजिए। यहाँ 'उत्साह' के पश्चात 'युक्त' तथा 'हीन' शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये दोनों शब्दांश नहीं है, अतः इन्हें प्रत्यय नहीं कह सकते। उपसर्ग की ही भाँति, प्रत्यय भी शब्द के अर्थ को प्रभावित करते हैं।

प्रत्यय का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता, किंतु जिस शब्द के अंत में इनका प्रयोग होता है, उन शब्दों के अर्थ निश्चित रूप से प्रभावित होते हैं।

प्रत्यय के प्रकार

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय मूलतः दो प्रकार के होते हैं–– (1) कृत् प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय।

1. कृत प्रत्यय– क्रिया के मूल रूप के साथ लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण करने वाले कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय के योग से बने शब्दों को 'कृदंत' कहते हैं।

(क) संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय–

प्रत्यय	धातू	शब्द
अक	लिख, पठ, धाव	लेखक, पाठक, धावक
अन	दा, गम, सह, वच	दान, गमन, सहन, वचन
अना	रच, सूच	रचना, सूचना, सहना, कहना
अंत	भिड़, गढ़	भिड़ंत, गढंत
आ	पूज, चित	पूजा, चिंता

आई	लिख, पढ़, चढ़	लिखाई, पढ़ाई, चढ़ाई
आक	तैर, चाल	तैराक, चालाक
आन	उड़, लग	उड़ान, लगान
आव	बह, कट	बहाव, कटाव
आवट	लिख, बन, थक, मिल	लिखाबट, बनावट, थकाबट, मिलावट
आहट	घबरा, चिललाना	घबराहट, चिल्लाहट

(ख) विशेषण बनाने वाले कृत् प्रत्यय–

प्रत्यय	धातू	शब्द
अनीय	कथ	कथनीय
आकू	पढ़, लड़	पढ़ाकू, लड़ाकू
आलु	कृपा, दया	कृपालु, दयालु
इया	बढ़, घट	बढ़िया, घटिया
इयल	मर, सड़	मरियल, सडियल
एरा	लूट	लुटेरा
ऐया	रव, चढ़	रवैया, चढ़ैया

2. तद्धित प्रत्यय–संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में लगने वाले प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय	मूलशब्द	शब्द
आ	भूख	भूखा
आई	भला, अच्छा	भलाई, अच्छाई
आऊ	उपज	उपजाऊ
आना	रोज, पढ़	रोजाना, पढ़ाना
आनी	जेठ, सेठ	जेठानी, सेठानी
आर	सोना	सुनार
आरी	जुआ	जुआरी
आस	मीठा	मिठास
आहट	गरम	गरमाहट

इक	सप्ताह, पक्ष, मास	साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक
इन	लुहार	लुहारिन
ई	कंजूस	कंजूसी
ईन	नमक	नमकीन
ईला	सुर	सुरीला
ऊ	पेट	पेटू
एरा	साँप	सपेरा
एलू	घर	घरेलू
कार	कथा	कथाकार
गर	सौदा	सौदागर
डा	दुख	दुखड़ा
दार	दुकान	दुकानदार
पन	बच्चा, बड़ा	बचपन, बड़प्पन
याँ	मक्खी	मक्खियाँ
वाला	पान	पानवाला
हार	पालन	पालनहार

स्मरणीय बिन्दु

- मूल शब्द से पूर्व शब्दांश लगाकर शब्द के अर्थ को प्रभावित करें, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
- हिंदी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग होते हैं– हिंदी के उपसर्ग, संस्कृत के उपसर्ग, विदेशी उपसर्ग और संस्कृत के अव्यय।
- वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में लगकर उसके अर्थ को प्रभावित करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते है।
- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– 1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

अभ्यास –

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) प्रत्यय किसे कहते हैं ?

(ख) प्रत्यय के कितने भेद होते हैं ?

(ग) कृत प्रत्यय से आपका क्या तात्पर्य है ?

(घ) तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से दो–दो शब्द बनाइए –

(क) हार	....	....	(च) आर	....	....
(ख) वाला	....	....	(छ) ईला	....	....
(ग) नी	....	....	(ज) वान	....	....
(घ) ई	....	....	(झ) पन	....	....
(ङ:) औना	....	....	(ज) आहट	....	....

3. निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय को अलग–अलग करके लिखिए –

युक्त शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) रखवाला	....	....
(ख) खिलौना	....	....
(घ) सजावट	....	....
(छ:) हँसकर	....	....

4. उचित विकल्प पर सही ☑ का चिहन लगाइए

क) ″बंधन′′ शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है –

न　　धन　　अन ।

ख) ″सजावट′′ शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है –

वह　　आवट　　हट

ग). ″उठकर′′ शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है –

आकर　　कर　　र

घ) ″मुखिया′′ शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है –

या　　ईया　　इया

छ) ″बुढ़ापा′′ शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है –

पा　　आपा　　अपा

च) क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्यय कहलाते हैं –

तद्धित   कृत् प्रत्यय   कर्तप्रत्यय

छ) कृत प्रत्यय से बने शब्द को कहते हैं –

कृतंत   कृदंत   कृतक

अध्याय 16

अशुद्धि शोधन

बच्चो, हमेशा याद रखो कि वाक्य का प्रत्येक शब्द व्याकरणिक नियमों में बँधा होता है। इन व्याकरणिक नियमों का सही ज्ञान न होने से ही वाक्य–रचना की अशुद्धियाँ देखने में आती हैं। जैसे–

1. मेरे को बाज़ार जाने का है।

2. डॉक्टर साहब, मेरे को बीमारी हुई है।

3. तुमसे समान मँगवाने को है।

4. खाना तो मिल गया, लेकिन सब्ज़ी नहीं मिली।

ये सभी वाक्य अशुद्ध हैं। सामान्यतः वाक्य–रचना के संदर्भ में निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियाँ देखने में आती हैं–

1. पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
1. विद्यालय बच्चा है जाता।	बच्चा विद्यालय जाता है।
2. एक गीतों की पुस्तक चाहिए।	गीतों की एक पुस्तक चाहिए।
3. मैच में बनाई सचिन ने सेंचुरी।	सचिन ने मैच में सेंचुरी बनाई।
4. मेहमान को प्लेट में रखकर खाना दो।	मेहमान को खाना प्लेट में रखकर दो।
5. तुम्हें गरम गाय का दूध पीना चाहिए।	तुम्हें गाय का गरम दूध पीना चाहिए।

सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
1. तेरे को यह बात किसने बताई?	तुम्हें यह बात किसने बताई?
2. मैंने थोड़ी देर में बाज़ार जाना है।	मुझे थोड़ी देर में बाज़ार जाना है।
3. क्या तुमने यह पुस्तक मेरे को देनी थी?	क्या तुम्हें यह पुस्तक मुझे देनी थी?
4. हमारे को टॉफ़ी नहीं मिली।	हमें टॉफ़ी नहीं मिली।

वचन संबंधी

अशुद्ध	शुद्ध
• हम सब घूमने जा रहे है।	• हम सब घूमने जा रहे हैं।
• बच्चा फुटबॉल खेल रहे हैं।	• बच्चा फुटबॉल खेल रहा है।
• सभी लेखिका लिखती है।	• सभी लेखिकाएँ लिखती हैं।

4. लिंग संबंधी

अशुद्ध	शुद्ध
• अध्यापिका कल पढ़ाएँगे।	• अध्यापिका कल पढ़ाएँगी।
• ग्रीष्म ऋतु में बहुत गरमी पड़ता है।	• ग्रीष्म ऋतु में बहुत गरमी पड़ती है।
• काजल दिनभर पढ़ता है।	• काजल दिनभर पढ़ती है।

5. परसर्ग संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैं बस पर आया।	मैं बस से आया।
2. यह काम समाप्त होने पर है।	यह काम समाप्त होने को है।
3. पुस्तक मेज़ में पड़ी है।	पुस्तक मेज़ पर पड़ी है।

6. अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
1. आप खाना खाओ।	आप खाना खाइए।
2. मनु या मीरा जाएँगे।	मनु या मीरा जाएगी।
3. क्या आप खाना खा लिए हैं?	क्या आपने खाना खा लिया है?
4. प्रधानाचार्य आ रहा है।	प्रधानाचार्य आ रहे हैं।

7 पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
1. उसने अपनी बात सप्रमाण सहित कही।	उसने अपनी बात सप्रमाण कही। अथवा उसने अपनी- बात प्रमाण सहित कही।
2. कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।	आज का अवकाश देने की कृपा करें।
3. हम लोग यहाँ सकुशलपूर्वक हैं।	हम लोग यहाँ कुशलतापूर्वक हैं। अथवा हम लोग यहाँ सकुशल हैं।
4. मेरे पास केवल मात्र दस रुपये हैं।	मेरे पास केवल दस रुपये हैं।

8. रूपांतरण/रचनांतरण संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
1. बच्चों से पतंग नहीं उड़ी।	बच्चों से पतंग नहीं उड़ाई गई।
2. नौकरानी से झाड़ू लगाओ।	नौकरानी से झाड़ू लगवाओ।
3. आज हम खाना नहीं खाए।	आज हमने खाना नहीं खाया।
4. मैंने गृहकार्य करना भूल गया।	मैं गृहकार्य करना भूल गया।

9 वाक्य निर्माण की अन्य अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
1. जो करेगा, वह भरेगा।	जो करेगा, सो भरेगा।
2. क्या यह संभव हो सकता है?	क्या यह संभव है?
3. कोई बच्चे ने आवाज़ दी।	किसी बच्चे ने आवाज़ दी।
4. यहाँ नहीं लिखो।	यहाँ मत लिखो।
5. गत रविवार वह मुंबई जाएगा।	गत रविवार वह मुंबई गया। *अथवा* आगामी रविवार वह मुंबई जाएगा।

अभ्यास

1. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से शुद्ध वाक्यों को छाँटिए–

क) एक गीतों की पुस्तक ला दीजिए।

(1) एक गीत की पुस्तक ला दीजिए। (2) गीतों की एक पुस्तक ला दीजिए

(3) अनेक गीत की पुस्तक ला दीजिए। (4) पुस्तक ला दीजिए एक गीतों की।

ख) मैंने भी आपके साथ चलना है। ।

(1) मैंने भी चलना है आपके साथ। (2) मेरे को भी आपके साथ चलना है।

(3) मैंने भी साथ आपके चलना है। (4) मुझे भी आपके साथ चलना है।

ग) आपको अभी बहुत बातें सीखना है।

(1) आपको अभी बातें बहुत सीखनी है। (2) आपको अभी बहुत बात सीखना है।

(3) अभी आपको सीखनी है बहुत बातें। (4) आपको अभी बहुत बातें सीखनी हैं।

घ) मैं, तुम और वह कल आगरा जाएँगे।

(1) तुम, वह और मैं कल आगरा जाएँगे। (2) मैं, वह और तुम कल आगरा जाएँगे।

(3) हम कल आगरा जाएँगे। (4) वह, तुम और मैं कल आगरा जाएँगे।।

ड) मेरा तो प्राण निकल गया।

(1) मेरे तो प्राण निकल गया। (2) मेरे तो प्राण निकल गए।

(3) मेरे तो निकल गए प्राण। (4) प्राण निकल गए मेरे तो।

4. निम्नलिखित वाक्य शुद्ध हैं? सही ☑ या गलत ☒ का चिहन लगाइए– सही–गलत का चयन है

(क) महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा। ( )

(ख) क्या आप भी बाहर जाएँगे? ( )

(ग) बच्चों से पतंग नहीं उड़ी। ( )

(घ) तुम्हें यह बात किसने बताई? ( )

(ङ:) मैंने थोड़ी देर में बाजार जाना है। ( )

निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए -

तिथी	....	प्रनाम	....
समाजिक	....	**नरमदा**	....
प्रभू	....	प्रशाद	....
दिवार	....	बिग्यान	....
त्रीशूल	....	चर्तुवेदी	....
रवीवार	....	झूट	....

नीचे लिखी सही वर्तनी पर घेरा बनाओ -

(क)	रितु	ऋतू	ऋतु	रितू
(ख)	रमायन	रामायन	रामायण	रमायण
(ग)	श्रंगार	श्रृंगार	श्रृँगार	सिंगार
(घ)	ग्यान	गियान	गयान	ज्ञान
(ङ)	आसीष	आशीष	आषीश	आशीस
(च)	उज्वल	उज्जवल	उज्ज्वल	उजवल

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए -

(क) हवा बहता है। ....

(ख) घोड़ा दौड़ रहे हैं। ....

(ग) मैंने गीत गाना है। ....

(घ) घोड़ा रेंकता है। ....

(ङ) मेरे को चाय पीना है। ....

(च) खरगोश को काटकर गाजर दो। ....

अध्याय 17

संधि

जब दो ध्वनियाँ आपस में जुड़ती हैं और वे एक नया रूप ले लेती हैं तो व्याकरण में इस संधि कहा जाता है। अर्थात् दो ध्वनियों के मूल से जो परिवर्तन आता है, उसे संधि कहते हैं।

जैसे–	सूर्य + उदय	=	सूर्योदय (अ+उ = ओ)
	परम+ईश्वर	=	परमेश्वर (अ+ई = ए)

संधि के भेद

संधि के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

संधि

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि** – जब दो स्वर आपस में मिलकर नया रूप ले लेते हैं, तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे– भोजन + आलय = भोजनालय, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी।

   स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं –

   (i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धिसंधि

   (iv) यण संधि (v) अयादि संधि

(i) **दीर्घ संधि** – जब ह्रस्व या दीर्घ आ, ई, ऊ के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाए, तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं । जैसे–

महा + आत्मा	=	महात्मा	(आ + आ = आ)
अधिक + अंश	=	अधिकांश	(अ + अ = आ)
अति + इव	=	अतीव	(इ + इ = ई)
परि + ईक्षा	=	परीक्षा	(इ + ई = ई)
सु + उक्ति	=	सूक्ति	(उ+उ = ऊ)
लघु + ऊर्मि	=	लघूर्मि	(उ+ऊ = ऊ)
भू + ऊर्जा	=	भूर्जा	(ऊ + ऊ = ऊ)

(ii) **गुण संधि** – जब 'अ' या 'आ' के बाद इ, ई; उ, ऊ और ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं । जैसे–

गज + इंद्र	=	गजेंद्र	(अ+इ = ए)
महा + इंद्र	=	महेंद्र	(अ+इ = ए)
राजा + ईश	=	राजेश	(आ+ई = ए)
वार्षिक + उत्सव	=	वार्षिकोत्सव	(अ+उ = ओ)
यथा + उचित	=	यथोचित	(आ+उ = ओ)
सप्त + ऋषि	=	सप्तर्षि	(अ+ृ = अर्)

(iii) **वृद्धि संधि** – अ या आ के बाद यदि ए या ऐ हो तो दोनों मिलकर ऐ और यदि ओ या औ हो तो दोनों मिलकर औ हो जाता है। जैसे–

एक + एक	=	एकैक	(अ + ए = ऐ)
तथा + एव	=	तथैव	(आ + ए = ऐ)
महा + औषधि	=	महौषधि	(आ + ओ = औ)
परम + ऐश्वर्य	=	परमैश्वर्य	(अ + ऐ = ऐ)
महा + औदार्य	=	महौदार्य	(आ + औ = औ)

(iv) **यण् संधि** – यदि–इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ, ई; उ, ऊ; ऋ का क्रमशः य्, व्, अर् बन जाता है । जैसे–

यदि + अपि	=	यद्यपि	(ई + अ = य)
अति + आवश्यक	=	अत्यावश्यक	(इ + आ = या)
अभि + उदय	=	अभ्युदय	(इ + उ = यु)
प्रति + एक	=	प्रत्येक	(ई + ए = ये)
सु + आगत	=	स्वागत	(उ + आ = वा)
सु + अच्छ	=	स्वच्छ	(उ + अ = व)
पितृ + आलय	=	पित्रालय	(ऋ + आ = रा)

(v) **अयादि संधि** – यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद इनमें कोई भिन्न स्वर आ जाए तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् बन जाता है। जैसे–

गै + अक	=	गायक	(ऐ + अ = अय)
नै + इका	=	नायिका	(ऐ + इ = आयि)
पो + अन	=	पवन	(ओ + अ = अव)
पौ + अक	=	पावक	(औ + अ = आव)
भौ + इष्य	=	भविष्य	(ओ + इ = अवि)
भौ + उक	=	भावुक	(ओ + उ = आवु)

2. **व्यंजन संधि** – व्यंजन के साथ किसी स्वर या व्यंजन के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं । जैसे–

जगत् : ईश	=	जगदीश	(त् + ई = दी)
उत् + यम	=	उद्यम	(त + य = घ)

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम

क. **कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग** और **पवर्ग** के पहले वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, वर्ण, य्, व्, ह् अथवा काई स्वर वर्ण आ जाए तो पहला वर्ग उसी वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है । जैसे–

सत् + मार्ग	=	सन्मार्ग	(त् + म = न्)
जगत् + नाथ	=	जगन्नाथ	(त् + न = न्न)
वाक् + मय	=	वाङ्मय	(क् + म = ङ्)
उत् + नति	=	उन्नति	(त् + न = न्न)

ख. **'त्' से संबंधित नियम**

(i) त् के बाद च, य, छ हो तो त् का च् हो जाता है । जैसे–

सत् + चरित्र	=	सच्चरित्र	(त् + च = च्च)
उत + चारण	=	उच्चारण	(त् + च = च्च)

(ii) त् के बाद ज या झ हो तो त् का ज् हो जाता है । जैसे–

सत् + जन	=	सज्जन	(त् + ज = ज्ज)
जगत + जननी	=	जगज्जननी	(त् + ज = ज्ज)

(iii) त् के बाद ट हो तो त् का ट् हो जाता है । जैसे–

तत् + टीका = तट्टीका (त् + ट = ट्ट)

(iv) त् के बाद ड हो तो त् का ड् हो जाता है। जैसे–

उत् + डयन = उड्डयन (त् + ड = ड्ड)

(v) त् के बाद ल हो तो त् का ल् हो जाता है । जैसे–

उत् + लास = उल्लास (त् + ल = ल्ल)

त्त + लीन = तल्लीन (त् + ल = ल्ल)

उत् + लेख = उल्लेख (त् + ल = ल्ल)

उत् + लंघन = उल्लंघन (त् + ल = ल्ल)

(vi) त् के बाद श हो तो त् का च और श् का छ हो जाता है। जैसे–

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट (त् + श = च्छ)

उत् + श्वास = उच्छवास (त् + श् = च्छ)

(vii) त् के बाद ह हो तो त का द् और ह का ध् हो जाता है । जैसे

उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

तत् + हित = तद्धित (त् + ह = द्ध)

ग. यदि किसी स्वर के बाद 'छ' आता तो 'छ' से पहले च् आ जाता है। जैसे–

आ + छादन = आच्छादन (आ + छ = च्छ)

अनु + छेद = अनुच्छेद (उ + छ = च्छ)

घ. 'म' से संबंधित नियम

(i) यदि 'म्' के बाद क से म तक कोई व्यंजन आए तो म् उस व्यंजन वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है । जैसे–

सम् + कल्प = संकल्प (म् + क = ङ्)

सम् + चय = संचय (म + च = ञ्)

(ii) यदि म् के बाद 'म' आता है तो वहाँ अनुस्वार न होकर 'म्म' हो जाता है। जैसे–

सम् + मुख = सम्मुख (म् + म = म्म)

सम् + मोहन = सम्मोहन (म् + म = म्म)

(iii) यदि म् के बाद 'य, र, ल, व, श, ष, स, ह' में कोई वर्ण होता है तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है । जैसे–

सम् + रक्षण	=	संरक्षण	(म् + म = ं)
सम् + संवाद	=	संवाद	(म् + व = ं)
सम् + सार	=	संसार	(म् + स = ं)
सम् + योग	=	संयोग	(म् + य = ं)

ङ. स से पहले अ, आ के अलावा कोई स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है। जैसे–

अभि + सेक	=	अभिषेक	(इ + स = ष)
परि + सद्	=	परिषद्	(इ + स = ष)
वि + सम	=	विषम	(इ + स = ष)
वि + साद	=	विषाद्	(इ + स = ष)

3. **विसर्ग संधि** – विसर्ग (:) के साथ किसी स्वर या व्यंजन के मेल को विसर्ग संधि कहते हैं । जैसे –

मनः + बल	=	मनोबल	(: + ब = ओ)
रजः + गुण	=	रजोगुण	(: + ग = ओ)

विसर्ग संधि के नियम निम्नलिखित हैं –

(i) यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और बाद में अ या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य, र, ल, व, स हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे–

सरः + वर	=	सरोवर	(: + व = ओ)
मनः + अनुकूल	=	मनोनुकूल	(: + अ = ओ)
तपः + बल	=	तपोबल	(: + ब = ओ)
मनः + ज	=	मनोज	(: + ज = ओ)

(ii) विसर्ग से पहले अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो और विसर्ग के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का र् हो जाता है । जैसे–

दुः + जन	=	दुर्जन	(: + ज = र्ज)

निः + आशा = निराशा (: + आ = रा)

निः + अर्थक = निरर्थक (: + अ = र)

(iii) यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श् हो जाता है । जैसे–

निः + चय = निश्चय (: + च = श्)

दुः + शासन = दुश्शासन (: + श = श्)

(iv) यदि विसर्ग के बाद त या स हो तो विसर्ग का स् हो जाता है । जैसे–

दुः + साहस = दुस्साहस (: + स त्र स्)

निः + संकोच = निस्संकोच (: + स = स्)

निः + तेज = निस्तेज (: + स = स्)

(v) यदि विसर्ग से पहले इ या उ हो और बाद में 'क, ख; ट, ठ; प, फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है । जैसे –

निः + कपट = निष्कपट (: + क = ष्क)

दुः + कर्म = दुष्कर्म (: + क = ष्क)

निः + फल = निष्फल (: + फ = ष्क)

निः प्राण = निष्प्राण (: + प = ष्प्रा)

निः पाप = निष्पाप (: + प = ष्पा)

(vi) यदि विसर्ग से पहले अ या आ हो और विसर्ग के बाद कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है । जैसे–

अतः + एव = अतएव

(vii) यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसके पूर्व का स्वर दीर्घ हो जाता है । जैसे–

निः + रोग = निरोग

निः + रस = नीरस

(viii) यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद क या प हो तो विसर्ग ज्यों–का–त्यों रहता है। जैसे– अंतः + करण = अंतःकरण

प्रातः + काल = प्रातःकाल

हिंदी की संधियाँ

यद्यपि हिंदी में संधियों की संख्या बहुत कम है, फिर भी संधियों के कुछ उदाहरण पाए जाते हैं । जैसे –

सब + ही	=	सभी
आधा + खिला	=	अधखिला
लकड़ी + हार	=	लकड़हारा आदि।

स्मरणीय बिन्दु –

- वर्णों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं ।
- संधि के तीन भेद होते हैं –
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि
- जब दो स्वर आपस में मिलकर एक नया रूप धारण करते हैं तो उसे स्वर संधि कहते हैं । स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं –
  1. दीर्घ संधि
  2. गुण संधि
  3. वृद्धि संधि
  4. यण् संधि
  5. अयादि संधि
- जब जुड़ने वाली दो ध्वनियों में से एक या दोनों व्यंजन हों तो वहाँ व्यंजन संधि होती है।
- स्वरों अथवा व्यंजनों के साथ विसर्ग (:) के मेल से विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं ।

प्रश्न–अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. संधि किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

ख. संधि के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए ।

ग. स्वर संधि के भेदों के नाम उदाहरण सहित लिखिए ।

2. निम्नलिखित में संधि कीजिए –

क.	अधिक + अंश	=..................	ख	महा + आत्मा	=..................
ग.	महा + इंद्र	=..................	घ.	सप्त + ऋषि	=..................
ङ	तथा + एव	=..................	च.	गौ + अक	=..................
छ.	जगत् + नाथ	=..................	ज.	पो + अक	=..................
झ.	मनः + बल	=..................	ञ.	सत् + जन	=..................

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि–विच्छेद कीजिए –

क.	उल्लेख	=........... + ...	ख.	अतीव	=........... + ...
ग.	यथोचित	=........... + ...	घ.	संवाद	=........... + ...
ङ	महात्मा	=........... + ...	च.	विषाद	=........... + ...
छ.	प्रत्येक	=........... + ...	ज.	सरोवर	=........... + ...
झ.	महौषधि	=........... + ...	ञ.	निराशा	=........... + ...

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दिए गए शब्दों में संधि विच्छेद के सही विकल्प पर (   ) चिह्न लगाइए–

क) परीक्षा

(i) परी+क्षा (ii) प+रीक्षा (iii) परि+ईक्षा (iv) परी+इक्षा

ख) अत्यावश्यक

(i) अत्य+वश्यक (ii) अति+आवश्यक (iii) अत्या+वश्यक (iv) अत्याव+श्यक

ग) नायिका

(i) नै+इका (ii) ने+इका (iii) नै+ईका (iv) न+यिका

घ) भविष्य

(i) भ+विष्य (ii) भो+इष्य (iii) भौ+इष्य (iv) भो+ईष्य

ङ) सन्मार्क

(i) सन्+मार्ग (ii) सत+मार्ग (iii) सत्+मार्ग (iv) सच+मार्ग

च) उद्धार

(i) उत्+धार (ii) उ+द्धार (iii) उद्+हार (iv) उद्+धार

छ) संवाद

(i) सम+वाद (ii) सम्+वाद (iii) स+वाद (iv) सं+वाद

ज) रजोगुण

(i) रजो+गुण (ii) रज+गुण (iii) रजौ+गुण (iv) रजः+गुण

झ) मनोनुकूल

(i) मन+अनुकूल (ii) मनो+नुकूल (iii) मनःअनुकूल (iv) मनोनु+कूल

ञ) निरोग

(i) नि+रोग (ii) निः+रोग (iii) नी++रोग (iv) नः+रोग

2. निम्नलिखित संधि–विच्छेद के लिए संधि (शब्द) के सही विकल्प पर ( ) चिह्न लगाइए –

क) विद्या+आलय

(i) विधालय (ii) विद्यालय (iii) विद्यार्थी (iv) विद्यालय

ख) लघूरिमी

(i) लघूरिमी (ii) लघुर्मि (iii) लघूर्मि (iv) लधूर्मि

ग) अभि+उदय

(i) अभ्यूदय (ii) अभिदय (iii) अभ्युदय (iv) उभ्युद

घ) उत्+लंघन

(i) उल्लघन (ii) उल्लंघन (iii) उल्लंधन (iv) उलंघन

ङ) जगत्+नाथ

(i) जगन्नाथ (ii) जगनाथ (iii) जगन्नाथ (iv) जगननाथ

च) वि+सम

(i) विषम (ii) विसम (iii) विष (iv) विषैला

छ) दुः+साहस

(i) दुसाहस (ii) दुस्साहस (iii) दुश्शाहस (iv) दुस्साहस

ज) निः+प्राण

(i) निप्राण (ii) निष्प्राण (iii) निश्प्राण (iv) नीष्प्राण

झ) सप्त+ऋषि

(i) सप्तर्षि (ii) सप्तर्षी (iii) सत्ऋर्षि (iv) सपतऋषि

ञ) अंतः+करण

(iv) अंतकरण (ii) अतकरण (iii) अंतःकरण (iv) अंत्यकरण

ट) उत्+लास

(i) उलस (ii) उल्लास (iii) उल्लसित (iv) उलसित

ठ) आ+छादन

(i) आच्छादन (ii) अछादना (iii) अछादन (iv) अच्छादन

अध्याय 18

समास

राजा और रानी

चक्र को धारण करने वाला

विद्या के लिए आलय

घोड़ों की दौड़

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़कर उसके सामने लिखे उनके संक्षिप्त रूप देखिए:

राजा और रानी	=	राजा–रानी
चक्र को धारण करने वाला	=	चक्रधर
विद्या के लिए आलय	=	विद्यालय
घोड़ों की दौड़	=	घुड़दौड़

शब्दों के संक्षिप्त रूप राजा–रानी, चक्रधर, विद्यालय तथा घुड़दौड़–ये 'समास' के उदाहरण हैं ।

समास शब्द का अर्थ है – संक्षेप अर्थात् छोटा करना, जैसे– 'रसोई के लिए घर' के स्थान पर 'रसोईघर' कहना । कम–से–कम शब्दों में अधिक–से–अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' का मुख्य उद्देश्य है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि –

दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है ।

इन शब्दों को भी जानिए :

- ❖ **समस्त पद**– समास की प्रक्रिया के बाद जो नया शब्द बनता है, उसे सामासिक पद या समस्तपद कहते हैं ।
- ❖ **समास विग्रह** – समस्तपद को फिर से पहले जैसी स्थिति में लाने की प्रक्रिया समास–विग्रह कहलाती है । दिए गए उदाहरणों में –

समस्तपद	समास-विग्रह
राजा-रानी	राजा और रानी
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़

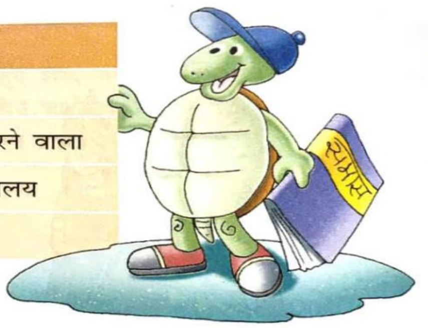

समस्त पद में दो पद होते हैं – पूर्वपद और उत्तरपद; जैसे–

विद्यालय –	विद्या	+	आलय	– विद्या के लिए आलय
(समस्तपद)	(पूर्व पद)		(उत्तरपद)	(समास–विग्रह)

समास के भेद :

समस्त पदों को निम्नलिखित छः भेदों में बाँटा गया है–

1. अव्ययीभाव समास	2. तत्पुरुष समास	3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास	5. द्वंद्व समास	6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास (Indeclinable Compounds)

जिस समास में पहला पद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें पहला पद प्रधान होता है तथा इस समास से जो शब्द बनता है, वह भी अव्यय होता है अर्थात उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता जैसे–

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
आजन्म	जन्म से लेकर	आजीवन	जीवन–भर
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	यथानियम	नियम के अनुसार
हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में	रातोंरात	रात ही रात में
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष

2. तत्पुरुष समास (Determinative Compounds)

जिस समास में दूसरा पद (शब्द) प्रधान हो और पहला पद गौण हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें दो शब्दों के बीच के कारक चिह्न को, के, की, के लिए, में, से, पर का लोप हो जाता है जैसे–राजपुत्री = राजा की पुत्री।

इसमें दूसरा पद प्रधान है। राजपुत्री शब्द राजा का नहीं, पुत्री का बोध करवा रहा है।

तत्पुरुष समास के छः उपभेद हैं। यह भेद कारकों पर आधारित हैं। तत्पुरुष समास का पद विग्रह करने पर उसमें प्रयुक्त कारक चिह्नों (को, के द्वारा, के लिए, से, का, के, की, में/पर) को ध्यानपूर्वक देखकर यह निर्णय कर लेना चाहिए कि पूर्वपद के साथ किस कारक का प्रयोग हुआ है। उसी के आधार पर तत्पुरुष समास के उपभेद का नाम निश्चित किया जाता है।

कारक–चिह्नों के अनुरूप तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छः उपभेद हैं–

(क) कर्म तत्पुरुष (ख) करण तत्पुरुष (ग) संप्रदान तत्पुरूष

(घ) अपादान तत्पुरूष (ङ) संबंध तत्पुरुष (च) अधिकरण तत्पुरुष

(क) कर्म तत्पुरुष (Objective Determinative Compound)–

यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ को कारक चिह्न का प्रयोग हो जैसे–

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
विदेशगत	विदेश को गया हुआ	गृहागत	गृह को आगत (आया हुआ)
स्वर्गगत	स्वर्ग को गत (गया हुआ)	स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त हो चुका
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	मरणासन्न	मरण को आसन्न (पहुँचा हुआ)
सर्वप्रिय	सब को प्रिय	परलोकगमन	परलोक को गमन (जाना)

(ख) करण तत्पुरुष (Instrumental Determinative Compound)– यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ से/के द्वारा (साधन) कारक चिह्न का प्रयोग हो जैसे–

समस्त–पद	पद–विग्रह	समस्त–पद	पद–विग्रह
रेखांकित	रेखा से अंकित	रसभरा	रस से भरा
शोकाकुल	शोक से आकुल	दुख–संतप्त	दुख से संतप्त
हस्तलिखित	हस्त (हाथ) से लिखित	सूररचित	सूरदास द्वारा रचित
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	बिहारीरचित	बिहारी द्वारा रचित
जन्मांध	जन्म से अंधा	मनगढ़ंत	मन से/द्वारा गढ़ा हुआ

(ग) संप्रदान तत्पुरुष (Dative Determinative Compound)– यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ के लिए कारक चिह्न का प्रयोग हो जैसे–

समस्त–पद	पद–विग्रह	समस्त–पद	पद–विग्रह
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा	पाठशाला	पाठ के लिए शाला
रसोईघर	रसोई के लिए घर	चिकित्सालय	चिकित्सा के लिए आलय (घर)
सूचनाकेंद्र	सूचना के लिए केंद्र	गुरुभक्ति	गुरु के लिए भक्ति
राहखर्च	राह के लिए खर्च	गोशाला	गो (गायों) के लिए शाला
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी

(घ) अपादान तत्पुरुष (Ablative Determinative Compound)– यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ से (अलगाव) कारक चिह्न का प्रयोग हो जैसे–

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
रोगमुक्त	रोग से मुक्त	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
पदच्युत	पद से च्युत	देशनिर्वासित	देश से निर्वासित
धनहीन	धन से हीन	गुणहीन	गुण से हीन
धर्मविमुख	धर्म से विमुख	शापमुक्त	शाप से मुक्त

(ङ) **संबंध तत्पुरूष (Possessive Determinative Compound)** – यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ का/के/की कारक चिह्न का प्रयोग हो; जैसे –

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
लखपति	लाखों का पति	राजभक्ति	राजा की भक्ति
भारत–रत्न	भारत का रत्न	राजकुमार	राजा का कुमार
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार	प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार
पराधीन	पर (दूसरे) के अधीन	देशरक्षा	देश की रक्षा
माखनचोर	माखन का चोर	प्रेमसागर	प्रेम का सागर

(च) **अधिकरण तत्पुरूष (Locative Determinative Compound)**– यह वह समास होता है जिसका पद–विग्रह करने पर पहले पद के साथ में/पर कारक चिह्न का प्रयोग हो; जैसे–

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
दानवीर	दान देने में वीर	व्यवहारकुशल	व्यवहार में कुशल
पुरूषोत्तम	पुरूषों में उत्तम	युद्धवीर	युद्ध में वीर
सिरदर्द	सिर में दर्द	आपबीती	अपने–आप पर बीती
शरणागत	शरण में आया हुआ	अश्वारोही	अश्व पर सवार
घुड़सवार	घोड़े पर सवार	आत्मविश्वास	आत्मा पर विश्वास

3. कर्मधारय समास (Relative Compounds) –

कर्मधारय समास वह होता है जिस समस्त–पद में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो अथवा पहला पद उपमेय और दूसरा पद उपमान हो । स्पष्टतः इसके दो उपभेद हैं; जैसे–

(क) विशेषण–विशेष्य, कर्मधारय समास (ख) उपमान–उपमेय कर्मधारय समास

(क) विशेषण–विशेष्य कर्मधारय समास

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
नीलगगन	नीला है जो गगन	महाजन	महान है जो जन
परमानंद	परम है जो आनंद	महाविद्‌यालय	महान है जो विद्‌यालय
कापुरुष	कायर है जो पुरुष	अधपका	आधा है जो पका हुआ
महावीर	महान है जो वीर	भद्रजन	भद्र है जो जन

(ख) उपमान–उपमेय या उपमेय–उपमान कर्मधारय समास (Comparative Compounds)

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
देहलता	लता के समान देह	करकमल	कमल रूपी हाथ
मृगलोचन	मृग के समान लोचन	वचनामृत	अमृत रूपी वचन
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय	विद्‌याधन	विद्‌या रूपी धन
कनकलता	कनक के समान लता	नरसिंह	सिंह जैसा नर

4. द्विगु समास (Numeral Compounds)

जिस समस्त–पद का पहला पद संख्यावाची हो, उसमें द्विगु समास होता है; जैसे–

समस्त–पद	**पद–विग्रह**	**समस्त–पद**	**पद–विग्रह**
सप्ताह	सात दिनों का समूह	त्रिफला	तीन फलों का समाहार
त्रिकोण	तीन कोनों का समाहार	दोपहर	दो पहरों का समाहार
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	पंचतंत्र	पांच तत्रों का समाहार
चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
दोराहा	दो राहों का समाहार	चतुष्कोण	चार कोणों वाला

5. द्वंद्व समास (Parallel Compounds)

जिस समस्त–पद के दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर और/तथा/अथवा इत्यादि शब्द प्रयुक्त हों, उसमें द्वंद्व समास होता है; जैसे–

समस्त–पद	पद–विग्रह	समस्त–पद	पद–विग्रह
माता–पिता	माता और पिता	स्त्री–पुरुष	स्त्री और पुरुष
भला–बुरा	भला या बुरा	हानि–लाभ	हानि और लाभ
सुख–दुख	सुख और दुख	रात–दिन	रात और दिन
अपना–पराया	अपना और पराया	पापा–पुण्य	पाप अथवा पुण्य

6. बहुब्रीहि समास (Suggestive Compounds)

जिस समस्त–पद में कोई पद प्रधान न हो और दोनों पद मिलकर किसी अन्य अर्थ का बोध करवाएँ उसमें बहुब्रीहि समास होता है; जैसे–

समस्त–पद	पद–विग्रह	समस्त–पद	पद–विग्रह
दशानन	दश (दस) हैं आनन (मुख) जिसके रावण	नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका शिवजी
लंबोदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका गणेश	चक्रधर	चक्र धारण किया है जिसने विष्णु
श्वेतांबर	श्वेत (सफेद) है वस्त्र जिसके – सरस्वती	त्रिलोचन	तीन हैं लोचन (आँख) जिसके – शिव
पीतांबर	पीत (पीले) हैं अंबर (वस्त्र) जिसके – कृष्ण	चतुर्मुख	चारहैं मुख जिसके ब्रह्मा
घनश्याम	घन (बादल) जैसा श्याम वर्ण है जिसका – कृष्ण	एकदंत	एक है दंत (दाँत) जिसका – गणेश

विभिन्न समासों में अंतर

(क) द्विगु समास तथा बहुब्रीहि समास में अंतर –

- द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे–तिरंगा–तीन रंगों का समाहार ।

- बहुब्रीहि समास में दोनों पदों में कोई पद प्रधान नहीं होता तथा दोनों पदों के मिलने से एक विशेष अर्थ निकलता है जिसे लक्ष्यार्थ (Suggestive meaning) कहते हैं ।

अतः यदि तिरंगा से भाव हो तीन रंगों का समूह तो वह द्विगु समास होगा। यदि इससे भाव को हमारे देश का ध्वज तो इसे बहुब्रीहि समास माना जाएगा ।

(ख) कर्मधारय समास तथा बहुब्रीहि समास में अंतर –

- कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण या उपमान और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है; जैसे –

  कमलनयन = कमल के समान नयन ।

- बहुब्रीहि समास में पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी अन्य पद की बात कहते हैं; जैसे– कमलनयन = कमल के समान नयनों वाला अर्थात विष्णु ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित विग्रहों के समस्त–पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

विग्रह	समस्त–पद	समास का नाम
पाप और पुण्य	....	....
लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश	....	....
नौ रात्रियों का समूह	....	....
पीले हैं वस्त्र जिसके	....	....
आत्म पर विश्वास	....	....
आधा है जो पका हुआ	....	....
पठन के लिए शाला	....	....
प्रत्येक वर्ष	....	....
जन्म से अंधा	....	....
सबको प्रिय	....	....
प्रत्येक दिन	....	....

मन से गढ़ा हुआ	....	....
आज्ञा के अनुसार	....	....
रोग से मुक्त	....	....

3. समस्त–पदों के विग्रह के अनुसार समास का नाम लिखिए –

नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिवजी	....
	नीला है जो कंठ	....
दशानन	दश (दस) आननों का समूह	....
	दश हैं आनन जिसके अर्थात रावण	....
पीताबंर	पीत है जो अंबर	....
	पीत हैं अंबर जिसके अर्थात श्रीकृष्ण	....
त्रिफला	त्रि (तीन) फलों का समूह	....
	चि (तीन) फलों वाली औषधि	....
चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात विष्णु	....
	चार भुजाओं का समूह	....
तिरंगा	तीन–रंगों से युक्त	....
	भारत का ध्वज	....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) समास किसे कहते हैं?

(ख) समास–विग्रह किसे कहते हैं?

(ग) अव्ययीभाव समास किसे कहते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

(घ) कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में क्या अंतर है?

(ङ) द्विगु और बहुव्रीहि समास में क्या अंतर है?

4. दिए गए विकल्पों में से समस्तपदों के उचित समास–विग्रह छाँटिए और सही विकल्प पर सही (   ) का निशान लगाइए :

(क) लंबोदर

(i)	लंबा है उदर जिसका	(ii)	गणेश
(iii)	लंबा और उदर	(iv)	लंबा–सा उदर

(ख) आजन्म

(i)	कई जन्म तक	(ii)	जन्मभर
(iii)	जन्म से पहले	(iv)	पुनर्जन्म

(ग) पुस्तकालय

(i)	पुस्तक और आलय	(ii)	पुस्तक के लिए आलय
(ii)	पुस्तक–आलय	(iv)	पुस्तक का आलय

(घ) राजकुमार

(i)	राजा का बेटा	(ii)	राजा का कुमार
(iii)	कुँआरा राजा	(iv)	राजकुंवर

(ङ) हस्तलिखित

(i)	हस्त से लिखित	(ii)	हाथों से लिखा गया
(iii)	हाथों द्वारा लिखित	(iv)	हाथ + लेख

5. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (   ) का चिह्न लगाइए :

(क) 'शरणागत' समस्तपद में समास है :

(i)	अव्ययीभाव समास	(ii)	द्वंद्व समास
(iii)	तत्पुरुष समास	(iv)	बहुव्रीहि समास

(ख) 'रेखांकित' समस्त पद में समास है

(i)	अव्ययीभाव समास	(ii)	द्वंद्व समास
(iii)	तत्पुरुष समास	(iv)	बहुव्रीहि समास

(क) 'नीलकंठ' समस्तपद में समास है :

(i) अव्ययीभाव समास (ii) द्वंद्व समास

(iii) तत्पुरुष समास (iv) बहुब्रीहि समास

(घ) 'रात–दिन' समस्त पद में समास है :

(i) अव्ययी भाव समास (ii) द्वंद्व समास

(iii) तत्पुरुष समास (iv) बहुब्रीहि समास

(ङ) 'प्रतिदिन' समस्तपद में समास है :

(i) अव्ययी भाव समास (ii) द्वंद्व समास

(iii) तत्पुरुष समास (iv) बहुब्रीहि

अध्याय 19

पद परिचय

आप जानते हैं कि शब्द स्वतंत्र होते हैं परंतु जब वे वाक्य में प्रयोग किए जाते हैं तो वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका संबंध स्थापित हो जाता है; तब इन्हें 'पद' कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक पद का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना ही 'पद-परिचय' कहलाता है।

पद-परिचय देते समय ध्यान रखने योग्य बातें :

1. प्रत्येक पद को अलग-अलग करना।
2. प्रत्येक पद का प्रकार व भेद तथा उपभेद बताना।
3. पद का वाक्य में आए दूसरे पदों से उसका संबंध बताना।
4. वाक्य में पद का कार्य बताना।

विभिन्न प्रकार के पदों का परिचय देते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. **संज्ञा** : (i) प्रकार - व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा (ii) लिंग - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग (iii) वचन - एकवचन, बहुवचन (iv) कारक - कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण (v) वाक्य के अन्य पदों के साथ संबंध, जैसे - कर्ता कारक होने पर लिखना कि किस क्रिया का कर्ता है।

2. **सर्वनाम** : (i) प्रकार - पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम (ii) लिंग - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग (iii) वचन - एकवचन, बहुवचन (iv) कारक - कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण (v) यदि कर्ता कारक है तो लिखना है कि किस क्रिया का कर्ता है।

3. **विशेषण** : (i) प्रकार - गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, सार्वनामिक विशेषण (ii) विशेष्य (iii) लिंग - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग (iv) वचन - एकवचन, बहुवचन।

4. **क्रिया** : (i) प्रकार - अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया (ii) वाच्य - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य (iii) काल - वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्काल (iv) लिंग - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग (v) वचन - एकवचन, बहुवचन (vi) क्रिया का कर्ता।

5. **क्रियाविशेषण** : (i) प्रकार - कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक (ii) विशेष्य क्रिया - जिस क्रिया की विशेषता बता रहा है।

6. संबंधबोधक अव्यय : किन पदों, पदबंधों, उपवाक्यों आदि को जोड़ता है।

7. समुच्चयबोधक अव्यय : किन पदों को जोड़ता है।

8. विस्मयादिबोधक अव्यय : हर्ष, शोक, विस्मय, घृणा आदि भाव लिखना।

उदाहरण :

क. मोहन स्कूल जाता है।

मोहन : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'जाता है' क्रिया का कर्ता।

जाता है : क्रिया, अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्तमानकाल, पुल्लिंग, एकवचन, 'मोहन' कर्ता की क्रिया।

ख. वह क्या खाता है?

वह : पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'खाता है' क्रिया का कर्ता।

क्या : प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग / स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक 'खाता है' क्रिया का कर्म'।

खाता है : सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, 'वह' कर्ता की क्रिया।

ग. यह लड़की सुंदर है।

यह : सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'लड़की' विशेष्य का विशेषण।

सुंदर : गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'लड़की' विशेष्य का विशेषण।

घ. अहा! उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।

अहा! : विस्मयादिबोधक अव्यय, हर्षसूचक।

उपवन में : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

सुंदर : गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, 'फूल' विशेष्य का विशेषण।

फूल : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, 'खिले हैं' क्रिया का कर्ता।

खिले हैं : अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, 'फूल' कर्ता की क्रिया।

ङ मोहन धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे : रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'चलता है' क्रिया की विशेषता बताता है।

च. सुनीता आठवीं कक्षा में पढ़ती है।

आठवीं : क्रमसूचक संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण।

छ. दौड़कर जाओ और उस बाज़ार से कुछ ले आओ।

दौड़कर : रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'जाओ' क्रिया की विशेषता।

बाज़ार : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अपादान कारक।

कुछ : अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक।

अभ्यास

1. पद–परिचय का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित पदों का पद परिचय दीजिए :

क. चिड़िया पिंजरे में बंद है।

चिड़िया : प्रकार : ...., वचन : ....,

लिंग : ...., कारक : ....,

ख. हम मंसूरी घूमने गए।

हम : प्रकार : ...., वचन : ....,

लिंग : ...., कारक : ....,

ग. भारत महान देश है।

भारत : प्रकार : ...., वचन : ....,

लिंग : ...., कारक : ....,

घ. वह कक्षा में सो जाता है।

कक्षा में : प्रकार : ...., वचन : ....,

लिंग : ...., कारक : ....,

ड. मोहन पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।

पाँचवी : प्रकार : ...., वचन : ....,

लिंग : ...., कारक : ....,

3. प्रयोग की विशिष्टता के कारण पद-परिचय में भिन्नता आ जाती है, जैसे —

और : यहाँ और आ गए। (संज्ञा)

और विद्यार्थी बैठे हैं। (विशेषण)

कुछ और दो। (क्रियाविशेषण)

उदाहरण की तरह काली आकृति वाले पदों के बारे में भी लिखिए कि उनका प्रकार क्या है :

1. एक : एक भी भली-भाँति नहीं पढ़ा। (........................)

   एक आम मुझे दे दो। (........................)

2. अच्छा : अच्छों को कौन नहीं चाहता? (........................)

   यह अच्छा मकान है। (........................)

3. बहुत : बहुतों से तो मिल भी न सका। (........................)

   बहुत फल खरीद लाए हैं। (........................)

   वह बहुत तेज़ चलती है। (........................)

4. कम : कम बोला करो। (........................)

   कम ही पढ़ पाते हैं। (........................)

   आज मोहन ने कम भोजन किया। (........................)

अध्याय 20

विलोम शब्द

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से सर्वदा एक–दूसरे के विपरीत अर्थ देते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। स्मरणीय तथ्य यह है कि संज्ञा शब्द का विपरीतार्थक संज्ञा होना चाहिए और विशेषण शब्द का विपरीतार्थक विशेषण। अगर दोनों शब्दों को किसी वाक्य में इकट्ठा प्रयोग करना हो तो इनके मध्य 'और', 'तथा' , 'अथवा' या 'योजक'(–) चिह्न लगा देते हैं– जैसे– झूठ–सच, माता–पिता इत्यादि।

विलोम शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं उन्हें पढ़ें एवं समझें––

उदाहरण

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
आकाश	पाताल	पाप	पुण्य	स्वर्ग	नरक	सदाचार	दुराचार
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	आयात	निर्यात	खुशबू	बदबू	लौकिक	अलौकिक
सुलभ	दुर्लभ	सजीव	निर्जीव	साकार	निराकार	लायक	नालायक
यश	अपयश	शत्रु	मित्र	उपयोगी	अनुपयोगी	आदि	अंत
प्राकृतिक	कृत्रिम	नियंत्रित	अनियंत्रित	संधि	विच्छेद	विष	अमृत
सुंदर	कुरूप	कायर	वीर	भय	निर्भय	सुगंध	दुर्गंध
सबल	निर्बल	सपूत	कपूत	उपकार	अपकार	पूरा	अधूरा
मित्र	शत्रु	प्रकाश	अंधकार	शिक्षित	अशिक्षित	प्रातः	सायं
दिन	खत	सुविधा	असुविधा	अतिवृष्टि	अनावृष्टि	पूर्ति	माँग
बंधन	मुक्ति	दुष्ट	सज्जन	सरल	कठिन	दास	स्वामी
रिपु	मित्र	मूर्ख	विद्वान	कैद	आजाद	सावधान	असावधान
उदय	अस्त	गुप्त	प्रकट	मान	अपमान	गुरु	शिष्य
परतंत्र	स्वतंत्र	स्वस्थ	अस्वस्थ	क्रय	विक्रय	राजा	रंक
कृतज्ञ	कृतघ्न	सज्जन	दुर्जन	हर्ष	शोक	कँटे	फूल
गुप्त	प्रकट	सौभाग्य	दुर्भाग्य	हिंसा	अहिंसा	जय	पराजय
जड़	चेतन	धनी	निर्धन	उत्कर्ष	अपकर्ष	मंगल	अमंगल
राग	विराग	उत्कर्ष	अपकर्ष	धनी	निर्धन	स्वदेश	विदेश
पूर्व	पूर्व	भाग्यवान	अभागा	सुख	दुख	रक्षक	भक्षक

विशेष : विलोम शब्द बनाते समय यह आवश्यक है कि तत्सम शब्द का विलोम तत्सम शब्द तथा तद्भव शब्द का विलोम तद्भव ही होता है।

अभ्यास –

1. निम्नलिखित शब्द के विलोम शब्द लिखिए –

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कठिन	....	आशा	....
नवीन	....	उपकार	....
अस्त	....	साकार	....
विश्वास	....	देव	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विलोम शब्द छाँटिए –

(क) भारत 15 अगस्त को स्वतंत्र हुआ, इससे पूर्व परतंत्र था। ....

(ख) सभा में मेरे समर्थक भी थे तथा विरोधी भी। ....

(ग) मेहनती व्यक्ति सफल होते हैं तथा आलसी असफल होते हैं। ....

(घ) नदी का स्वच्छ जल गंदे नाले ने दूषित कर दिया। ....

(ङ) हमें सुख–दुःख दोनों में समान भाव से रहना चाहिए। ....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति रेखांकित शब्दों के विलोम से कीजिए –

(क) गाँधी जी <u>सत्य</u> के समर्थक थे .... के नहीं।

(ख) चोर के चेहरे से पता चल जाता है कि वह .... कह रहा है या <u>झूठ</u>।

(ग) मुझे किसी से कुछ .... <u>देना</u> नहीं।

(घ) सूर्य के <u>अस्त</u> होने से <u>अंधकार</u> होतीं हैं और .... होने से .... ।

(ङ) <u>अच्छे</u> बच्चे सदा बड़ी का <u>सम्मान</u> करते हैं, परंतु .... बच्चे हमेशा .... करते हैं।

अध्याय 21

पर्यायवाची शब्द

एक सा अर्थ बताने वाले शब्द को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्द को 'प्रतिशब्द' भी कहते हैं। किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की बहुलता होती हैं। जो भाषा जितनी संपन्न होगी उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। पर्यायवाची शब्दों के अर्थों में और प्रयोग में कभी–कभी अंतर होता है। प्रयोग करते समय इसका उचित ध्यान रखना चाहिए। ऐसा नहीं करने से कभी–कभी वाक्य गलत बन जाते हैं क्योंकि पूर्ण पर्यायवाची शब्द भाषा में बहुत कम होते हैं। शब्दों में प्रसंग के कारण कुछ भेद हो जाता है। यहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं, आओ पढ़ें एवं समझें–

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**	**शब्द**	**पर्यायवाची शब्द**
असुर	राक्षस, दानव, दैत्य।	अनुचर	सेवक, दास, नौकर।
अनुपम	अनोखा, निराला, आपूर्व।	अश्व	घोड़ा, हय, तुरंग।
आनंद	उल्लास, प्रसन्नता, हर्ष।	इच्छा	कामना, लालसा, अभिलाषा।
इंद्र	सुरेश, देवराज, देवेंद्र।	ईश्वर	भगवान, परमात्मा, जगदीश, प्रभु।
कोमल	नर्म, मुलायम, मृदु।	कपड़ा	चीर, पट, अंबर।
गंगा	भागीरथी, सुरसरि, देवनदी।	उपवन	वाटिका, उद्यान, बाग।
घर	सदन, भवन, गृह।	झंडा	पताका, ध्वजा, वैजयन्ती।
तालाब	सेवर, सर, ताल।	दूध	दुग्ध, पय, क्षीर।
दुःख	वेदना, कष्ट, पीड़ा।	दिन	वासर, दिवस, वार।
धन	दौलत, वित्त, द्रव्य।	नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिणी।
नेत्र	चक्षु, आँख, नयन।	पवित्र	पावन, पुनीत, पाक।
पत्नी	भार्या, दारा, वधू।	पर्वत	शैल, पहाड़, गिरि।
प्रकाश	चमक, ज्योति, प्रभा।	बंदर	कपीश, वानर, मरकट।
मनुष्य	मानव, नर, जन।	मित्र	सखा, दोस्त, मीत।
माता	अंबा, माँ, जननी।	मछली	मीन, मत्स्य, जलरानी।
रात	निशा, रात्रि, रजनी।	वृक्ष	तरुँ, पड़े, श्पादप।

बाण	शर, तीर, सायक।	सिंह	केसरी, व्याप्र, शेर।
सेना	दल, फौज, अनि।	स्त्री	महिला, औरत, नारी।
सूर्य	सूरज, रवि, दिनकर।	साँप	सर्प, भुजंग, नाग।
सोना	कनेक, स्वर्ण, कुंदन।	स्वर्ग	देवलोक, सुरलोक, अमरपुरी।

अभ्यास –

1. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं ?

2. नीचे लिखें शब्दों से पर्यायवाची शब्द से अलग शब्द पर गोला लगाइए।

दूध	–	दुग्ध, इंदु, पय, क्षीर।	मित्र	–	सखा, देवेंद्र, दोस्त।
वृक्ष	–	पादप, छाया, तरू।	प्रकाश	–	चमक, अंधेरा, ज्योति।
नदी.	–	तटिनि, सरिता, भागीरथी।	रात	–	दिवस, रात्रि , निशा।
पर्वत	–	गिरि, शैल, हय।	उपवन	–	वाटिका, कुसुम, उद्यान।

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची लिखिए :

असुर	–	....	....	....
चन्द्रमा	–	....	....	....
दिन	–	....	....	....
पक्षी	–	....	....	....
घर	–	....	....	....

अध्याय 22

अनेकार्थी शब्द

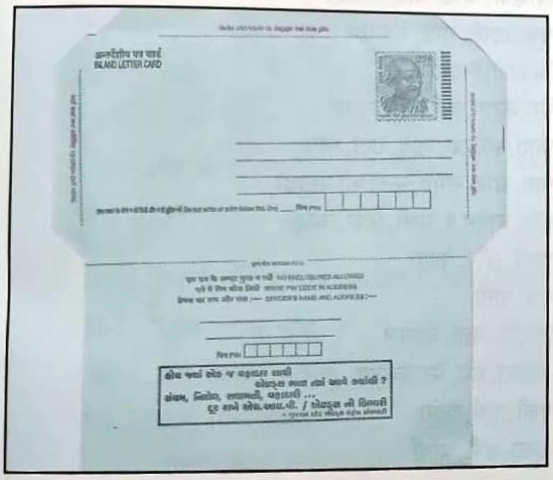

पत्र

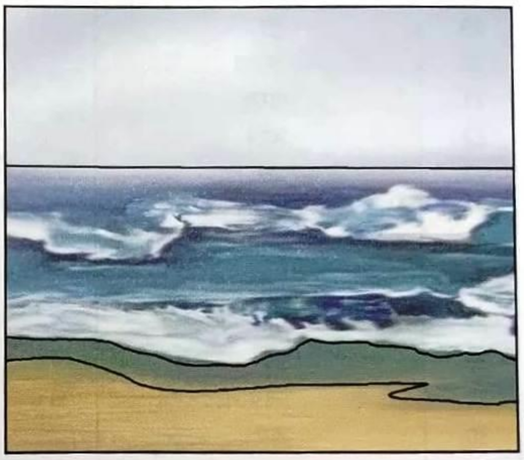

जलधर

ऊपर दिए गए चित्रों के नीचे लिखे 'पत्र' और 'जलधर' शब्द एक से अधिक अर्थ का बोध कराते हैं । ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं –

नीचे कुछ अनेकार्थी शब्द दिए जा रहे हैं –

क्रम	शब्द	अर्थ
1.	अंक	गोद, नंबर, नाटक का भाग
2.	अंबर	आकाश, वस्त्र, केसर, कपास
3.	अनंत	आकाश, अंतहीन, ईश्वर, मोक्ष
4.	अंग	भाग, शरीर का हिस्सा, उपाय
5.	आम	एक फल, साधारण
6.	उत्तर	एक दिशा, जवाब, बदला, पीछे
7.	काल	मृत्यु, समय, यमराज, अकाल
8.	कनक	सोना, धतूरा
9.	कर्ण	कान, कुंतीपुत्र
10.	कर	हाथ, किरण, टैक्स, सूँड़
11.	गुरू	शिक्षक, श्रेष्ठ, भारी, विशेष
12.	जाल	फंदा, झरोखा, जादू, छल, माया

13.	दल	पता, सेना, समूह, फूल की पंखुड़ी
14.	नाग	हाथी, साँप, केशर
15.	पत्र	चिट्ठी, पत्ता, कागज
16.	पतंग	पक्षी, सूर्य, पतंग
17.	बाम	उल्टा, स्त्री, बांया
18.	बल	शक्ति, सेना, कृष्ण के भाई
19.	भूत	प्रेत, बीता हुआ समय, प्राणी
20.	मधु	शहद, मदिरा, बसंत. ऋतु
21.	मुद्रा	अंगूठी, सिक्का, विशेष भाव
22.	मूल	जड़, कंद, आरंभ, मूलधन
23.	योग	युक्ति, ध्यान, उपाय, जोड़
24.	राशि	ढेर, समूह, ज्योतिष की राशियाँ
25.	वर	श्रेष्ठ, दूल्हा, सुंदर, आशीर्वाद
26.	वंश	जाति, कुल, परिवार, संतान
27.	शून्य	आकाश, गिनती का अंक
28.	संगम	मिलना, दो नदियों का मिलन
29.	सोम	चंद्रमा, अमृत, कपूर
30	हर	महादेव, आग, हल
31.	हरि	विष्णु, बंदर, सूर्य, साँप

अभ्यास कार्य

प्र.1. अनेकार्थी शब्द से आप क्या समझते हैं?

प्र.2. निम्नलिखित अनेकार्थी उचित अर्थों से मिलान करो –

मधु – चन्द्रमा, अमृत

पत्र – शहद, मदिरा

पद – जाति, संतान

सोम – चिट्ठी, पत्ता

वंश – ओहदा, पैर

प्र.3. निम्नलिखित अर्थों का को बोध कराने वाले अनेकार्थी शब्द लिखो –

1. मृत्यु, समय, यमराज ....
2. हाथी, साँप, केशर ....
3. सखि, बिन्दु, भौंरा ....
4. महादेव, आग, हल ....
5. पक्षी, सूर्य, पतंग ....
6. विष्णु, बंदर, तोता ....

प्र.4. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो–दो अर्थ लिखे –

अंबर, योग, वर, नाग, कनक, चरण

अध्याय 23

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

ऊपर चित्रों के नीचे लिखे चित्रकार, नभचर, किसान ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग अनेक शब्दों के स्थान पर हुआ है । ऐसे शब्दों को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कह सकते हैं ।

परिभाषा :

''अनेक शब्दों या वाक्यांशों के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहलाते हैं ।'' इनके प्रयोग से भाषा सुंदर, सुरक्षित, सरल, संक्षिप्त एवं प्रभावशाली हो जाती है।

नीचे कुछ वाक्यांश एवं उनके लिए शब्द दिए जा रहे हैं –

क्रम	**वाक्यांश**	**एक शब्द**
1	जिसका कोई आरम्भ न हो	अनादि
2	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
3	सम्पूर्ण संसार के स्वामी	अखिलेश
4	जिसकी मृत्यु कभी न हो	अमर
5	जिसका अंत कभी न हो	अनंत
6	जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
7	कम खाने वाला	अल्पाहारी

8	आलोचना करने वाला	आलोचक
9	जो ईश्वर में विश्वास करता हो	आस्तिक
10	प्रतिदिन होने वाला	दैनिक
11	सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक
12	वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
13	सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह
14	सत्य का आचरण करने वाला	सदाचारी
15	नभ में भ्रमण करने वाला	नभचर
16	फल खाकर रहने वाला	फलाहारी
17	जंगली पशुओं के निर्भय घूमने का स्थान	अभ्यारण्य
18	दूसरों की भलाई करने वाला	परोपकारी
19	शिवजी का मंदिर	शिवालय
20	परीक्षा देने वाला	परीक्षार्थी
21	कीचड़ में पैदा होने वाला	पंकज
22	जो अपने सहारे पर हो	स्वावलम्बी
23	परिश्रम के बदले दिया गया धन	पारिश्रमिक
24	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
25	जानने की इच्छा	जिज्ञासा
26	रात में घूमने वाला	निशाचर
27	जिसके आर पार देखा जा सके	पारदर्शी
28	जगत के नाथ	जगन्नाथ
29	अवज्ञा करने वाला	अवज्ञ
30	सोने–चाँदी के आभूषण बनाने वाला	सुनार

अभ्यास कार्य

प्र.1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें ।

(क) सत्य के लिए आग्रह

(ख) कम खाने वाला

(ग) जानने की इच्छा,

(घ) शिवजी का मंदिर,

(ङ) जगत के नाथ

(च) फल खाकर रहने वाला

प्र.2. सही उत्तर चुनिए :–

1. जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो –

नश्वर	गुस्सैल	तुनकमिजाज	ईर्ष्यालु

2. कुछ काम न करने वाला –

बेकार	कर्महीन	अकर्मण्य	अप्रत्यनशील

3. जहाँ जाना सरल हो –

सुगम	अगम	निर्गम	आगम

4. प्रतिदिन होने वाला –

साप्ताहिक	दैनिक	पाक्षिक	वार्षिक

5. कम खाने वाला

कंजूस	कृपण	अल्पाहारी	मितव्ययी

प्र.3 निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर पुनः वाक्य लिखो –

1. जो काम से जी चुराता है; वह कभी सफल नहीं हो सकता ।

2. इस अवसर पर आप परिवार के साथ आमंत्रित हैं ।

3. हमें कानून के विरूद्ध काम नहीं करने चाहिए ।

4. जो शरण में आया हो उसकी रक्षा करनी चाहिए ।

अध्याय 24

समान लगने वाले भिन्नार्थक शब्द

ऐसे शब्द जो आकार व ध्वनि की दृष्टि से तो मिलते हुए से लगते हैं किन्तु उनके अर्थ अलग–अलग होते हैं, ऐसे में उच्चारण तथा वर्तनी भी भिन्न होते होते हैं।

हिन्दी के कुछ ऐसे ही शब्द युग्म नीचे दिए जा रहे हैं –

(क)	अभय –	भय रहित	(ख)	आसन –	बेठने के लिए आसन
	उभय –	दोनों		आसन्न–	निकट
(ग)	अविराम–	बिना रूके	(घ)	उदार –	दयालु
	अभिराम–	सुंदर		उधार –	ऋण
(ङ)	ओर –	तरफ	(च)	अनल –	आग
	और –	तथा		अनिल –	वायु
(छ)	अन्याय –	अनुचित	(ज)	अलि –	भौंरा
	अन्यान्य–	दूसरे–दूसरे		अली –	सखी
(झ)	उपयुक्त–	उचित, सही	(ट)	कटक –	सेना का समूह
	उपर्युक्त–	ऊपर कहा गया		कंटक –	काँटा
(ठ)	पानी –	जल	(ड)	हंस –	एक पक्षी
	पाणि –	हाथ		हँस –	हँसने की क्रिया
(ढ)	दीन –	गरीब	(ण)	सामान –	कोई वस्तु
	दिन –	दिवस		समान –	बराबर
(त)	सुत –	बेटा	(थ)	चिर –	प्राचीन
	सूत –	धागा		चीर –	वस्त्र
(द)	कटि –	कमर का भाग	(ध)	कोश –	शब्द भंडार
	कोटी –	करोड़		कोष –	खजाना
(न)	प्रासाद –	महल	(प)	हिय –	हृदय
	प्रसाद –	कृपा		हय –	घोड़ा

अभ्यास कार्य

1. उचित शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

(क) उसे खेलने का बहुत..........................है । (शोक / शौक)

(ख) वह प्रतिदिन...........................जाता है । (मंदिर / मंदर)

(ग) न जाने उसके.....................में क्या लिखा है । (भाग्य / भाग)

(घ) उसने ठंड लगने पर....................ओढ़ लिया । (शॉल / साल)

2. निम्नलिखित शब्दों का इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

1.	समान	....	2.	और	....
	सामान	....		ओर	....
3.	पाणि	....	4.	शस्त्र	....
	पानी	....		शास्त्र	....
5.	धेनु	....	6.	उधार	....
	धनु	....		उधार	....

3. निम्नलिखित वाक्यों का शुद्ध रूप लिखो –

1. हँस पानी में तैर रहा है । ....
2. माता को अंबु भी कहा जाता है। ....
3. राजा सदैव बड़े से भुवन में रहता है। ....
4. यह धनु रोजाना दस लीटर तक दूध देती है। ....
5. अपना लक्ष निर्धारित रखो । ....

अध्याय 25

शब्दों के सूक्ष्म अर्थ भेद

पर्यायवाची शब्दों में अर्थ की समानता होते हुए भी उनमें सूक्ष्म अंतर होता है। वाक्य प्रयोग में सभी पर्यायवाची शब्दों का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है। जैसे –

वह रात को घर लौटा ।   वह रजनी को घर लौटा ।

यहाँ पर दूसरा वाक्य पढ़ने में अटपटा सा लगता है । अतः शब्दों के एकार्थ प्रतीत होने के कारण इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए ।

कुछ ऐसे (एकार्थक) शब्द दिए जा रहे हैं – ध्यानपूर्वक समझिए ।

1. अस्त्र – (फेंककर चलाया जाने वाला हथियार)
   शस्त्र – (हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार)
2. अधिक – (ज्यादा)
   पर्याप्त – (आवश्कतानुसार यथेष्ट)
3. आकार – (छोटी बड़ी या लम्बी चौड़ी वस्तु)
   आकृति – (वस्तु की शक्ल)
4. ग्रंथ – (बड़ी एवं महत्वपूर्ण पुस्तक)
   पुस्तक – (साधारण पुस्तक)
5. मृत्यु – (साधारण व्यक्ति की मौत)
   निधन – (श्रेष्ठ या प्रसिद्ध व्यक्ति की मौत)
6. सम्राट – (राजाओं का राजा)
   राजा – (सामान्य राजा)
7. छाया – (पेड़ की छाया)
   परछाई – (व्यक्ति की परछाई)
8. अनुरूप – (समानता)
   अनुकूल – (अनुसार)

9. सहायता – (एक पक्ष से होती है)

सहयोग – (दोनों पक्षों से होता है)

10. अमूल्य – (जिसे मूल्य देकर भी हासिल न किया जा सके)

बहुमूल्य – (जो बहुत मूल्यवान हो)

अभ्यास कार्य

प्र.1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

(क) इस पेड़ का....................बड़ा है । (आकार / आकृति)

(ख) सड़क दुर्घटना में दस लोगों की..................हो गई । (निधन / मृत्यु)

(ग) जानवरों की हत्या...................है । (पाप / अपराध)

(घ) रामायण एक धार्मिक.......................है । (पुस्तक / ग्रंथ)

(ङ) संकट के समय..................ही काम आता है । (साहस / उत्साह)

प्र.2. निम्न एकार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए ।

(क) छाया
परछाई

(ख) लड़का
बालक

(ग) श्रम
परिश्रम

(घ) मृत्यु
निधन

प्र.3 निम्नलिखित शब्दों से इस प्रकार वाक्य बनाइये के उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

1. सहायता –
सहयोग –

2. लालसा –
लोभ –

3. पाप –
अपराध –

4. अमूल्य –
बहुमूल्य –

5. तृप्ति –
संतोष –

6. किराया –
भाड़ा –

अध्याय 26

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

भाषा विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करने का साधन है । इसे और अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनकी सहायता से गंभीर भावों को भी बहुत सहज और सरल ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

मुहावरे

मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है–अभ्यास या बातचीत।

ऐसा वाक्यांश, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विलक्षण अर्थ को प्रकट करे, उसे मुहावरा कहते हैं।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली तथा प्रवाहमयी बनाने में सहायता मिलती है। बिना मुहावरों की भाषा निर्जीव–सी जान पड़ती है। इनका प्रयोग आज हमारी भाषा और विचारों की अभिव्यक्ति का एक अभिन्न तथा महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। यहाँ कुछ मुहावरों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग दिए जा रहे हैं। छात्र इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ें, समझें व याद करें–

मुहावरे और उनका प्रयोग

1. **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना**–स्वयं विनाश को आमंत्रण देना।

   पढ़ाई ढंग से न करके विद्यार्थी स्वयं अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

2. **आँखें खुलना** – होश आना।

   जब पांडव जुए में अपना सब कुछ हार गए तो उनकी आँखें खुलीं।

3. **आँखों का तारा** – अति प्रिय।

   हर बेटा अपनी माँ की आँखों का तारा होता है।

4. **आसमान सिर पर उठाना** – अधिक कोलाहल करना।

   कक्षा में अध्यापक के न आने पर विद्यार्थियों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

5. **आस्तीन का साँप** – कपटी मित्र।

   करण आस्तीन का साँप है, यह मैं पहले नहीं जानता था।

6. **ईद का चाँद होना** – बहुत दिनों बाद दिखाई देना।

   आजकल कहाँ रहते हो, तुम तो ईद का चाँद हो गए हो ।

7. **ईमान बेचना** – बेईमान होना।

आजकल पैसों के लिए लोग अपना ईमान बेच देते हैं ।

8. **घाव पर नमक छिड़कना** – दुखी को अधिक दुखी करना ।

किसी के घाव पर नमक छिड़कना अच्छी बात नहीं ।

9. **घी के दीए जलाना** – खुशियाँ मनाना

भारत द्वारा क्रिकेट की श्रृंखला जीतने का समाचार सुनकर क्रिकेट प्रेमियों ने घी के दीए जलाए ।

10. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना** – अत्यंत लज्जित होना।

तुमने अपने ही गुरू जी का अपमान किया, तुम्हें चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।

11. **छक्के छुड़ाना** – बुरी तरह हराना ।

भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

12. **जी चुराना** – काम से बचने के लिए बहाना बनाना ।

आलसी सौरभ सदा काम से जी चुराता रहता है ।

13. **तलवे चाटना** – खुशामद करना ।

रामू को अफसरों के तलवे चाटकर यह नौकरी मिली है ।

14. **तिल का ताड़ बनाना** – छोटी सी बात बड़ी बना देना ।

आज के पत्रकार तो तिल का ताड़ बनाने में माहिर हैं ।

15. **दाँतों तले उँगली दबाना** – आश्चर्य करना ।

ताजमहल को देख सभी लोग दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं ।

16. **दाल न गलना** – काम न बनना ।

वह कुछ भी कर ले, इस मामले में उसकी दाल नहीं गलेगी ।

17. **नौ दो ग्यारह हो जाना** – भाग जाना ।

पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया ।

18. **पहाड़ टूट पड़ना** – बड़ा संकट आना ।

व्यापार में हुए नुकसान से तो मानो शंकर लाल पर पहाड़ टूट पड़ा ।

19. **पाँचों उँगलियाँ घी में** – खूब लाभ उठाना ।

महँगाई बढ़ने के कारण आज व्यापारियों की पाँचों उँगलियाँ घी में है ।

20. **पानी–पानी होना** – शर्म के कारण सिर नीचा होना ।

पुत्र की गलत हरकत देख पिता पानी–पानी हो गए ।

21. **फूँक–फूँककर कदम रखना** – सोच समझकर काम करना ।

इस जमाने में आदमी को फूँक–फूँककर कदम रखना चाहिए ।

22. **भीगी बिल्ली होना** – डर से दुबकना ।

अध्यापक को देख विराट भीगी बिल्ली हो गया ।

23. **भैंस के आगे बीन बजाना** – मूर्ख के सामने ज्ञान की बातें करना।

श्यामू को समझाना तो भैंस के आगे बीन बजाने जैसा है।

24. **मुँह में पानी भर आना** – जी ललचाना ।

रसगुल्ले देखते ही उर्वशी के मुँह में पानी भर आया।

25. **रफू चक्कर होना** – भाग जाना ।

पुलिस को देखते ही चोर रफू चक्कर हो गया ।

कुछ अन्य मुहावरे और उनके अर्थ

क्र.सं.	मुहावरे	अर्थ
1.	दिमाग में भूसा भरा होना	पूर्णतः मूर्ख होना।
2.	दाँत पीसना	क्रोध करना
3.	धरती पर पाँव न पड़ना	अभिमान से भरा होना।
4.	नाक रगड़ना	बड़ी दीनता से प्रार्थना करना।
5.	पर निकलना	व्यर्थ घमंड करना।
6.	पापड़ बेलना	कठिन परिश्रम करना।
7.	फूँक–फूँककर कदम रखना	बहुत सोच–विचारकर काम करना।
8.	बहती गंगा में हाथ धोना	अवसर का लाभ उठाना
9.	बाएँ हाथ का खेल	अति सरल कार्य ।

10.	बाल–बाल बचना	दुर्घटना होते–होते बच जाना।
11.	भाड़े का टट्टू	पैसे लेकर काम करने वाला ।
12.	राई का पहाड़ बनाना	बढ़ा–चढ़ाकर बात करना ।
13.	लोहे के चने चबाना	कठिन काम
14.	सड़क नापना	व्यर्थ में इधर–उधर घूमना।
15.	सिर नीचा होना	अपमानित होना।
16.	हथियार डालना	पराजय स्वीकार कर लेना।
17.	हक्का–बक्का रह जाना	आश्चर्यचकित रह जाना।
18.	हाथ धोकर पीछे पड़ना	किसी काम/किसी व्यक्ति के पीछे बुरी तरह पड़ना
19.	हाथ–पाँव फूल जाना	डर जाना।
20.	हाथों–हाथ बिकना	बहुत जल्दी बिकना।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है– लोक में प्रचलित उक्ति या प्रसिद्ध बात । यह लोक की सम्पत्ति है। इनका प्रयोग किसी देश या काल विशेष पर आधारित न रहने के कारण यह प्राचीन होते हुए भी नवीन है । लोकोक्ति एक साधारण जन–उक्ति है, जो किसी विशेष घटना को सिद्धांत का रूप प्रदान करती है ।

(मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर

- मुहावरे वाक्यांश हैं. तो लोकोक्तियाँ संपूर्ण वाक्य।
- मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में होता है।
- मुहावरों के प्रयोग से भाषा को बल मिलता बनाने में किया जाता है। है, जबकि लोकोक्तियों का प्रयोग उदाहरण देने या कथन को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।

कुछ प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ और उनका प्रयोग)

1. **अंधों में काना राजा**—बहुत से मूखों में थोड़ी बुद्धिवाले का भी सम्मान होता है।

रामदीन केवल पाँचवीं पढ़ा हुआ है लेकिन अनपढ़ लोगों के बीच उसका बहुत सम्मान है। किसी ने ठीक ही कहा है—अंधों में काना राजा।

2. **आँख का अंधा नाम नयनसुख**—गुणों के विरुद्ध नाम होना।

मेरे पड़ोसी का नाम बलवान सिंह है, पर एक मंजिल सीढ़ियाँ चढ़ने पर ही उसकी साँस फूलने लगती है, इसे ही कहते हैं—आँख का अंधा नाम नयनसुख।

3. **आम के आम गुठलियों के दाम**—दुहरा लाभ होना।

हर्ष ने यह पुस्तक पढ़कर प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर ली और परीक्षा के बाद उसे आधे दामों में बेच भी दिया। इसे कहते हैं—आम के आम गुठलियों के दाम।

4. **उलटा चोर कोतवाल को डाँटे**— अपराध करने वाला उलटी धौंस जमाए।

राहुल ने मेरा पेन चुरा लिया। उससे पूछा तो लड़ने लगा। इसी को कहते हैं—उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

5. **एक और एक ग्यारह होते हैं**— मिलकर काम करने से बड़ी शक्ति आ जाती है।

लड़ाई—झगड़े से कुछ न मिलेगा। मिलकर काम करो तो सफलता अवश्य मिलेगी, क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

6. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** — अधिक परिश्रम करने पर कम लाभ होना।

खजाने की खोज में सारा किला खोद डाला, लेकिन निकले कुछ पीतल के बरतन। इसे कहते हैं — खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।

7. **चिराग तले अँधेरा** — गुणवान के समीप गुणहीन का पनपना।

गुरू जी तो बड़े विद्वान हैं, लेकिन उनका बेटा मूर्ख है। यह तो वही बात हुई—चिराग तले अँधेरा।

8. **चोर—चोर मौसेरे भाई** — बुरे स्वभाव के लोग जल्दी दोस्त (एक) हो जाते हैं ।

यह तो उनका ही पक्ष लेगा, उनसे भिन्न थोड़े ही है । आप तो जानते हैं–चोर–चोर मौसेरे भाई।

9. **दाल–भात में मूसलचंद** – व्यर्थ टाँग अड़ाने वाला।

हम दोनों के बीच बोलने वाले तुम कौन होते हो? दाल–भात में मूसलचंद बनने की आवश्यकता नहीं ।

10. **नदी में रहकर मगर से बैर** – बलवान से बैर नहीं करना चाहिए।

अपने ही बॉस के खिलाफ तुम शिकायत दर्ज करा रहे हो, पर ध्यान रखना, नदी में रहकर मगर से बैर करना अच्छा नहीं ।

कुछ अन्य लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ

क्र.सं.	लोकोक्तियाँ	अर्थ
1.	अधजल गगरी छलकत जाय	महत्त्वहीन व्यक्ति दिखावा बहुत करते हैं ।
2.	अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।	कमजोर–से कमजोर व्यक्ति भी अपने घर में धौंस जमाया करता है।
3.	आग लगाकर पानी को दौड़ना	झगड़ा कराने के बाद स्वयं ही मेल कराने बैठना।
4.	एक अनार सौ बीमार	थोड़ी वस्तु और चाहने वाले अधिक ।
5.	कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली	दो व्यक्तियों की स्थिति में बहुत अंतर होना।
6.	जिसकी लाठी उसकी भैंस	बलवान सब कुछ कर सकता है।
7.	जो गरजते हैं सो बरसते नहीं	जो बातें अधिक करता है, वह कार्य नहीं करता।
8.	ते–ते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर	आय के अनुसार व्यय करना चाहिए।
9.	थाली का बैंगन	अस्थिर बुद्धि वाला ।
10.	धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का	दोनों ओर से निराशा।
11.	पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं	गुलामी में कभी चैन नहीं।
12.	बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखता	अपना काम आप करने पर ही पूरा होता है।
13.	मुँह में राम बगल में छुरी	बाहर से अच्छा, दिल का काला ।

14.	साँप भी मरे लाठी भी न टूटे	बिना हानि उठाए काम बन जाए।
15.	सोने पे सुहागा होना	अच्छी वस्तु में और गुण होना।

स्मरणीय बिन्दु

- ऐसा वाक्यांश जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विलक्षण अर्थ को प्रकट करे, उसे मुहावरा कहते हैं ।
- लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है– लोक में प्रचलित या प्रसिद्ध बात।
- मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर
    - मुहावरे वाक्यांश हैं तो लोकोक्तियाँ सम्पूर्ण वाक्य।
    - मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में होता है।

अभ्यास –

1. **मुहावरे और लोकोक्ति के अंतर को स्पष्ट कीजिए**
2. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

    (क) आँखों का तारा

    (ख) कान भरना

    (ग) थूककर चाटना

    (घ) नानी याद आ जाना

    (ङ) दुम दबाकर भागना

    (च) नमक–मिर्च लगाना

    (छ) पीठ ठोकना

    (ज) तलवे चाटना

3. दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरा चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

आँखें बिछाए बैठना, पेट काटना, तलवे चाटना, उल्लू बनाना, घाव पर नमक छिड़कना, जी भर आना, एक आँख से देखना, कमर सीधी करना, करवटें बदलना, आँखों में धूल झोंकना

(क) वृद्ध ने................................अपने बेटे का लालन–पालन किया ।

(ख) कोई भी दुखद दृश्य देखकर उसका......................... ।

(ग) अफसरों के....................कर उसने अपने बेटे को नौकरी पर लगवा दिया।

(घ) बहुत थक गया हूँ, थोड़ी........................... ।

(ङ) ग्राहक ने खोटा सिक्का देकर दुकानदार की........................दी ।

(च) मनीष तुमने भी उसको क्या......................मजा आ गया ।

(छ) माँ अपने सभी बच्चों को....................है ।

(ज) रात को चिंता के कारण मैं.....................रहा।

(झ) अपने प्रिय नेता के आगमन पर सब लोग.......................थे ।

(ञ) एक तो बेचारा फेल हो गया, दूसरे तुम चिढ़ाकर......................रहे हो।

4. निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए :

(क) एक अनार सौ बीमार

(ख) आँख का अंधा नाम नयनसुख

(ग) अधजल गगरी छलकत जाए

(घ) घर का भेदी लंका ढाए

(ङ) चोर की दाढ़ी में तिनका

(च) दाल–भात में मूसलचंद

(छ) पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

(ज) एक पंथ दो काज

(झ) काला अक्षर भैंस बराबर

(ञ) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे

5. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों के सही अर्थ पर सही ☑ का चिन्ह लगाइए –

(क)	कान भरनाः					
	(i)	बेईमान होना		(ii)	चुगली करना	
	(iii)	निश्‍चित रहना		(iv)	मूर्ख बनाना	
(ख)	छक्के छुड़ाना :					
	(i)	कठिनाई से दिखाई देना		(ii)	हस्तक्षेप करना	
	(iii)	आश्चर्य करना		(iv)	बुरी तरह हराना	
(ग)	पौ बारह होना :					
	(i)	खुले हाथ से खर्च करना		(ii)	खूब लाभ होना	
	(iii)	बहुत दुख होना		(iv)	उत्साह कम होना	
(घ)	आम के आम गुठलियों के दाम					
	(i)	दुहरा लाभ होना		(ii)	दोनों ओर से निराशा	
	(iii)	अस्थिर बुद्धिवाला		(iv)	अच्छी वस्तु में और गुण होना	
(ङ)	एक हाथ से ताली नहीं बजतीः					
	(i)	सीधे बात को तैयार न होना		(ii)	निर्दोष पर दोष लगाना	
	(iii)	असंभव काम करना		(iv)	एक के करने से झगड़ा नहीं होता है ।	

अध्याय 27

पत्र–लेखन

पत्र लेखन एक कला है। पत्र विचारों के आदान–प्रदान का सरल, सशक्त, सस्ता और लोकप्रिय साधन है। पत्र, संक्षिप्त, आकर्षक, उद्देश्यपूर्ण और स्पष्ट होना चाहिए। मानव सभ्यता के विकास में पत्रों ने अपनी अनूठी भूमिका निभाई है। पत्र लेखन से हम दूसरे व्यक्ति का दिल जीत सकते हैं और आपस में मैत्रीपूर्ण संबंध बना सकते हैं। पत्रों की उपयोगिता को देखते हुए पाठ्यक्रम में पत्र लेखन शामिल किया गया है ताकि विद्यार्थी पत्र–लेखन की कला को सीख सकें।

पत्रों के प्रकार

पत्रों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. औपचारिक पत्र   2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र के अंतर्गत प्रधानाचार्य को पत्र, सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को पत्र, संपादक को पत्र, व्यवसायिक पत्र आदि को शामिल किया जाता है।

2. अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र उन्हें लिखे जाते हैं, जिनके साथ हमारा व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध होता है। इस प्रकार के पत्र अपने मित्रों, सगे संबंधियों, परिजनों आदि को लिखे जाते हैं।.

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें –

(क) पत्र लिखते समय अपनी और पत्र पाने वाले की आयु, पद और योग्यता का ध्यान रखना चाहिए ।

(ख) पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए ।

(ग) पत्र संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए ।

(घ) पत्र की लिखावट स्पष्ट और सुंदर होनी चाहिए । पत्र में अनावश्यक रूप से काट–छाँट नहीं करनी चाहिए ।

(ङ) पत्र में प्रेषक का नाम, पाने वाले का नाम, दिनांक, पता आदि का उल्लेख उचित स्थान पर होना चाहिए ।

1 विद्यालय में खेल–कूद सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

केंद्रीय विद्यालय

पीतमपुरा, नई दिल्ली

12.08.20...

विषय – विद्यालय में खेल–कूद सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु।

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपका ध्यान विद्यालय में अपर्याप्त खेल सामग्री की ओर दिलाना चाहता हूँ। अगले माह 14 सितंबर को हमारे विद्यालय का हॉकी मैच सेंट थॉमस स्कूल से है। इसके लिए विद्यार्थियों को अभ्यास करने हेतु खेल–सामग्री की आवश्यकता होगी। विद्यालय में उपलब्ध खेल–सामग्री खिलाड़ियों के लिए पर्याप्त नहीं है।

विद्यालय का खेल सचिव होने के कारण, मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमारे विद्यालय में विभिन्न खेलों की समुचित सामग्री उपलब्ध करवाने की कृपा करें जिससे विद्यार्थियों को खेल के अभ्यास करने में परेशानी न हो तथा वे खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम ऊँचा कर सकें। आशा है, आप इस दिशा में उचित कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राकेश खेल सचिव

कक्षा–सातवीं 'बी'

2. नगर–निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए जिसमें अपने क्षेत्र में गंदगी के कारण फैलने वाली बीमारी की सूचना दी गई हो।

सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी फरीदाबाद नगर निगम फरीदाबाद

20.9.20...

विषय – क्षेत्र की गंदगी के संबंध में पत्र।

मान्यवर

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की सफाई व्यवस्था की शोचनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में कई दिनों से सफाई कर्मचारी नहीं आए हैं, जिसके कारण जगह–जगह कूड़े के ढेर लग गए हैं और नालियाँ बंद हो गई हैं। दुर्गंध के मारे लोगों का चलना मुश्किल हो गया है। मक्खी और मच्छरों का यहाँ एकछत्र राज्य स्थापित हो गया है जिससे डेंगू और मलेरिया जैसे भयंकर रोग फैलने की आशंका है।

आपसे अनुरोध है कि मुहल्ले की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यथाशीघ्र उचित कदम उठाएँ और इस क्षेत्र की सफाई का समुचित प्रबंध करवाएँ।

सधन्यवाद

भवदीय

रवि सक्सेना मकान नं. 450,

सैक्टर–8

फरीदाबाद.

3. **मुख्य अतिथि के निमंत्रण हेतु पत्र लिखिए –**

प्रति,

श्री. धर्मेन्द्र प्रधान

शिक्षा मंत्री, भुवनेश्वर, ओडिशा

विषयः मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्षता करने का निमंत्रण

आदरणीय महोदय,

मैं नवीन चौकसे, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से एक छात्र हूँ। मैं आपको हमारे विश्वविद्यालय के वार्षिक उत्सव के लिए मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित करना चाहता हूँ, जो 1 अप्रैल, 2025 को आयोजित किया जाएगा। हर साल की तरह, हम विश्वविद्यालय परिसर के अंदर कॉलेज उत्सव का आयोजन कर रहे हैं। हमने कई कार्यक्रमों की योजना बनाई है जो दोपहर 3 बजे से शुरू होंगे। हम उम्मीद करते हैं कि आप समारोह का उद्घाटन करेंगे और कॉलेज जीवन पर अपने विचार भी देंगे।

कृपया इस पत्र को औपचारिक आमंत्रण मानें और जल्द से जल्द हमें जवाब दें। हम आपसे सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रहे हैं। कृपया किसी भी अतिरिक्त जानकारी के लिए हमसे संपर्क करने में संकोच न करें। इस पत्र के साथ डीन से अनुमति पत्र संलग्न कर रहा हूँ।

धन्यवाद।

सम्मान,

(हस्ताक्षर)

नवीन चौकसे

अभ्यास

निम्नलिखित पत्रों को अपनी उत्तर–पुस्तिका में लिखिए ।

(क) प्रधानाचार्य को दो दिन के अवकाश के लिए प्रार्थना–पत्र लिखिए।

(ख) अपने स्कूल के प्रधानाचार्य को सैक्शन बदलवाने के लिए प्रार्थना–पत्र लिखिए।

(ग) अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद–पत्र लिखिए ।

(घ) अपने भाई के विवाह के उपलक्ष्य में अपने मित्र को निमंत्रण–पत्र लिखिए ।

(ङ) अपने मित्र/सखी को परीक्षा में असफल होने पर सांत्वना–पत्र लिखिए ।

अध्याय 28

अनुच्छेद–लेखन

अनुच्छेद–लेखन का अर्थ है– किसी एक विषय पर लगभग सौ शब्दों का एक अनुच्छेद लिखना। अनुच्छेद में दिए गए विषय के बारे में सारी बातें नहीं लिखी जातीं अपितु उस विषय का कोई एक पक्ष लिखा जाता है।

- अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–
- अनुच्छेद में छोटे–छोटे वाक्यों में सारगर्भित बातें लिखनी चाहिए।
- लंबी–चौड़ी भूमिका न देकर विषय शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- यदि संकेत बिंदु दिए गए हों तो केवल उन्हीं का उल्लेख होना चाहिए।
- अनुच्छेद के वाक्यों में परस्पर समुचित तालमेल होना चाहिए।
- जितना निर्देश दिया गया हो, अनुच्छेद लगभग उतने ही शब्दों में लिखना चाहिए।

नीचे कुछ अनुच्छेद दिए गए हैं, इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए–

1. मेरा देश

मेरा देश भारत है। यह इंडिया और हिंदुस्तान के नाम से भी प्रसिद्ध है। मेरा देश महान है। दुनिया का और कोई ऐसा देश नहीं जहाँ इतनी बहुतायत में महापुरुषों और विचारकों ने जन्म लिया हो। राम, कृष्ण, महावीर और बुद्ध को कौन नहीं जानता। नानक, कबीर, तुलसी आदि संत देश की आत्मा हैं। गाँधी, टैगोर और नेहरू देश की पहचान हैं। हमारी सभ्यता बहुत पुरानी है। वेद, पुराण, उपनिषद और गीता केवल हमारे धर्मग्रंथ ही नहीं, इनमें जीवन का सारा निचोड़ है। हमारे देश ने हमेशा दुःखी और पीड़ित व्यक्तियों के आँसू पोंछे हैं। हमने लुटेरों ओर विदेशी आततायियों को भी आश्रय दिया है। आज हम स्वतंत्र हैं। हमारा देश उन्नति के शिखर को छूने की कोशिश कर रहा है। विज्ञान और तकनीकी के सहारे भारत के लोग अपनी समस्याओं पर विजय की प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं। विश्व शांति के लिए भारत लगातार प्रयत्नशील है।

2. मेरी प्रिय पुस्तक

रामचरितमानस मेरी सबसे प्रिय पुस्तक है। इसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने की थी। यह काव्यात्मक–पुस्तक आदर्श विचारों का अनमोल खजाना है। किसी दूसरी पुस्तक में ऐसे विचार नहीं मिल सकते। इस पुस्तक में भगवान राम के जीवन–चरित्र का वर्णन किया गया है। राम एक आदर्श पुत्र थे। वे एक आदर्श राजा भी थे। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चारों आदर्श भाई थे। माता कैकेई के कहने पर राम राजमहल छोड़कर वन चले गए और वहाँ

उन्होंने चौदह वर्ष बिताए। राज्य के लिए उन्होंने भरत से लड़ाई नहीं की। भाइयों में पहले जैसा ही प्रेम बना रहा। राम ने दुष्ट रावण को मारकर सच्चे हृदय वाले विभीषण को लंका की राजगद्दी पर बिठाया। रामचरितमानस की यह कथा हमें आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। इस पुस्तक में भारत के लोग अपने जीवन की समस्याओं का हल ढूँढ़ते हैं ।

3. प्रदूषण की समस्या

प्रदूषण पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर समस्या है। यह समस्या धीरे–धीरे और बड़ी एवं भयानक होती जा रही है। प्रदूषण के मुख्य तीन रूप हैं– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। वायु प्रदूषण हवा में खतरनाक और विषैली गैसों के मिलने से उत्पन्न होता है । ये गैसें मोटर वाहनों, कारखानों तथा अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण भारी मात्रा में निकलती हैं । वायु प्रदूषण का दूसरा कारण वनों का कटाव है । पेड़ लगाकर तथा प्रदूषण रहित ईंधनों का प्रयोग कर हम वायु प्रदूषण में कमी ला सकते हैं । जल प्रदूषण की समस्या भी बहुत जटिल है । धरती पर पीने योग्य साफ जल का अभाव हो गया है। नदियों, तालाबों और झीलों के पानी में शहरों और कारखानों से निकला गंदा पानी छोड़ने से यह समस्या उत्पन्न हुई है । कीटनाशक तथा खतरनाक रसायनों का बढ़ता प्रयोग भी जल प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है । ध्वनि प्रदूषण हमारे चारों ओर शोर–गुल बढ़ने से होता है । इन तीनों ही प्रकार के प्रदूषण से निबटने के लिए उचित प्रयास करने की आवश्यकता है ।

4. महानगरों का जीवन

महानगर आधुनिक शहरी सभ्यता के बड़े केंद्र हैं। यहाँ का जीवन व्यस्त और हलचलों से युक्त होता है। हर कोई अपने काम में व्यस्त दिखाई देता है। गोष्ठियाँ और सभाएँ होती ही रहती हैं। यहाँ आधुनिक सुख–सुविधाओं की कमी नहीं होती। धनी लोग इसका भरपूर लाभ उठाते हैं। वे बड़ी–बड़ी कोठियों या बहुमंजिली इमारतों में रहते हैं। गरीबों के दिन कठिनाई से गुजरते हैं। उन्हें झुग्गी–झोंपड़ियों में शरण लेनी पड़ती है। यातायात के लिए यहाँ सभी आधुनिक सुविधाएँ मौजूद होती हैं। व्यापार की गतिविधियों के कारण लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। छोटे–छोटे स्तर पर होने वाले काम–धंधों से भी बहुत से लोगों की रोजी–रोटी चलती है। महानगरों के बाजारों, सुपर बाजारों और मॉल्स में काफी चमक–दमक होती है। यहाँ के जनजीवन में मशीनों का बहुत बड़ा योगदान होता है। मशीनीकरण, आधुनिकता, प्रदूषण, तड़क–भड़क आदि महानगरों की आम विशेषताएँ हैं।

9. स्वास्थ्य ही धन है

स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी पूँजी मानी जाती है। संसार का छोटे से बड़ा काम अच्छे स्वास्थ्य के बलबूते ही संभव है। अच्छे स्वास्थ्य वाला व्यक्ति हर काम लगन और मेहनत से कर सकता है। वह धूप, वर्षा, ठंड तथा विपरीत मौसम का मुकाबला कर सकता है। अच्छा

स्वास्थ्य काम के प्रति हमारे उत्साह को बढ़ाने में योगदान देता है। जहाँ उत्साह होता है वहाँ बाधाओं का सामना करने में आसानी होती है। इसलिए कहा गया है कि स्वास्थ्य ही धन है। स्वास्थ्य ठीक नहीं होने पर व्यक्ति हर समय अपनी चिंता में ही परेशान रहता है। वह अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाता। वह परावलंबी बन कर रह जाता है। उसके परिवार में सुख–शांति नहीं रहती है। जीवन के सुखों और भोगों से वह वंचित हो जाता है। अतः स्वास्थ्य रूपी धन की रक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए। इसके लिए स्वस्थ आदतों को अपनाना चाहिए तथा बुरी आदतों को छोड़ देना चाहिए। संतुलित भोजन, व्यायाम, मन की एकाग्रता तथा उचित आहार–व्यवहार पर ध्यान देकर हम लोग अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं।

प्रश्न–अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए –

1. दिल्ली की मेट्रो रेल
2. स्वच्छता
3. साँच बराबर तप नहीं
4. विज्ञान का महत्व
5. छात्रावास जीवन
6. मेरे प्रिय अध्यापक
7. विद्यालय में मेरा पहला दिन
8. मेरा प्रिय विषय
9. वर्षा ऋतु
10. जल–प्रदूषण
11. मेरा पालतू पशु
12. जनसंख्या वृद्धिःएक समस्या
13. प्रातःकाल की सैर
14. जीवन में खेलों का महत्व

अध्याय 29

संवाद लेखन

संवाद का शाब्दिक अर्थ है किसी से किया जाने वाला वार्तालाप या परस्पर बातचीत परन्तु आधुनिक परिवेश में हिंदी साहित्य में इसे एक विधा के रूप में मान्यता प्राप्त है। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि में पात्रों की आपसी बातचीत संवाद कही जाती है। अतः संवाद का इन विधाओं में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है । अतः विभिन्न विधाओं के लिए संवाद लिखते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए :

1. संवाद में एकरूपता बनी रहनी चाहिए ।
2. संवाद एक दूसरे से मेल खाने चाहिए ।
3. संवाद छोटे एवं रुचिकर होने चाहिए ।
4. संवाद संक्षिप्त, सरल एवं कृत्रिम नहीं होकर स्वाभाविक होने चाहिए ।
5. संवाद की भाषा सरल एवं भावानुकूल होनी चाहिए ।
6. व्यंग्य एवं मुहावरों का प्रयोग संवाद में स्वाभाविक रूप से होना चाहिए।
7. पात्रों के अनुकूल ही संवाद होने चाहिए ।
8. यह देश–काल, घटना और विषयानुकूल होना चाहिए।
9. पात्रों की प्रकृति, शिक्षा, संस्कृति, चरित्र आदि के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
10. संवाद ऐसा होना चाहिए जो कथावस्तु के विकास और पात्रों के चरित्र–चित्रण में सहायक हो ।

संवाद के उदाहरण

I. **शिक्षक और विद्यार्थी का संवाद**

शिक्षक – मोहन, क्या तुमने पाठ याद कर लिया?

विद्यार्थी – हाँ, सर ।

शिक्षक – क्या तुम बता सकते हो कि रावण को दशानन क्यों कहा जाता था?

विद्यार्थी – हाँ, सर, क्योंकि उसके दस सिर थे ।

शिक्षक – बिल्कुल ठीक । क्या तुम बता सकते हो कि रावण के भाई का नाम क्या था?

विद्यार्थी – विभीषण, सर ।

शिक्षक – बहुत अच्छा । मोहन, क्या तुम्हें रामायण की पूरी कहानी पता है?

विद्यार्थी – हाँ, सर, क्योंकि मेरी दादी मुझे यह कहानी सुनाती है और समझाती भी हैं।

शिक्षक – तुम तो बहुत अच्छे बच्चे हो । क्या कक्षा को तुम रामायण की कोई घटना सुना सकते हो?

विद्यार्थी – जी हाँ, सर । मुझे राम का वन में शबरी से मिलना और उसके जूठे बेर खाकर उसे प्रसन्न करने वाला प्रसंग बहुत अच्छा लगता है।

शिक्षक – तुम बहुत होशियार हो मोहन । तुम बैठ सकते हो ।

II. दो पड़ोसियों के बीच का संवाद

श्रीमती उमा शर्मा – रेणु जी, आप अपने बेटे को समझाइए ।

श्रीमती रेणु शर्मा – क्यों आखर क्या बात हुई?

श्रीमती उमा शर्मा – कल मेरे घर की पिछली खिड़की का शीशा तोड़ा था और आज सामने वाली खिड़की का ।

श्रीमती रेणु शर्मा – ओ हो ! उमा जी। आप भी कैसी बातें करती हैं? बच्चों के खेलने–कूदने के दिन हैं। इसमें नाराज होने की क्या बात है।

श्रीमती उमा शर्मा – आप भी कमाल की बातें कर रही हैं । मेरा तो यहाँ नुकसान हो गया है और आप कह रहीं है कि मैं नाराज क्यों हूँ ।

श्रीमती रेणु शर्मा – उमा जी बच्चे नहीं खेलेंगे तो क्या मैं और आप खेलेंगे? आपका जो भी नुकसानक हुआ वो मैं भरने को तैयार हूँ।

श्रीमती उमा शर्मा – कब तक आप नुकसान भरती रहेंगी। इससे अच्छा है बच्चे को कुछ सिखाइए ।

अभ्यास –

1. मेट्रो रेल में दो यात्रियों के मध्य संवाद लिखिए ।

2. फल वाले एवं ग्राहक के मध्य संवाद लिखिए ।

3. माँ और पुत्री के मध्य संवाद लिखिए ।

अध्याय 30

विज्ञापन–लेखन

विज्ञापन से आशय

'विज्ञापन' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका कोशीय अर्थ है– शिष्ट उक्ति या संवाद, प्रार्थना, अनुरोध। विज्ञापन शब्द 'वि' उपसर्गपूर्वक संस्कृत की 'ज्ञा' धातु से बना है। इनमें 'वि' का अर्थ है– विशेष तथा 'ज्ञा' का अर्थ है– सूचना, ज्ञान या जानकारी। इस प्रकार व्यावहारिक रूप में 'विज्ञापन' शब्द का अर्थ हुआ – 'किसी वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी या सूचना देना।' 'Advertising' अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'advertere' से हुई है, जिसका अर्थ होता है– 'to turn to' अर्थात् मोड़ना। व्यावसायिक जगत् में मोड़ने का अर्थ है– ग्राहकों का ध्यान अपनी वस्तुओं या सेवाओं की ओर आकर्षित करना। साधारण भाषा में विज्ञापन का आशय वस्तु या उत्पाद के संबंध में विशेष जानकारी प्रदान करने के ढंग से लगाया जाता है, लेकिन यह विचारधारा स्वयं में अपूर्ण है। वर्तमान में विज्ञापन का क्षेत्र काफी व्यापक होता जा रहा है। आजकल विज्ञापन में उन सभी क्रियाओं को शामिल किया जाता है, जिनके द्वारा ग्राहकों को वस्तुओं तथा सेवाओं से संबंधित जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें क्रय करने हेतु प्रेरित किया जाता है। अतः कहा जा सकता है–

विज्ञापन एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा ग्राहकों को वस्तुओं अथवा सेवाओं के संबंध में जानकारी दी जाती है और उन्हें क्रय करने के लिए प्रेरित एवं आकर्षित किया जाता है।

1. 'परी पेंसिल' पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

2. भोजन से पहले तथा शौच के बाद हाथ धोने की जागरूकता फैलाने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

3. पर्यावरण–विभाग की ओर से 'जल–संरक्षण' का आग्रह करते हुए विज्ञापन तैयार कीजिए।

4. विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु एक विज्ञापन लिखिए ।

अभ्यास

1. 'दीर्घ केश' नारियल तेल का विज्ञापन बनाइए ।

2. नौकरी करने वाले युवक–युवतियों के लिए 'नानी का भोजन' टिफिन सर्विस आरम्भ करने का विज्ञापन तैयार कीजिए ।

3. बच्चों की नई पत्रिका 'दादी माँ का चुनमुन'' के लिए विज्ञापन लिखिए ।

4. 'नृत्य संगीत आर्ट सेंटर' सरिता–विहार, नई दिल्ली में किशोर छात्रों की योग्यता के विकास के लिए कक्षाएँ प्रारम्भ की जा रही हैं। आकांक्षी छात्रों के लिए नामांकन का विज्ञापन लिखिए ।

अध्याय 31

निबंध लेखन

भ्रष्टाचार समस्या एवं समाधान

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है– " भ्रष्ट या बिगड़ा हुआ आचरण " अर्थात वह आचरण या कृत्य जो अनैतिक तथा अनुचित है। आज देश में भ्रष्टाचार की जड़ें अत्यधिक गहरी होती जा रही हैं। यदि समय रहते इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो यह समूचे तंत्र को अव्यवस्थित कर सकता है।

भ्रष्टाचार के कई कारण हें। सबसे प्रमुख कारण है मनुष्य में असंतोष की प्रवृत्ति। मानव अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं हो पाता है। वह हमेशा अधिक पाने की लालसा रखता है। बहुत कम लोग ही ऐसे हैं जो अपनी इच्छाओं और क्षमताओं में संतुलन रख पाते हैं। परंतु बहुत से लोग अपनी आकांक्षाओं और अपने वर्तमान में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं। उनकी लोलुपता इतनी तीव्र हो उठती है कि वे अनैतिकता के रास्ते पर चलकर भी इच्छा–पूर्ति में संकोच नहीं करते हैं। अंततः इससे भ्रष्टाचार उत्पन्न होता है। कुछ लोगों में सम्मान अथवा पद की आकाक्षा होती है तो कुछ में धन की लोलुपता। इस प्रकार असंतोष और लोलुपता के कारण ही वे न्याय–अन्याय में अंतर नहीं कर पाते हैं तथा भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख हो जाते हैं। भाषावाद, क्षेत्रीयता , सांप्रदायिकता , जातीयता आदि भी भ्रष्टाचार को प्रोत्साहित करते हैं।

भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं– चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, दलबदल, जोर–जबरदस्ती आदि भ्रष्टाचार के ही विभिन्न रूप हैं। भ्रष्टाचार वर्तमान में एक नासूर बनकर समाज को खोखला करता जा रहा है। धर्म का नाम लेकर लोग अधर्म को बढ़ावा दे रहे हैं। आज दोषी व अपराधी धन के प्रभाव में स्वच्छंद होकर घूम रहे हैं। धन–बल का प्रदर्शन, लूटपाट, तस्करी आदि आम बात हो गई है।

भ्रष्टाचार का हमारे समाज और राष्ट्र में व्यापक रूप से असर हो रहा है। संपूर्ण व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई। परिणामतरू समाज में भय, आक्रोश व चिंता का वातावरण बन रहा है। राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक व प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्र इसके

दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं। यह हमारी व्यवस्था में इस प्रकार समाहित हो चुका है कि आज इसे दूर करना प्रत्येक राष्ट्र के लिए लोहे के चने चबाने जैसा हो गया है।

भ्रष्टाचार किसी व्यक्ति विशेष या समाज की नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की समस्या है। इसका निदान केवल प्रशासनिक स्तर पर हो सके, ऐसा संभव नहीं है। इसका समूल विनाश सभी के सामूहिक प्रयास के द्वारा ही संभव है। इसके लिए केंद्रीय स्तर पर राजनीतिक इच्छा–शक्ति का प्रदर्शन भी नितांत आवश्यक है।

प्रशासनिक स्तर पर यह आवश्यक हे कि भ्रष्टाचार के आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई हो। इसके लिए आवश्यक है कि प्रशासन कठोर, चुस्त तथा निष्पक्ष हो। हमारी व्यवस्था इतनी सुदृढ़ हो कि अपराधियों को उनके किए की सजा मिल सके। सामाजिक स्तर पर यह आवश्यक है कि हम ऐसे तत्वों को बढ़ावा न दें जो भ्रष्टाचार को बढावा देते हैं या उसमें लिप्त हैं। व्यक्तिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का उत्तरदायित्व हम पर ही है। तब निस्संदेह हम भय रहित समाज की कल्पना कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार के पूर्णतया उन्मूलन से पूर्व हमें इस पर विचार करना होगा कि वे क्या कारण हैं जिसके कारण समाज के अनेक धनाढ्य एवं सुशिक्षित उच्च पदासीन व्यक्ति भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। एक प्रशासनिक अधिकारी को पर्याप्त वेतन एवं सुविधाएँ उपलब्ध हैं, फिर भी वे भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में औरों से कम नहीं हैं। जाहिर है, कहीं–न–कहीं हमारी शिक्षा–प्रणाली खामियों से परिपूर्ण है तथा सामाजिक नेतिकता का दिनोंदिन हास हो रहा है।

प्रदूषण

प्रदूषण के चलते आज लोगों का जीवन पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। शहरों तथा महानगरों में यातायात के साधनों में निरंतर वृद्धि हो रही है। मानव एक ओर जहाँ सफलता के नए–नए आयाम विकसित कर रहा है, वहीं दूसरी ओर उसकी यह सफलता उसके लिए नई–नई मुसीबतें भी खड़ी कर रही है। हरित क्रांति, औद्योगिक विकास, यातायात के संसाधनों का विकास तथा शहरों की बढ़ती हुई जनसंख्या सभी मिलकर वातावरण को हर पल प्रदूषित कर रहे हैं। धरती का प्रत्येक कोना इस प्रदूषण से प्रभावित हो रहा है। बड़ी–बड़ी मिलों व

कारखानों से निकले दूषित पदार्थ जल के साथ मिलकर नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं। ये पीने के पानी को प्रदूषित करते हैं। कहीं–कहीं पर यह प्रदूषण इतना अधिक हो गया है कि वहाँ का जनजीवन ही खतरे में पड़ चुका है। इन कारखानों से निकलने वाला धुआँ अनेक जहरीली गैसों व पदार्थों से युक्त होता है जिससे वायुमंडल की वायु निरंतर प्रदूषित हो रही है।

शहरों तथा महानगरों में यातायात के साधनों में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। इससे निकलने वाला धुआँ वायुमंडल की वायु से मिलकर प्रदूषण फैलाता है जिससे साँस लेना मुश्किल होता जा रहा है। तनाव, बेचौनी , हृदय तथा फेफड़ों की बढ़ती हुई बीमारियाँ इसी बढ़ते हुए प्रदूषण के परिणाम हैं। महानगरों तथा शहरों में प्रदूषण का एक अन्य रूप ध्वनि प्रदूषण भी तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह प्रदूषण भी हमारे लिए अत्यंत खतरनाक है।

महानगरों व अन्य शहरों का निरंतर विस्तार व बढ़ती जनसंख्या के चलते बड़ी तेजी से वृक्षों का कटाव होता जा रहा है जिससे वातावरण का संतुलन खतरे में पड़ गया है। ऋतुचक्र निरंतर प्रभावित हो रहा है। बाढ़ और सूखे की स्थिति भी वृक्षों के कटाव से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। पेड कटने के कारण वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा लगातार कम हो रही है। इसके अतिरिक्त ज्यादा–से–ज्यादा अन्न उत्पादन हेतु रासायनिक खादों का बढ़ता प्रयोग मिट्टी की उर्वरा शक्ति को प्रभावित कर रहा है। रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाओं के अत्यधिक प्रयोग के कारण मिट्टी दूषित होती जा रही है।

अतः तेजी से फैलती प्रदूषण की प्रक्रिया को रोकने के लिए उचित उपाय करना अति आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब हमें साँस लेने के लिए भी सोचना पड़ेगा। प्रदूषण को रोकने के लिए कई उपाय करने होंगे। हरे पेड़ों को नष्ट न किया जाए तथा अधिक–से–अधिक वृक्षारोपण किया जाए जिससे कि आने वाली पीढ़ी को साँस लेने के लिए शुद्ध वायु मिल सके तथा हमारा जीवन भी भली–भाँति व्यतीत हो जाए। इसके अतिरिक्त जल और ध्वनि प्रदूषण से निबटने के लिए तुरंत सार्थक प्रयास करने होंगे।

बाल श्रमिक : एक जटिल समस्या...

हमारा देश एक विशाल देश है। देश ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सफलता के नए–नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विकास की आधुनिक दौड़ में हम अन्य देशों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर चल रहे हैं। परंतु इतनी सफलता के बाद भी जनसंख्या वृद्धि, जातिवाद, भाषावाद, बेरोजगारी, महँगाई आदि अनेक समसस्याएँ हैं जिनका निदान नहीं हो सका है अपितु उनकी जडें और भी गहरी होती चली जा रही हैं। बाल–श्रम भी ऐसी ही एक समस्या है जो धीरे–धीरे अपना विस्तार ले रही है।

इस समस्या का जन्म प्रायरू पारिवारिक निर्धनता से होता है। हमारे देश में आज करोड़ों की संख्या में ऐसे लोग है जो गरीबी की रेखा के नीचे रहकर अपना जीवन–यापन कर रहे हैं। ऐसे लोगों को भरपेट रोटी भी बड़ी कठिनाई और कठिन परिश्रम के बाद प्राप्त होती है। उनका जीवन अभावों से ग्रस्त रहता है। इन परिस्थितियों में उन्हें अपने बच्चों के भरण–पोषण में अत्यंत कठिनाई उठानी पड़ती है। जब परिस्थितियाँ अत्यधिक प्रतिकूल हो जाती हैं तो उन्हें विवश होकर अपने बच्चों को काम–धंधे अर्थात किसी रोजगार में लगाना पड़ता है। इस प्रकार ये बच्चे असमय ही एक श्रमिक जीवन बिताने लगते हैं जिससे इनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। निम्नलिखित पंक्तियों से बाल श्रमिकों की समस्या को झलक मिलती हे।

"अभी तो तेरे पंख उगे थे, अभी तो तुझको उड़ना था।

जिन हाथों में कलम शोभती , उनमें कुदाल क्यों पकड़ना था !

मूक बधिर पूरा समाज है , उसे तो चुप ही रहना था।

देश में लगभग 6 करोड से भी अधिक बाल श्रमिक हैं, जिनमें लगभग 2 करोड़ से भी अधिक लड़्कियाँ हैं। देश में श्रमिक के रूप में काम कर रहे 5 वर्ष से 2 वर्ष तक के बालक बाल श्रमिक श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। ये बाल श्रमिक देश के सभी भागों में छिटपुट रूप से विद्यमान हैं। देश के कुछ राज्योंय जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, झारखंड , छत्तीसगढ़ आदि में इन श्रमिकों की संख्या अधिक है। देश में बढ़ती हुई बाल–श्रमिकों की संख्या देश के लिए चिंता का एक मुख्य विषय बनी हुई है। यदि समय रहते इसको नियंत्रण में नहीं लाया गया तो इसके परिणाम घातक हो सकते हैं। हमारी सरकार ने बाल–श्रम को अपराध घोषित कर दिया है परंतु समस्या की जड़ तक पहुँचे बिना इसको

समाप्त नहीं किया जा सकता है। अतरू यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम हम इसके मूल कारणों को समझें व फिर उन्हें दूर करने का प्रयास करें। बाल–श्रम की समस्या का मूल कारण है निर्धनता और अशिक्षा। जब तक देश में भुखमरी रहेगी तथा देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित नहीं होताय तब तक यह समस्या बनी रहेगी। देश में बाल श्रमिक की समस्या के समाधान के लिए प्रशासनिक , सामाजिक तथा व्यक्तिगत सभी स्तरों पर प्रयास आवश्यक है। यह आवश्यक है कि देश में कुछ विशिष्ट योजनाएँ बनाई जाएँ तथा उन्हें कार्यान्वित किया जाए जिससे लोग आर्थिक रूप से मजबूत हो सकें और लोगों को बच्चों को श्रम की ओर विवश न करना पड़े। प्रशासनिक स्तर पर सख्त–से–सख्त निर्देशों की आवश्यकता है जिससे बाल–श्रम को रोका जा सके। व्यक्तिगत स्तर पर बाल श्रमिक की समस्या का निदान हमारा नैतिक दायित्व है। इसके प्रति हमें जागरूक होना चाहिए तथा इसके विरोध में सदैव आगे रहना चाहिए।

हमें विश्वास है कि हमारे प्रयास सार्थक होंगे और बाल श्रमिक की समस्या का उन्मूलन हो सकेगा। राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार की व्यवस्था जन्म लेगी जिससे किसी बालक को अपना बचपन नहीं खोना पड़ेगा। सभी बच्चे वास्तविक रूप में बढ़ सकेंगे तथा अच्छी शिक्षा ग्रहण कर देश को गौरवान्वित करेंगे। कानून को और सख्त बनाने की आवश्यकता है ताकि कोई भी व्यक्ति इस कुप्रथा को और बढ़ावा न दे सके। बाल श्रमिक की समस्या के निदान के लिए सामाजिक क्रांति आवश्यक है ताकि लोग अपने निहित स्वार्थों के लिए देश के इन भावी निर्माताओं के भविष्य पर प्रश्न–चिन्ह न लगा सकें।

महँगाई

पहले भी जब वस्तुओं के दाम बढ़ते थे तो लोगों को इसका भार उठाना पड़ता ही था। कई दशकों से महँगाई की मार झेलने पर उपभोक्ता असंतुष्ट होकर अपना रोष प्रकट करता ही था, मगर इन दिनों महँगाई हर माह या हर सप्ताह बढ़ रही है और महँगाई के चलते आदमी को अपने घर का खर्च चलाना मुश्किल हो गया है। लोगों का जीवन सहज नहीं रह गया है। सर्वसाधारण को अपनी प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी घोर संघर्ष करना पड़ रहा है। वस्तुओं , खाद्य सामग्रियों आदि की कीमतों में निरंतर वृद्धि एक भयावह मोड़ पर आ गई है। उसे यदि समय रहते नियंत्रित नहीं किया गया तो देश में संतुलन बनाए. रखना अत्यंत कठिन हो जाएगा। अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसे क्या कारण हैं जिनसे वस्तुओं की कीमतों

में निरंतर वृद्धि हो रही है ? क्या कारण है कि मूल्य नियंत्रण की दिशा में उठाए गए हमारे कदम असरदार नहीं हो पा रहे हैं ? इसके अतिरिक्त हमें यह जानना भी आवश्यक हो जाता है कि मूल्य वृद्धि के नियंत्रण की दिशा में और भी कौन से जरूरी कदम हो सकते हैं।

देश में बढ़ती महँगाई के कारणों का यदि अवलोकन करें तो हम पाएँगे कि इसका सबसे प्रमुख तीव्र गति से बढ़ती हमारी जनसंख्या है। देश में उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की दर कहीं अधिक है जिसके फलस्वरूप महँगाई का बढ़ना स्वाभाविक हो जाता है। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियों ने मनुष्य की आकाक्षाओं की उड़ान को और भी अधिक तीब्र कर दिया है। फलतः वस्तुओं की माँग में तीव्रता आई है जो उत्पादन की तुलना में कहीं अधिक है। इसके अतिरिक्त शहरीकरण, धन व संसाधनों का दुरुपयोग, कालाधन, भ्रष्ट व्यवसायी तथा हमारी दोषपूर्ण वितरण व्यवस्था भी मूल्य–वृद्धि के लिए उत्तरदायी हैं। देश के सभी कोनों में महँगाई की चर्चा है। सभी बढ़ती महँगाई से त्रस्त हैं। हमारी सरकार भी इस समस्या से भली–भाँति परिचित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न सरकारों ने मूल्य–वृद्धि को रोकने के लिए अनेक कारगर उपाय किए हैं। जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए ”परिवार नियोजनश के उपायों पर विशेष बल दिया जा रहा है।

अनेक वस्तुओं में उत्पादन के एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया है। बाजार को पूरी तरह खुला किया जा रहा है जिससे प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम संसाधनों के दुरुपयोग को रोकें। उचित भंडारण के अभाव में हर वर्ष हजारों टन है अनाज बेकार हो जाता है। दूसरी ओर हमारे संसाधनों की वितरण प्रणाली में भी सुधार लाना पड़ेगा। यह व्यवस्था तभी सही हो सकती है जब भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया जा सके। – इसके अतिरिक्त काला धन रोकना भी अत्यंत आवश्यक है। हमारी वर्तमान सरकार ने इस छुपे हुए धन को बाहर लाने के लिए कुछ कारगर घोषणाएँ अवश्य की थीं, परंतु ये पूरी तरह प्रभावी नहीं हो पा रही हैं।

अतः आजकल खुली अर्थव्यवस्था एवं निरंतर आर्थिक सुधारों की वकालत की जा रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि देश में मूल्यवृद्धि हमारी एक महत्त्वपूर्ण समस्या है जिसका हल ढूँढ़ना आवश्यक है।

इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदम सराहनीय है। परंतु इन उपयोग को तभी सार्थक रूप दिया जा सकता है जब हम का अथवा नीतियों का दृढ़ता से पालन करें। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक विस्तृत एवं सुदृढ़ रूप दे सकें।

अभ्यास –

निम्नलिखित विषयों पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखो –

1. एक पिकनिक
2. जल ही जीवन है
4. समाचार पत्र
5. मेरा प्रिय त्यौहार

अध्याय 32

अपठित बोध काव्यांश एवं गद्यांश

काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. प्रभु तुम करुणा के सागर हो,
हम पर इतनी करुणा कर दो
तजें स्वार्थ, उपकार करें हम
सबको मन में प्यार करें हम,
दुख अपनाकर सुख देने का,
जीवन भर व्यापार करें हम,
सब में रूप तुम्हारा देखें,
हे प्रभु हमको ऐसा वर दो,
हम पर इतनी करुणा कर दो।

प्र.1 काव्यांश में प्रभु को क्या कहा गया है ?
उ. काव्यांश में प्रभु को करूणा का सागर कहा गया है।
प्र.2 कवि किसे त्यागने और क्या करने की बात कर रहा है ?
उ. कवि स्वार्थ को त्याग कर सभी पर उपकार करने की बात की है ।
प्र.3 कवि जीवन भर कैसा व्यापार करने की इच्छा व्यक्त कर रहा है ?
उ. कवि ने दूसरो को दुखो को सुख देने का व्यापार करने करने की इच्छा व्यक्त की है।
प्र.4 कविता में प्रभु से कौन–सा वर माँगा गया है ?
उ. कविता में प्रभु का दर्शन सर्वत्र हो, ऐसा वर माँगा गया है।
प्र.5 निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए– (व्यापार, सागर)
उ. व्यवसाय, समुद्र

2. मुझे जानते हो बच्चो,
बलखाती, इठलाती चलती।
पर्वत से लहराती आती,
कल–कल करती और उछलती ।।
उछलूँ, कूदूँ शोर मचाऊँ
सोए पाषाणों में मचलूँ।
कंकड़–पत्थर साथ बहाऊँ

उनको अपने संग ले चलूँ ।।
घने जंगलों में से अपनी
राह बनाती आती हूँ मैं।।
निर्भयता से बढ़ने का,
संदेश सुनाती आती हूँ मैं।।

प्र.1 कविता में किसका वर्णन है?
उ. कविता नदी का वर्णन है।
प्र.2 नदी कहाँ से और किस प्रकार आती है?
उ. नदी पर्वतों से लहराती, कलकल करती आती है ।
प्र.3. नदी कहाँ से होकर गुजरती है?
उ. नदी पत्थरों और घने जंगलों से अपनी राह बनाते हुए गुजरती है।
प्र.4. नदी कौन–सा संदेश सुनाती है?
उ. नदी निर्भय रहने और आगे बढ़ने का संदेश सुनाती है।
प्र.5. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।
उ. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक ''नदी की यात्रा'' ।

अभ्यास

1. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ।।

प्र.1. क्या पढ़ने पर भी संसार के लोग पंडित न बन सके?
प्र.2. दोहे में ढाई अक्षर का शब्द किसे कहा गया है?
प्र.3. कवि के अनुसार व्यक्ति पंडित कैसे बन सकता है?
प्र.4. दोहे में से वह शब्द चुनिए जिसका अर्थ 'कोई' है ।
प्र.5. 'जग' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

2. रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार ।
यमुना तट पर अंग्रेजों ने, फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र, सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

प्र.1. रानी कितनी दूरी तय करके कालपी पहुँची?

प्र.2. यमुना तट पर अंग्रेजों को किसने पराजित किया?

प्र.3. विजयी रानी ने किस पर अधिकार प्राप्त किया?

प्र.4. अंग्रेजों के मित्र का क्या नाम था?

प्र.5. काव्यांश में मर्दानी किसे कहा गया है?

अपठित बोध (गद्यांश)

अपठित गद्यांश से अभिप्राय एक ऐसे गद्यांश से है जिसे विद्यार्थी ने अपने निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत नहीं पढ़ा हो। अपठित गद्यांश एक ऐसी विधा है जिससे विद्यार्थियों में समझने की क्षमता के साथ–साथ भाषा की संरचना, व्याकरण पद्धति और शिल्प ज्ञान के अतिरिक्त शब्दकोष में वृद्धि होती है। अपठित गद्यायचे की क्षमता के नाका उत्तर देते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:

(i) दिए गए अपठित अवतरण को एकाग्रचित होकर तीन–चार बार पढ़ना चाहिए जिससे उसमें निहित भाव समझ में आए।

(ii) अवतरण के मूल उद्देश्य को समझना चाहिए।

(iii) प्रश्नों के उत्तर को प्रस्तुत सामग्री तक ही सीमित रखना चाहिए।

(iv) यदि शीर्षक पूछा गया हो तब शीर्षक संक्षिप्त, सटीक और आकर्षक होना चाहिए। सामान्यतः गद्यांश का केंद्रीय भाव ही शीर्षक होता है।

अभ्यासार्थ अपठित गद्यांश के उदाहरण

1

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उन पर आधारित प्रश्नों का उत्तर दें।

विश्व का वर्तमान उन्नत रूप मानव–श्रम की ही कहानी कह रहा है। गगनचुंबी अट्टालिकाएँ, लंबी–चौड़ी सड़कें, बड़े–बड़े विशाल नगर, आकाश में उड़ते वायुयान तथा मानव–जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में योगदान करने वाले ज्ञान–विज्ञान के अनंत रूप– ये सभी मनुष्य के श्रम का जयघोष करते हैं। स्पष्ट है कि मनुष्य और उसका शरीर विधाता की अनुपम रचना है जो निश्चय ही महान उद्देश्यों की संपूर्ति के लिए दिया गया है। इस दुर्लभ तन को यदि हम आलस्य, प्रमाद अथवा घटिया कामों में गँवा देते हैं तो उस विधाता के प्रति अन्याय करते हैं।

प्रश्नः (क) वर्तमान विश्व का उन्नत रूप किसका परिणाम है?

(ख) मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में किसका योगदान है?

(ग) मनुष्य श्रम का जयघोष कौन करता है?

(घ) ''मनुष्य और उसका शरीर विधाता की अनुपम रचना है'' वाक्य का सरल रूप में परिवर्तित रूप निम्न में कौन है?

(ङ) उपरोक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

2

हमारे देश में एक ऐसा भी युग था जब नैतिक और आध्यात्मिक विकास ही जीवन का वास्तविक लक्ष्य माना जाता था। अहिंसा की भावना सर्वोपरि थी। आज पूरा जीवन–दर्शन ही बदल गया है। सर्वत्र पैसे की हाय–हाय तथा धन का उपार्जन ही मुख्य ध्येय हो गया है, भले ही धन–उपार्जन के तरीके गलत क्यों न हों? इन सबका असर मनुष्य के प्रतिदिन के जीवन पर पड़ रहा है। समाज का वातावरण दूषित हो गया है– बाह्य वातावरण तो दूषित है हीय आज सब जानते हैं कि पर्यावरण की समस्याएँ कितनी चिंतनीय हो उठी हैं। इन सबके कारण मानसिक और शारीरिक तनाव–खिंचाव और व्याधियाँ पैदा हो रही हैं।

प्रश्नः (क) वर्तमान जीवन के विपरीत हमारे देश में किस प्रकार का युग था?

(ख) हमारे जीवन और जीवन–दर्शन में क्या बदलाव आया है?

(ग) बाह्य और आंतरिक कारणों का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) 'सर्वोपरि' का संधिविच्छेद क्या है?

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा।

3

भारत माता को हम नमन करते हैं । उत्तर में हिमालय इसका प्रहरी है । दक्षिण में हिंद महासागर उसके चरण पखारता है । पश्चिम में कच्छ की खाड़ी और पूरब में बांग्लादेश है । गंगा–यमुना, नर्मदा–ताप्ती, कृष्णा, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र आदि नदियाँ भारत के मैदानी क्षेत्रों की शोभा बढ़ाती है । खेतों में लहराती फसलें और बागों में पके फलों की बहार इनकी देन है। वनों में जंड़ी–बूटी और खानों में खनिज भी भारत माता का उपहार है । प्रत्येक धर्म का व्यक्ति भारत माँ का सूपत है । सबकी प्रिय है भारत माता।

(क) गद्यांश में वर्णित प्रसिद्ध नदियाँ निम्न में से कौन–सी हैं?

(i)	गंगा	(ii)	जमुना
(iii)	कृष्णा	(iv)	उपर्युक्त सभी

(ख) फसलें और पके फल किसकी देन है?

(i)	नदियों की	(ii)	पहाड़ों की
(iii)	लोगों की	(iv)	उपर्युक्त किसी की नहीं

(ग) भारत माता का उपहार किसे कहा गया है?

(i)	वनों में जड़ी–बूटी	(ii)	खानों में खनिज
(iii)	उपर्युक्त दोनों	(iv)	उपर्युक्त किसी को नहीं

(घ) भारत माता के सपूत किसे कहा गया है?

(i)	हिन्दू धर्म को	(ii)	इस्लाम धर्म के लोगों को
(iii)	सिक्ख धर्म के लोगों को	(iv)	सभी धर्मों के लोगों को

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(i)	भारत माता	(ii)	भारत माँ
(ii)	जगतजननी भारत माँ	(iv)	सबकी प्रिय भारत माता

4

हिंदी हमारी मातृभाषा है। व्यक्ति की शक्ति उसकी मातृभाषा होती है। मातृभाषा के माध्यम से हम उत्तम शिक्षा ग्रहण करते हैं। हिंदी की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करती है। ऐसा अन्य भाषा–भाषियों के संपर्क में आने से होता है। यह हिंदी की शक्ति है, कमजोरी नहीं है। हिंदी भाषा का प्रयोग भारत के हर नगर में बाजार–भाषा के रूप में होता है। हिंदी चित्रपट संगीत ने भी हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया है। अपनी मातृभाषा को संपन्न बनाने में दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनी संस्कृति में उतारना चाहिए। ऐसा न हो कि अप्रचलित शब्दों से हिंदी भाषा का रूप विकृत हो जाए।

प्रश्नः (क) हमारी मातृभाषा क्या है?

(ख) व्यक्ति की शक्ति क्या होती है?

(ग) हिंदी की उल्लेखनीय विशेषता क्या है?

(घ) हिंदी भाषा किस प्रकार विकृत हो सकती है?

(ङ) गद्यांश के लिए निम्नलिखित में से सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक चुनिए।

5

बालकों का सर्वांगीण विकास शिक्षा से होता है। कक्षा के कमरों में छात्र–छात्राओं को कई विषयों की शिक्षा दी जाती है। इन विषयों के ज्ञान और अनुप्रयोग से उनका मानसिक विकास होता है। शारीरिक विकास के लिए खेलने–कूदने की व्यवस्था की जाती है। व्यायाम के अभ्यास कराए जाते हैं। खेल–कूद से बालक–बालिकाओं का केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बनता, बल्कि उनमें आपसी सहयोग, साहस और नियम पालन के अच्छे गुण आते हैं। कुछ अभिभावकों का यह सोचना कि खेल–कूद कर बच्चे समय नष्ट करते हैं, गलत है।

(क) बालकों का सर्वांगीण विकास कैसे होता है?

(ख) शिक्षा में मानसिक विकास के लिए क्या किया जाता है?

(ग) शारीरिक विकास के लिए क्या जरूरी है?

(घ) अभिभावकों की कौन–सी सोच गलत है?

(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?